RNI No :- DELHIN/2023/86499 **DCP Licensing Number:** F.2 (P-2) Press/2023



प्रसादं तनुते महयं चन्द्रघण्टेति विश्रुता॥

🛮 🕄 जागो फाउंडेशन द्वारा निशुल्क सैनिटरी नैपकिन का वितरण

🖊 🔓 वन अर्थ वन हेल्थ

👭 किट बिश्वबिद्यालय के एक और छात्र की संदिग्ध मौत

क्या यह लापरवाही है या घोटाला ? : जनता का पैसा यूँ ही बहाया जाएगा या कोई जवाबदेही भी होगी?



प्रो . आरके जैन "अरिजीत" बड़वानी (मप्र)

क मशीन, जिसे आप और हम 22,000 रुपये में खरीद सकते हैं, उसके लिए सरकार ने हर महीने 1,844 रुपये किराया चुकाया—वो भी लगातार पाँच साल तक ! अब हिसाब लगाइए: 2,100 मशीनों के लिए चार साल कुल कीमत थी बस 4.5 करोड़ रुपये। यह कोई फिल्मी स्क्रिप्ट या मजाक नहीं है, बल्कि दिल्ली सरकार के खाद्य एवं आपूर्ति विभाग का असली कारनामा है। एक ऐसा फैसला, जिसने जनता के खून-पसीने की कमाई को पानी की तरह बहा दिया और पूछने वाला कोई नहीं कि आखिर यह हुआ कैसे ? यह कहानी सिर्फ मशीनों की नहीं, बल्कि उस सिस्टम की है, जो हमारे टैक्स के पैसे को लुटाने में माहिर हो चुका है।

बात शुरू होती है फरवरी 2021 से, जब दिल्ली सरकार ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली में सुधार का ढोल पीटते हुए एक बड़ा कदम उठाया। उसने भारत इलेक्टॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) से 2,100 इलेक्ट्रॉनिक पॉइंट ऑफ सेल (ईपीओएस) मशीनें किराए पर लेने का फैसला किया। हर मशीन का किराया तय हुआ 1,844 रुपये प्रति माह, और यह सौदा पाँच साल के लिए पक्का कर लिया गया। चार साल गुजर चुके हैं, और अब तक सरकार ने इन मशीनों के लिए 18

चौंकाने वाली बात यह है कि इतना पैसा खर्च करने के बाद भी ये मशीनें सरकार की नहीं हैं—ये आज भी बीईएल की संपत्ति हैं। अब सोचिए, अगर ये मशीनें खरीदी गई होतीं, तो 4.62 करोड़ रुपये में मामला खत्म हो जाता। लेकिन नहीं, सरकार ने किराए का रास्ता चुना और जनता का पैसा हवा में

अब हिसाब को और करीब से देखें । चार साल में 18 करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं, और अगर पाँच साल का अनुबंध पूरा हुआ, तो यह रकम 23.25 करोड़ रुपये तक पहुँच जाएगी। यानी, एक मशीन की कीमत से पाँच गुना ज्यादा सिर्फ उसके किराए में दे दिया जाएगा। अगर सरकार ने थोड़ा दिमाग लगाया होता, तो 4.5 करोड़ में ये मशीनें उसकी अपनी हो सकती थीं। रखरखाव का खर्च जोड़ लें, तब भी यह किराए की राशि से आधे से कम पड़ता। मान लीजिए, हर मशीन पर सालाना 5,000 रुपये रखरखाव में लगते—पाँच साल में 25,000 रुपये प्रति मशीन, यानी कुल 5.25 करोड़। फिर भी,

खरीद और रखरखाव मिलाकर 10 करोड़ से कम में काम हो जाता। लेकिन यहाँ तो 23 करोड़ रुपये बहाने का प्लान बना लिया गया । यह क्या है— लापरवाही, नासमझी, या कुछ और?

यह सिर्फ दिल्ली की कहानी नहीं है। देश के कोने-कोने में ऐसे फैसले लिए जाते हैं, जहाँ सरकारी खजाना खाली करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाती। कभी सड़क बनाने के नाम पर घोटाला, कभी स्कूलों के लिए फर्नीचर खरीद में हेराफेरी, तो कभी अस्पतालों के उपकरणों के नाम पर लूट। हर बार निशाना वही होता है — जनता का पैसा। दिल्ली का यह ईपीओएस मशीन मामला तो बस एक झलक है उस सिस्टम की. जो पारदर्शिता और जवाबदेही से कोसों दर है। 18 करोड़ रुपये कोई छोटी रकम नहीं—इससे कितने बच्चों को स्कूल मिल सकता था, कितने मरीजों को बेड, या कितने गरीबों को राशन? लेकिन यहाँ तो सब कुछ एक बेतुके अनुबंध में बहा दिया गया।

इस लूट को रोकने का रास्ता क्या है? सबसे पहले तो हर सरकारी खर्च की नकेल कसने के

अनुबंध हो, उसकी हर डिटेल की जाँच हो, ताकि जनता का पैसा यूँ न लुटे। दूसरी बात, पारदर्शिता को मजबूरी बनाना होगा। हर सौदे की जानकारी— कितना पैसा, किसे दिया, क्यों दिया—यह सब जनता के सामने होना चाहिए। जब लोग जानेंगे कि उनका टैक्स कहाँ जा रहा है, तो सरकार खुद-ब-खुद जवाबदेह बनेगी। तीसरा, ऐसे फैसलों के पीछे बैठे अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराना होगा। अगर कोई गलत नीति बनाता है, जिससे जनता का नुकसान हो, तो उसे सजा मिले—वरना यह सिलसिला कभी नहीं रुकेगा। सबसे बड़ी ताकत है जनता की जागरूकता। जब तक हम सवाल नहीं पूछेंगे, तब तक यह लूट चलती रहेगी।सोशल मीडिया पर आवाज उठाइए, आरटीआई दाखिल कीजिए, अपने हक के लिए लड़िए। क्योंकि अगर हम चुप रहे, तो यह खेल कभी नहीं थमेगा।

यह मशीनों का मसला कोई साधारण घोटाला नहीं, बल्कि एक ऐसा थप्पड़ है जो सरकारी तंत्र की नींद उड़ा दे—एक चीखती चेतावनी जो हर खोट

जवाबदेही का ढोंग, और जनता के लिए बेशर्म बेपरवाही—यह सब इस एक फैसले में ठसाठस भरा है। सोचिए तो, 18 करोड़ रुपये—यह कोई चिल्लर नहीं ! इससे गाँवों में बिजली की लकीरें दौड़ सकती थीं, अंधेरे घरों में उजाला खिल सकता था: शहरों में सुखे नलों से साफ पानी की बौछार फुट सकती थी, प्यासी आँखों को राहत मिल सकती थी। लेकिन हकीकत क्या बनी ? यह पैसा एक ऐसे सौदे के भँवर में डूब गया, जो लूट का पर्याय बन गया—न जनता को कुछ हासिल हुआ, न सिस्टम में कोई सुधार आया, बस हवा में उड़ते वादों का ढेर लगा। अब वक्त है कि हम सब खडे हों और गरजें—बस, अब और नहीं। यह पैसा हमारा खून-पसीना है, हर उस शख्स की मेहनत है जो टैक्स के बोझ तले दबता है—इसे यूँ डाकुओं की तरह लुटने देना अब गुनाह है। सवाल खड़े करो, जवाब निचोड़ो, और बदलाव की आग सुलगाओ। क्योंकि अगर हम अभी न जागे, तो यह लूट का नंगा

दिल्ली एनसीआर में भारी और मध्यम मालवाहक वाहनों के लिए नो एंट्री का ऐलान



ट्रैफिक पुलिस ने रविवार को छोड़कर बाकी छह दिनों के लिए सुबह 7 बजे से 10 :30 बजे तक और शाम 5 बजे से रात 10 बजे तक भारी और मध्यम मालवाहक वाहनों के लिए नो एंट्री का ऐलान किया है। यह प्रतिबंध दिल्ली-मथुरा रोड झाड़सेंतली ट्रांसपोर्ट नगर से बदरपुर बॉर्डर तक ट्रांसपोर्ट नगर से सेक्टर–58 सेक्टर-24-25 और अन्य आंतरिक मार्गों पर लागु रहेगा।

फरीदाबाद।यातायात पुलिस ने रविवार को छोडकर शेष छह दिन भारी व मध्यम मालवाहक वाहनों के लिए नो एंट्री रखने का निर्णय लिया है। सुबह सात बजे से सुबह साढ़े दस बजे तक तथा शाम पांच बजे से रात दस बजे तक सार्वजनिक मार्गों पर प्रवेश व पार्किंग प्रतिबंधित रहेगी।

इन रूटों पर प्रतिबंध

यह प्रतिबंध दिल्ली-मथुरा रोड के दोनों ओर तथा झाड़सेंतली ट्रांसपोर्ट नगर से बदरपुर बॉर्डर तक हाईवे की साइड लेन पर, टांसपोर्ट नगर से सेक्टर-58, सेक्टर-24-25 व अन्य आंतरिक मार्गों पर, दिल्ली-मंबई एक्सप्रेस-वे के लिंक रोड पर, कुंडली-

गाजियाबाद-पलवल एक्सप्रेस-वे से बल्लभगढ की ओर आते-जाते समय चंदावली व मच्छगर के मुख्य मार्ग पर, सोहना पाली, धौज होते हुए फरीदाबाद आने वाले मार्ग पर, फरीदाबाद-गुरुग्राम रोड पर लागू रहेगा।

डीसीपी जसलीन कौर ने बताया कि यह आदेश आपातकालीन वाहनों जैसे पुलिस वाहन, फायर ब्रिगेड वाहन, एंबुलेंस, सेना व अर्धसैनिक बलों से संबंधित वाहनों पर लागू नहीं होगा। किसी अन्य आवश्यक आपूर्ति से संबंधित वाहन छूट पाने के लिए नियमानुसार आवेदन कर सकते हैं।

उल्लेखनीय है कि राजधानी दिल्ली की सड़कों पर रात के समय भारी ट्रक और कमर्शियल वाहन मौत बनकर दौड़ते हैं। यातायात नियमों की अनदेखी करने वाले इन चालकों की चपेट में आकर अक्सर लोग हादसों का शिकार हो जाते हैं। इस साल जनवरी और फरवरी में इन भारी वाहनों से 122 सडक हादसे हो चके हैं।

ओवरलोड वाहनों पर प्रतिबंध

इन भारी वाहनों पर कडा रुख अपनाते हए दिल्ली टैफिक पलिस राजधानी की सड़कों पर प्रवेश निषेध प्रतिबंधों को और

कड़ा कर रही है और अब ऐसे ओवरलोड वाहनों को सड़कों पर नहीं चलने दिया जाएगा। इन वाहनों में भारी परिवहन और माल वाहन, टेंपो, क्रेन, ट्रैक्टर और डिलीवरी वैन भी शामिल हैं, जिनमें से करीब 48 फीसदी परिवहन और माल वाहन हैं।

आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2021 से 2024 तक मालवाहक वाहनों और अन्य वाणिज्यिक वाहनों से जुड़ी दुर्घटनाओं में 14 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 2023 में इन वाहनों से जुड़ी ऐसी दुर्घटनाओं की संख्या कम से कम 267 थी, जो 2024 में बढ़कर 294 हो गई। इससे पहले, 2021 में यह कम से कम 240 और 2022 में कम से कम 258 थी।

2023में 292 और 2024में 317

इन भारी वाहनों के कारण 2023 में 292 और 2024 में 317 मौतें हुई हैं। वाणिज्यिक वाहनों पर अंकुश लगाने में एक बड़ी चनौती कानून प्रवर्तन है। मौजूदा नो-एंट्री नियमों के बावजूद, कई ट्रक अवैध रूप से प्रतिबंधित क्षेत्रों में प्रवेश करते हैं।2024 में नो-एंट्री उल्लंघन के लिए 93,684 चालान जारी किए गए. जबकि एक साल पहले 66,459 चालान जारी किए गए थे।

महंगा हुआ सफर: नेशनल हाइवे अथारिटी ऑफ इंडिया की ओर से देश के सभी टोल टैक्स पर दरों को बढ़ाया



महंगा हुआ सफर

MATIONAL HIGHWAYS AUTHORITY OF INDIA



भारत में सड़कों की स्थिति लगातार बेहतर हो रही है और इनके रखरखाव के लिए टोल टैक स लिया जाता है। अब अपनी कार से एक शहर से दूसरे शहर जाना महंगा हो गया है। नेशनल हाइवे अथारिटी ऑफ इंडिया (NHAI) की ओर से टोल टैक्स की दरों में कितनी बढ़ोतरी की है। बढ़ी हुई दरों को कब से लागू किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली।भारत में पिछले कुछ सालों में सड़कों की स्थिति में काफी ज्यादा सुधार हुआ है। इस दौरान देश को कई नए एक्सप्रेस वे और नेशनल हाइवे मिले हैं। जिनकी स्थिति बेहतर रखने के लिए इन पर टोल लगाया जाता है। इस टोल को वसलने का काम एनएचएआई की ओर से किया जाता है। अप्रैल 2025 के शुरू होते ही ऐसे हाइवे और एक्सप्रेस वे पर सफर करना महंगा हो गया है। एनएचएआई की ओर से टोल टैक्स में कितनी

बढ़ोतरी की गई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं। महंगा हआ सफर

भारत में अब नेशनल हाइवे और एक्सप्रेस वे पर सफर करना महंगा हो गया है। नेशनल हाइवे अथारिटी ऑफ इंडिया (NHAI) की ओर से देश के सभी टोल टैक्स पर दरों को बढ़ा दिया गया है।

कितनी हुई बढ़ोतरी

जानकारी के मुताबिक एनएचएआई की ओर से चार से पांच फीसदी तक की बढ़ोतरी की गई है। बढ़ी हुई दरों को एक अप्रैल 2025 की सबह से लाग कर दिया गया है।

अधिकारियों ने कही यह बात

सडक परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि देश भर के राष्ट्रीय राजमार्गों पर वाहन चालकों के लिए संशोधित टोल शुल्क मंगलवार से लागू हो गए हैं। एनएचएआई ने सभी राष्ट्रीय राजमार्गों और एक्सप्रेसवे के लिए टोल दरों में बढ़ोतरी को अलग से अधिसूचित किया है। अधिकारी के मताबिक, टोल शल्क में परिवर्तन दरों को संशोधित करने की वार्षिक कवायद का हिस्सा है, जो थोक मुल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति में बदलाव से जुड़ा हुआ है। हर साल इसे 1 अप्रैल से लागू किया जाता है।

कितने हैं टोल **प्लाजा**

देश में भर में नेशनल हाइवे नेटवर्क में करीब 855 उपयोगकर्ता शुल्क प्लाजा हैं, जिन पर राष्ट्रीय राजमार्ग शुल्क (दरों का निर्धारण और संग्रह) नियम, 2008 के अनुसार उपयोगकर्ता शुल्क लगाया जाता है। बढ़ी हुई दरें दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे, ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे और दिल्ली-जयपुर हाईवे सहित देश भर के प्रमुख नेशनल हाइवे और एक्सप्रेस पर बढ़ाई गई हैं। जिसके बाद सफर करने वालों को एक अप्रैल 2025 से बढ़ी हुई दरों के मुताबिक ही भुगतान करना होगा।

धिज्सशिके विबरवाइजेशनएंड वेलफेयएएलाइडेट्स्ट (पंजीकृत) TOLWA

Email: tolwadelhi@gmail.com bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन ६० विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020) , एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओं, एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय: – 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए –4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063 कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

गाजियाबाद पुलिस का ताबड़तोड़ एक्शन, जब्त हो रहे हैं ई-रिक्शा वाहन

शासन के निर्देश पर अवैध रूप से चल रहे ई-रिक्शा के खिलाफ एक माह तक चलने वाला विशेष चेकिंग अभियान मंगलवार से शुरू हो गया। पहले दिन लालकुआं मेरठ रोड तिराहा पुराना बस अड्डा चौधरी मोड़ वसुंधरा डाबर तिराहा पर चेकिंग की गई। इस दौरान नियमों का उल्लंघन कर चल रहे 20 ई-रिक्शा जब्त किए गए और 40 का चालान किया गया।

गाजियाबाद। शासन के निर्देश पर अवैध रूप से चल रहे ई-रिक्शा के खिलाफ एक माह तक चलने वाला विशेष चेकिंग अभियान मंगलवार से शुरू हो गया। पहले दिन लालकुआं, मेरठ रोड तिराहा, पुराना बस अड्डा, चौधरी मोड़, वसुंधरा, डाबर तिराहा पर चेकिंग की गई।

इस दौरान नियमों का उल्लंघन कर चल रहे 20 ई-रिक्शा जब्त किए गए और 40 का चालान किया गया।

एआरटीओ प्रवर्तन मनोज मिश्रा ने बताया कि ई-रिक्शा के खिलाफ विशेष चेकिंग



अभियान 30 अप्रैल तक जारी रहेगा। सभी प्रवर्तन टीमों को सघन चेकिंग करने के निर्देश दिए गए हैं।

हर दिन जिले में अलग-अलग स्थानों पर चेकिंग की जाएगी और नियमों के विरुद्ध चल रहे ई-रिक्शा के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। पहलेदिन के चेकिंग अभियान में 20 ई-रिक्शा अनफिट चलते मिले। इन सभी को सीज कर इनकारणों से हुआ चालान

इसके अलावा बिना इंश्योरेंस के चलने. चालक के पास ड्राइविंग लाइसेंस न होने और अन्य नियमों का उल्लंघन करने पर 40 ई-रिक्शा का चालान किया गया। एआरटीओ ने बताया कि यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले अन्य वाहनों के खिलाफ भी चेकिंग अभियान नियमित रूप से जारी रहेगा।

राजधानी के हर कोने में कनेक्टिविटी को

सुगम बनाने के उद्देश्य से 2014 में ई-रिक्शा की शुरुआत की गई थी। शुरुआत में दुरदराज के इलाकों में लोगों को इससे काफी सुविधा मिली। लेकिन पिछले 11 सालों में ई-रिक्शा

एक समस्या बन गए हैं। दिल्ली की सड़कों को संकरा कर

दियाई-रिक्शा इन्होंने दिल्ली की कई सड़कों को संकरा

कर दिया है। कुछ चौराहों पर तो इनकी वजह

दिल्ली में ई-रिक्शा न सिर्फ ट्रैफिक जाम का कारण बन रहे हैं, बल्कि हादसों का कारण भी बन रहे हैं। सड़कों के बीचों-बीच बेतरतीब ढंग से दौड़ रहे ई-रिक्शा दूसरे चालकों की

जान जोखिम में डाल रहे हैं। ई-रिक्शा पर नियंत्रण के लिए दिल्ली की 236 सड़कों पर इनके चलने पर रोक लगाई गई थी। लेकिन ये प्रतिबंधित सड़कों पर भी बेखौफ दौड़ रहे हैं। सुबह से लेकर रात तक

से जाम लगा रहता है। इसकी मुख्य वजह यह

है कि राजधानी में रजिस्टर्ड ई-रिक्शा से

ज्यादा अवैध ई-रिक्शा चल रहे हैं। दिल्ली में

करीब 1.5 लाख ई-रिक्शा रजिस्टर्ड हैं।

जबकि अनुमान है कि सड़कों पर दो लाख से

हाल ही में संसद में सरकार के जवाब में

यह बात भी सामने आई है कि देश में वैध ई-

रिक्शा से ज्यादा अवैध ई-रिक्शा चल रहे हैं ।

ज्यादा अवैध ई-रिक्शा चल रहे हैं ।

मेट्रो स्टेशनों के आसपास इनका जमघट लगा रहता है। जानकारों का कहना है कि इन पर नजर

रखने के लिए कोई नियामक संस्था नहीं है। इस वजह से इन पर नियंत्रण नहीं हो पा रहा है।

रूप,जय,यश प्रदान करता है अर्गला स्त्रोत का पाट



ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी)

श्री दुर्गा सप्तशती में वर्णित अर्गला स्त्रोत अत्यंत शिवतशाली बताया गया है। यदि कवच के पश्चात अर्गला स्त्रोत का नित्य पाठ किया जाए तो व्यक्ति सौभाग्यशाली, यश, मान सम्मान, जय प्राप्त करता है तथा शत्रु भय से मुक्ति मिलती है। यदि किसी का विवाह नहीं हो रहा है तो नवरात्रि से नित्य पाठ आरंभ करने से शीघ्र विवाह तय हो जाता है। यदि किसी को नौकरी में या धन प्राप्ति में बाधा आ रही है तो शुक्रवार से इस स्त्रोत का नित्य पाठ आरंभ करे। अर्गला स्त्रोत के पाठ से पित पत्नी के बीच के मतभेद भी कम होते हैं तथा परस्पर प्रीति बनना शुरू हो जाती है। अर्गला स्त्रोत कुछ इस प्रकार से है।

विनियोग– ॐ अस्य श्री अर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुरृऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्रीमहालक्ष्मीर्देवता श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशती पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।

माँ दुर्गा से जुडे रहस्य

ब्दू धर्म में मां दुर्गा का अपना एक खास महत्व है। नवरात्रि आते ही हर जगह मां के मंदिर सज जाते हैं और मक्त कतारों में खड़े होकर माता के दर्शन की प्रतीक्षा करते हैं। मां दुर्गा को पहाड़ावाली, शेरावाली, जगदन्मा, मां अम्बे, आदि नामों से भी जाना जाता है। माता के मंदिर पूरे भारत में बने हुए हैं। अगर आप मंदिरों की संख्या गिनने लगेंगे तो थक जारेंगे। सरस्वती, लक्ष्मी, और पार्वती माता का ही रूप हैं और त्रिदंव की पिल्यों भी हैं। माता के बारे में हमारे पुराणों और शास्त्रों में बहुत सी कथायें हैं। देवी पूरण में देवी के रहस्यों का खुलासा होता है। आज हम आपको माता के बारे में कुछ ऐसी बातें बताने जा रहे हैं, जो उनके हर भक्त को जाननी चाहिए। हालांकि हम आपको पूरी बात तो नहीं लेकिन जरूरत की लगभग सभी बातें बता सकते हैं। आरिवर कौन है मातारानी ?

अभ्बिका: अकेले रहकर हर तरफ घूमने वाले सदाशिव ने अपने शरीर से शिवत की रचना की, जो उनसे कभी भी अलग होने वाली नहीं थी। भगवान शिव की उस शिवत को विकार रहित अविनाशी, बुद्धि तत्व बताया गया। उसी शिवत को अन्बिका के नाम से जाना जाता है। इनकी 8 भुजाएँ है और ये अनेक शस्त्र धारण करती है। यह कालरूम सदिशिव की पत्नी हैं इन्हें जगदम्बा के नाम से भी

देवी दुर्गाः हिरण्याक्ष के बारे में तो आप जानते ही हैं। यह अत्यंत कूर राक्षस था। इसके प्रकोप से धरती वासी ही नहीं स्वर्ग के देवता भी परेशान हो चुके थे। इसिलए उन्होंने मां अम्बिका की आराधना की। उन्होंने हिरण्याक्ष को उसकी सेना सहित नष्ट कर दिया, तब से उन्हें दुर्गा के नाम से भी जाना जाने लगा। माता सती: राजा दक्ष की पूत्री सती से भगवन शंकर की शादी हुई थी। एक बार एक यड़ा में भगवन शंकर को ना बुलाये जाने पर सती क्रोधित हो गथीं और यड़ा कुंड में कृदकर अपने प्राणों की आहुति दे दीं। इसके बाद उनके शरीर के अंग जहां-जहां गिरे, वहां शितत्वीठों का निर्माण हो गया। बाद में सती ने हिमालयराज के यहां पार्विती के रूप में जन्म लिया और घोर तपस्या करके शिव को

पित के रूप में या लिया। पार्वती: सती के दूसरे रूप को पार्वती के नाम से जाना जाता है। माता पार्वती को भी दुर्गा का स्वरूप माना जाता है, लेकिन वह दुर्गा नहीं है। इनके दो पुत्र गणेश और कार्तिकय है। केटमा: हिरण्याक्ष की तरफ से युद्ध करने वाले मधु और कैटम

कैठमा: हिरण्याक्ष की तरफ से युद्ध करने वाले मधु और कैठम नाम के दो भाइयों का वध करने के बाद माता को इस नाम से भी पुकारा जाने लगा। काली: भगवान शंकर की तीन पत्नियां थी। उमा उनकी तीसरी

काली: भगवान शंकर की तीन पत्नियां थी। उमा उनकी तीसरी पत्नी थीं। उत्तरारबंड में देवी उमा का एकमात्र मंदिर है। भगवान शंकर की वौथी पत्नी के रूप में मां काली की पूजा की जाती है। इन्होंने इस धरती को भयानक राक्षसों के आतंक से मुक्त किया। काली भी देवी अम्बा की पुत्री थीं। इन्होंने ही रक्तबीज नाम के भयानक दानव का वध किया था।

मिर्ह्यासुर मिर्दिनी ऋषि कात्यायन की पुत्री ने ही राम्मासुर के पुत्र मिर्ह्यासुर का वध किया था, इसके बाद ही उन्हें मिर्ह्यासुर मिर्दिनी के नाम से जाना जाने लगा। एक अन्य कहानी के अनुसार मिर्ह्यासुर के आतंक से त्रस्त सभी देवताओं ने मिलकर अपने शरीर से एक ज्योति निकाली जो एक सुन्दर कन्या के रूप में प्रकट हुई। सभी ने अपने अस्त्र-शस्त्र दिए इसके बाद ही मिर्ह्यासुर का वध माता ने किया।

तुलजा भवानी और यामुंडा माताः यंड और मुंड दो भाइयों का वध करने के बाद माता अभ्बिका को ही यामुंडा के नाम से जाना जाने लगा। महिषासुर मर्दिनी को ही कई जगहों पर तुलजा भवानी के नाम से जाना जाता है। तुलजा भवानी और यामुंडा की पूजा खासतौर पर महाराष्ट्र में ज्यादा की जाती है। दस महाविद्यायें: इनमें से कछ देवी अम्बा के रूप हैं तो कछ देवी

दस महाविद्यार्थे: इनमें से कुछ देवी अम्बा के रूप है तो कुछ देवी सती या मां पार्वती या राजा दक्ष की अन्य पुत्रियां है। इनके नाम निम्नितिरिव्रत हैं-

1.काली, १.तारा, ३.त्रियुरसुंदरी, ४.भुवनेश्वरी, ५.छिन्नमस्ता, ६.त्रियुरभैरवी, ७.धूमावती, ८.बगलामुरवी, ९.मातंगी और १०.कमला ।

10.कमला।
वाहन सिंह या शेर क्यों ? एक कथा के अनुसार माता पार्वती
भगवान शिव को पाने के लिए हजारों सालों तक तपस्या करती
रहीं, इस वजह से वह काली हो गयीं। शादी हो जाने के बाद एक
बार मगवान शंकर ने मजाक में उन्हें काली कह दिया तो माता
पार्वती पुन: कैलाश से वापस आकर तपस्या करने लगी। एक दिन
एक भूखा शेर उनके पास से गुजरा और उन्हें खाने के बारे में
सोचने लगा। लेकिन उसने इंतजार करना उचित समझा। देवी की
तपस्या पूरी होने पर उन्हें गोरा होने का वरदान मिला। तब से उन्हें
गौरी के नाम से भी जाना जाने लगा। सिंह भी माता के साथ-साथ
कई सालों तक तपस्या करता रहा, इससे माता ने प्रसन्न होकर
उसे अपना वाहन बना लिया। ज्यादातर देवियों के वाहन सिंह ही है।





विविध विशेष

जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ।।
मधुकैटभविद्राविविधातृ वरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जिह।।
महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जिह।।
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिन।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जिह।।
सुम्भस्यैव निशुंभस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिन।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जिह।।
चन्दिताङ्ग्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिन।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जिह।।

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डके दुरितापहे । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

स्तुवद्भयो भवितपूर्वं त्वां चण्डिकं व्याधिनाशिनि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

चण्डिक सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः। रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम। रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकै : । रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

विधेहि देवि कल्याणम् विधेहि परमां श्रियम् । रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

सुरसुरशिरोरत्निनघृष्टचरणेम्बिके। रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

विद्यावन्तं यशवंतं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु। रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिक प्रणताय मे। रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र संस्तुते परमेश्वरि । रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वत भक्त्या सदाम्बिके।

रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि । रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि । रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि । रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

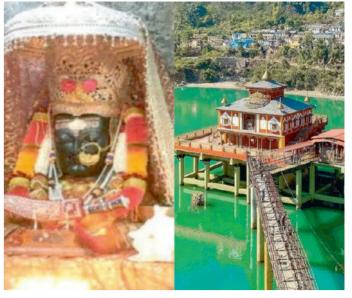
देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदये अम्बिके। रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

पत्नीं मनोरमां देहिमनोवृत्तानुसारिणीम। तारिणीं दुर्ग संसारसागरस्य कुलोद्भवाम ।।

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः । स तु सप्तशती संख्या वरमाप्नोति सम्पदाम् । ॐ

।। इति देव्या अर्गला स्तोत्रं सम्पर्णम ।।

माँ धारी देवी की कथा



-हते हैं कि धारी देवी सात भाइयों की हत है। के धारा दवा सात भाइया की इकलौती बहन थी, बचपन में ही माता पिता के देहांत के बाद सातों भाइयों ने धारी देवी की देखरेख की वह भी अपने भाइयों की खूब सेवा करती थी तभी भाइयों को पता चला कि उनकी बहन के ग्रह भाइयों के खराब हैं तो ओ बहन से नफ़रत करने लगे,जब वह कन्या तेरह साल की थी तो उसके पांच भाइयों की मृत्यु हो गई बचे हुए दो भाइयों को लगा कि इसी बहन के ग्रहों के कारण भाइयों की मृत्यु हो गई है, फिर उन्होंने रात्रि के समय में कन्या की हत्या कर दी और उसका सिर धड़ से अलग कर दिया सिर और धड़ को गंगा में बहा दिया, कन्या का सिर बहते हुए दूर धारी गांव में पहुंच गया, प्रातः काल में नदी किनारे एक व्यक्ति कपड़े धो रहा था उसे लगा कि एक कन्या डूब रही है बचाने का प्रयास किया परंतु पानी बहुत था इसलिए पीछे हटा तभी उस सिर में से आवाज आई कि डर मत मुझे बचा तू जहां जहां पैर रखेगा वहां पर सीढ़ियां बनती जायेंगी,उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया और सीढ़ियां बनती गई, जैसे ही उसने कन्या समझकर सिर को उठाया तो कटा सिर देखकर घबरा गया फिर सिर पर से आवाज आई कि मैं देवी रूप में हूं

तु मुझे किसी पवित्र स्थान पर पत्थर के ऊपर स्थापित कर दे, व्यक्ति ने वैसा ही किया तब देवी ने उसे सारी बात बताई और पत्थर में परिवर्तित हो गई, कन्या के शरीर का बाकी हिस्सा काली मठ में है जहां मैठाणा मां के रूप में सुप्रसिद्ध है, धारी देवी मंदिर उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल में स्थित है मां धारी को उत्तराखंड की रक्षक भी कहा जाता है,, मां की कृपा संपूर्ण जगत पर सदैव बनी रहे। धारी देवी मंदिर में स्थित माता की मूर्ति सुबह कन्या, दोपहर, युवती और शाम को बूढ़ी महिला के रूप में नजर आती है। बद्रीनाथ जाने वाले भक्त यहां रूककर माता के दर्शन जरूर करते हैं। माना जाता है कि धारी देवी उत्तराखंड के चार धाम की रक्षा करती हैं। मां धारी को पहाड़ों की रक्षक देवी माना जाता है। बताया जाता है कि माता की मूर्ति को 16 जून 2013 की शाम को मंदिर से हटाया गया था और उसके कुछ ही घंटों बाद उत्तराखंड में बाढ़ का कहर टूट पड़ा था। उसके बाद फिर से उसी जगह पर मां धारी देवी की मूर्ति स्थापित की गई। जिसके बाद बाढ ने कहर बरपाना बंद किया था जिसमें हजारों लोगों की जान चली गई थी।

जयमाँ धारी देवी

माँ दुर्गा की शक्ति का चौथा रूप कूष्माण्डा माता

वरात्र-पूजन के चौथे दिन वरात्र-पूजन ज उपासना की जाती है। इस दिन साधक का मन 'अनाहत' चक्र में अवस्थित होता है। अतः इस दिन उसे अत्यंत पवित्र और अचंचल मन से कृष्माण्डा देवी के स्वरूप को ध्यान में रखकर पूजा-उपासना के कार्य में लगना चाहिए। जब सुष्टि का अस्तित्व नहीं था, तब इन्हीं देवी ने ब्रह्मांड की रचना की थी। अतः ये ही सिष्ट की आदि-स्वरूपा. आदिशक्ति हैं। इनका निवास सूर्यमंडल के भीतर के लोक में है। वहाँ निवास कर सकने की क्षमता और शक्ति केवल इन्हीं में है। इनके शरीर की कांति और प्रभा भी सूर्य के समान ही दैदीप्यमान हैं। इनके तेज और प्रकाश से दसों दिशाएँ प्रकाशित

हो रही हैं। ब्रह्मांड की सभी वस्तुओं और

प्राणियों में अवस्थित तेज इन्हीं की छाया

है। माँ की आठ भुजाएँ हैं। अतः ये अष्टभुजा देवी के नाम से भी विख्यात हैं। इनके सात हाथों में क्रमशः कमंडल, धनुष, बाण, कमल-पुष्प, अमृतपूर्ण कलश, चक्र तथा गदा है। आठवें हाथ में सभी सिद्धियों और निधियों को देने वाली जपमाला है। इनका वाहन शेर है।

महिमा माँ कूष्माण्डा की उपासना से भक्तों के समस्त रोग-शोक मिट जाते हैं। इनकी भक्ति से आयु, यश, बल और आरोग्य की वृद्धि होती है। माँ कूष्माण्डा अत्यल्प सेवा और भक्ति से प्रसन्न होने वाली हैं। यदि मनुष्य सच्चे हृदय से इनका शरणागत बन जाए तो फिर उसे अत्यन्त सुगमता से परम पद की प्राप्ति हो सकती है। विधि-विधान से माँ के भक्ति-मार्ग पर कुछ ही कदम आगे बढ़ने पर भक्त साधक को उनकी कृपा का सूक्ष्म अनुभव होने लगता है। यह दुःख

स्वरूप संसार उसके लिए अत्यंत सुखद और सुगम बन जाता है। माँ की उपासना मनुष्य को सहज भाव से भवसागर से पार उतारने के लिए सर्वाधिक सुगम और श्रेयस्कर मार्ग है। माँ कृष्माण्डा की उपासना मनुष्य को आधियों-व्याधियों से सर्वथा विमुक्त करके उसे सुख, समृद्धि और उन्नित की ओर ले जाने वाली है। अतः अपनी लौकिक, पारलौकिक उन्नित चाहने वालों को इनकी उपासना में सदैव तत्पर रहना चाहिए।

चाहए। उपासना चतुर्थी के दिन माँ कूष्मांडा की आराधना की जाती है। इनकी उपासना से सिद्धियों में निधियों को प्राप्त कर समस्त रोग-शोक दूर होकर आयु-यश में वृद्धि होती है। प्रत्येक सर्वसाधारण के लिए आराधना योग्य यह श्लोक सरल और स्पष्ट है। माँ जगदम्बे की भक्ति पाने के लिए इसे कंठस्थ कर नवरात्रि में चतुर्थ दिन इसका जाप करना चाहिए।

या देवी सर्वभू तेषु माँ कूष्माण्डा रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो

अर्थ : हे माँ ! सर्वत्र विराजमान और

कूष्माण्डा के रूप में प्रसिद्ध अम्बे, आपको मेरा बार-बार प्रणाम है। या मैं आपको बारंबार प्रणाम करता हूँ। हे माँ, मुझे सब पापों से मुक्ति प्रदान करें। अपनी मंद, हल्की हँसी द्वारा अंड अर्थात ब्रह्मांड को उत्पन्न करने के कारण इन्हें कूष्माण्डा देवी के रूप में पूजा जाता है। संस्कृत भाषा में कूष्माण्डा को कुम्हड़ कहते हैं। बलियों में कुम्हड़े की बलि इन्हें सर्वाधिक प्रिय है। इस कारण से भी माँ कष्माण्डा कहलाती हैं।



पूजन इस दिन जहाँ तक संभव हो बड़े माथे वाली तेजस्वी विवाहित महिला का पूजन करना चाहिए। उन्हें भोजन में दही, हलवा खिलाना श्रेयस्कर है। इसके बाद फल, सूखे मेवे और सौभाग्य का सामान भेंट करना चाहिए। जिससे माताजी प्रसन्न होती हैं। और मनवांछित फलों की प्राप्ति होती है।

इक्यावन शक्ति पीठों में से एक चामुंडा देवी की कथा

माचल प्रदेश को देव भूमि भी कहा जाता है। इसे देवताओं के घर के रूप में भी जाना जाता है। पूरे हिमाचल प्रदेश में 2000 से भी ज्यादा मंदिर है और इनमें से ज्यादातर प्रमुख आकर्षक का केन्द्र बने हुए है। इन मंदिरो में से एक प्रमुख मंदिर चामुण्डा देवी का मंदिर है जो कि जिला कांगड़ा हिमाचल प्रदेश राज्य में स्थित है। चामुण्डा देवी मंदिर शक्ति के 51 शक्ति पीठो में से एक है। यहां पर आकर श्रद्धालु अपने भावना के पुष्प मां चामुण्डा देवी के चरणों मे अपिंत करते हैं। मान्यता है कि यहां पर आने वाले श्रद्धालुओं की सभी मनोकामना पूर्ण होती है। देश के कोने-कोने से भक्त यहां पर आकर माता का आशीर्वाद प्राप्त करते है। चामण्डा देवी का मंदिर समद तल से 1000 मी

होती है। देश के कोने-कोने से भक्त यहां पर आकर माता का आशीर्वाद प्राप्त करते है। चामुण्डा देवी का मंदिर समुद्र तल से 1000 मी. की ऊंचाई पर स्थित है। यह धर्मशाला से 15 कि॰मी॰ की दरी पर है। यहां प्रकृति ने अपनी सुंदरता भरपूर मात्रा में प्रदान कि है। चामुण्डा देवी मंदिर बंकर नदी के किनारे पर बसा हुआ है। पर्यटको के लिए यह एक पिकनिक स्पॉट भी है। यहां कि प्राकृतिक सौंदर्य लोगो को अपनी और आकर्षित करता है। चामुण्डा देवी मंदिर मुख्यता माता काली को समर्पित है। माता काली शक्ति और संहार की देवी है। जब-जब धरती पर कोई संकट आया है तब-तब माता ने दानवो का संहार किया है। असुर चण्ड-मुण्ड के संहार के कारण माता का नाम चामुण्डा पड़ गया। दूर्गा सप्तशती और देवी महात्यमय के अनुसार देवताओं और असुरों के बीच में सौ वर्षों तक युद्ध चला था। इस युद्ध में असुरो की विजय हुई। असुरो का राजा महिषासुर स्वर्ग का राजा बन गया और देवता सामान्य मनुष्यों कि भांति धरती पर विचलन करने लगे। देवताओं के ऊपर असुरों ने काफी अत्याचार किया। देवताओं ने विचार किया और वह भगवान विष्णु के पास गए। भगवान विष्णु ने उन्हें देवी कि अराधना करने को कहा। देवताओं ने पूछा वो देवी कौन है जो कि हमार कष्टो का निवारण करेगी। इसी योजना के फलस्वरूप त्रिदेवों ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों के अंदर से एक दिव्य प्रकाश प्रकट हुआ जो देखते ही देखते एक स्त्री के रूप में पर्वितित हो गया। इस देवी को

सभी देवी-देवताओं ने कुछ न कुछ भेट स्वरूप



प्रदान किया। भगवान शंकर ने सिंह, भगवान विष्णु ने कमल, इंद्र ने घंटा तथा समुद्र ने कभी न मैली होने वाली माला प्रदान की। तभी सभी देवताओं ने देवी की आराधना की ताकि देवी प्रसन्न हो और उनके कष्टो का निवारण हो सके। और हुआ भी ऐसा ही। देवी ने प्रसन्न होकर देवताओं को वरदान दे दिया और कहा मै तुम्हारी रक्षा अवश्य करूंगी। इसी के फलस्वरूप देवी ने महिषासुर के साथ युद्ध प्रारंभ कर दिया। जिसमें देवी कि विजय हुई और तभी से देवी का नाम महिषासुर मर्दनी पड़ गया। चामुण्डा देवी मंदिर शक्ति पीठ मंदिरों मे से एक है। पूरे भारतवर्ष मे कुल 51 शक्तिपीठ है। जिन सभी की उत्पत्ति कथा एक ही है। यह सभी मंदिर शिव और शक्ति से जुड़े हुऐ है। धार्मिक ग्रंधो के अनुसार इन सभी स्थलो पर देवी के अंग गिरे थे। शिव के ससुर राजा दक्ष ने यज्ञ का आयोजन किया जिसमे उन्होंने शिव और सती को आमंत्रित नहीं किया क्योंकि वह शिव को अपने बराबर का नही समझते थे। यह बात सती को काफी बुरी लगी और वह बिना बुलाए यज्ञ में पहुंच गयी। यज्ञ स्थल पर शिव का काफी अपमान किया गया जिसे सती सहन न कर सकी और वह हवन कुण्ड में कुद गयीं। जब भगवान शंकर को यह बात पता चली तो वह आये और सती के शरीर को हवन कुण्ड से निकाल कर तांडव करने लगे। जिस कारण सारे ब्रह्माण्ड में हाहाकार मच गया। पूरे ब्रह्माण्ड को इस संकट से बचाने के लिए भगवान विष्णु ने सती के शरीर को अपने सुदर्शन चक्र से 51 भागो में बांट दिया जो अंग जहां पर गिरा वह शक्ति पीठ बन गया। मान्यता है कि

चामुण्डा देवी मंदिर मे माता सती के चरण गिरे थे। माता का नाम चामुण्ड़ा पड़ने के पीछे एक कथा प्रचलित है। दूर्गा सप्तशती में माता के नाम की उत्पत्ति कथा वर्णित है। हजारों वर्ष पूर्व धरती पर शुम्भ और निशुम्भ नामक दो दैत्यों का राज था। उनके द्वारा धरती व स्वर्ग पर काफी अत्याचार किया गया। जिसके फलस्वरूप देवताओं व मनुष्यों ने देवी दूर्गा कि आराधना की और देवी दूर्गा ने उन सभी को वरदान दिया कि वह अवश्य ही इन दोनों दैत्यों से उनकी रक्षा करेंगी। इसके पश्चात देवी दुर्गा ने कोशिकी नाम

से अवतार ग्रहण किया। माता कोशिकी को शुम्भ और निशुम्भ के दुतो ने देख लिया और उन दोनो से कहा महाराज आप तीनों लोको के राजा है। आपके यहां पर सभी अमूल्य रत्न सुशोभित है। इन्द्र का एरावत हाथी भी आप ही के पास है। इस कारण आपके पास ऐसी दिव्य और आकर्षक नारी भी होनी चाहिए जो कि तीनों लोकों में सर्वसुन्दर है। यह वचन सुन कर शुम्भ और निशुम्भ ने अपना एक दूत देवी कोशिकी के पास भेजा और उस दूत से कहा कि तुम उस सुन्दरी से जाकर कहना कि शुम्भ और निशुम्भ तीनों लोके के राजा है और वो दोनो तुम्हें अपनी रानी बनाना चाहते है। यह सुन दूत माता कोशिकी के पास गया और दोनो दैत्यो द्वारा कहे गये वचन माता को सुना दिये। माता ने कहा मैं मानती हूं कि शुम्भ और निशुम्भ दोनों ही महान बलशली है। परन्तु मैं एक प्रण ले चुंकि हुं कि जो व्यक्ति मुझे युद्ध में हरा देगा मैं उसी से विवाह करूंगी। यह सारी बाते दूत ने शुम्भ और निशुम्भ को बताई। तो वह दोनो कोशिकी के वचन सुन कर उस पर क्रोधित हो गये और कहा उस नारी का यह दुस्साहस कि वह हमें युद्ध के लिए ललकारे। तभी उन्होंने चण्ड और मुण्ड नामक दो असुरो को भेजा और कहा कि उसके केश पकड़कर हमारे पास ले आओ। चण्ड और मुण्ड देवी कोशिकी के पास गये और उसे अपने साथ चलने के लिए कहा। देवी के मना करने पर उन्होंने देवी पर प्रहार किया। तब देवी ने अपना काली रूप धारण कर लिया और असुरो को यमलोक पहुंचा दिया। उन दोनो असुरो को मारने के कारण माता का नाम चामुण्डा पड गया।

श्री लक्ष्मी पंचमी

क्श्मी पंचमी हिन्दू समुदाय में एक प्रसिद्ध त्योहार है। यह त्योहार धन और समृद्धि की देवी देवी लक्ष्मी को समर्पित है। लक्ष्मी पंचमी आमतौर पर चैत्र महीने के पांचवें दिन मनाई जाती है, यह त्योहार चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन आता है। लक्ष्मी पंचमी को श्री पंचमी और श्री व्रत के नाम से भी जाना जाता है। श्री देवी लक्ष्मी का दूसरा नाम 'श्री' है। ज्यादातर लोग वसंत पंचमी और श्री पंचमी में श्रमित रहते है। बसंत पंचमी जान की देवी सरस्वती को समर्पित होता है और श्री पंचमी धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी को समर्पित होता है। श्री लक्ष्मी पंचमी की पूजा विधि

स्नान और संकल्पः इस दिन प्रातःकाल जल्दी उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पूजा स्थल को साफ करके देवी लक्ष्मी की मूर्ति या चित्र स्थापित करें।

पूजन सामग्री की व्यवस्थाः देवी लक्ष्मी की मूर्ति या चित्र लाल या पीले वस्त्र चावल, हल्दी, कुमकुम और फूल गंगाजल, दीपक, कपूर और धूपबत्ती मिठाई और फल

पूजा विधिः माँ लक्ष्मी की मूर्ति को गंगाजल से स्नान कराएं। उन्हें लाल वस्त्र पहनाएं और आभूषण अर्पित करें। धूप, दीप और कपूर जलाकर माँ की आरती करें। लक्ष्मी स्तोत्र या श्री सूक्त का पाठ करें। पूजा के अंत में मिठाई और फल का भोग लगाएं और परिवार के साथ प्रसाद

लक्ष्मी पंचमी व्रत का महत्व जो भक्त लक्ष्मी पंचमी के दिन व्रत रखते हैं, उन्हें माँ लक्ष्मी का विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है। व्रत रखने वाले व्यक्ति को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए और दिनभर फलाहार करना चाहिए। शाम के समय पूजा करके व्रत का पारण करना चाहिए।

लक्ष्मी पंचमी और ज्योतिषीय महत्व ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, श्री लक्ष्मी पंचमी के दिन माँ लक्ष्मी की पूजा करने से कुंडली में मौजूद धन से संबंधित दोष दूर होते हैं।जिन लोगों की कुंडली में



आर्थिक संकट से जुड़े ग्रह दोष होते हैं, वे इस दिन विशेष पूजा करके अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

श्री लक्ष्मी पंचमी से जुड़ी पौराणिक कथा पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब देवताओं और असुरों ने समुद्र मंथन किया था, तब माँ लक्ष्मी का प्राकट्य हुआ था। समुद्र मंथन से प्राप्त रत्नों में देवी लक्ष्मी सबसे महत्वपूर्ण थीं। उनके प्रकट होते ही चारों दिशाओं में प्रकाश फैल गया, और सभी ने

उनका स्वागत किया। अंत में श्री लक्ष्मी पंचमी का पर्व श्रद्धा, भिक्त और समर्पण का प्रतीक है। इस दिन की गई पूजा-अर्चना जीवन में धन, सुख और समृद्धि लाती है। माँ लक्ष्मी की कृपा से जीवन के सभी कष्ट दूर होते हैं और सुख-शांति की प्राप्ति होती है। सभी भक्तों को इस पावन पर्व पर माँ लक्ष्मी की पूजा विधि-विधान से करनी चाहिए।

₹ॐ श्रीं हीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः₹ मंत्र का जाप करें और माँ लक्ष्मी का आशीर्वाद प्राप्त करें।

सौर ऊर्जा से संचालित होगी दिल्ली विधानसभा इतने दिनों के भीतर जगमगाएगी बिल्डिंग

www.newsparivahan.com



दिल्ली विधानसभा में बड़े बदलाव हो रहे हैं। विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने ऐलान किया है कि अगले 100 दिनों में दिल्ली विधानसभा सौर ऊर्जा से संचालित होगी इसके लिए प्रतिदिन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। विधानसभा में इस्तेमाल होने वाली सारी बिजली सौर ऊर्जा से पैदा की जाएगी। विधानसभा को रोशन करने की योजना को पुरा करने के लिए उन्होंने 100 दिन का लक्ष्य रखा है।

नर्ड दिल्ली।दिल्ली में भाजपा की सरकार आने के बाद दिल्ली विधानसभा में बड़े बदलाव सामने आ रहे हैं। कुछ दिन पहले ही दिल्ली विधानसभा ने केंद्र सरकार के साथ मिलकर केंद्रीय मंत्री किरण रिजिज् के साथ दिल्ली विधानसभा को ई-विधानसभा बनाने के लिए एमओयू साइन किया है। दिल्ली विधानसभा सौर ऊर्जा से होगी संचालित

इसी को आगे बढ़ाते हुए विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने मंगलवार को विधानसभा परिसर को लेकर बड़ा ऐलान किया। अध्यक्ष ने कहा है कि अगले 100 दिनों में दिल्ली विधानसभा सौर ऊर्जा से संचालित होगी।

उन्होंने इस योजना के लिए प्रतिदिन का लक्ष्य निर्धारित किया है। उनके अनुसार विधानसभा में इस्तेमाल होने वाली सारी बिजली सौर ऊर्जा से पैदा की जाएगी। विधानसभा को रोशन करने की योजना को पूरा करने के लिए उन्होंने 100 दिन का लक्ष्य

इसको लेकर विधानसभा अध्यक्ष ने कछ

दिन पहले ही अधिकारियों के साथ बैठकर योजना की पुरी रूपरेखा तैयार करने के निर्देश दिए हैं। जिसको लेकर लोक निर्माण विभाग इस परी योजना पर काम कर रहा है। जिसमें कितनी क्षमता के सोलर पैनल लगाने की जरूरत है और इस पर कितना खर्च

इन सभी मुद्दों पर विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जा रही है। इसको लेकर जल्द ही अगली बैठक होने वाली है। अध्यक्ष गप्ता ने कहा कि विधानसभा अपने इस्तेमाल के लिए सारी बिजली अपने स्तर पर ही पैदा करेगी, इसके लिए गंभीरता से काम शुरू हो गया है।

उन्होंने कहा कि विधानसभा को लेकर आने वाले समय में और भी कई बड़े काम होने वाले हैं, जिनकी जानकारी भी जल्द ही दी

'बिजली कटौती को लेकर झूठ फैला रही हैं आतिशी', मंत्री आशीष सूद ने दी चेतावनी

बिजली कटौती को लेकर सियासत गरमा गई है। मंत्री आशीष सद ने विपक्ष पर इंटरनेट मीडिया पर झुटी खबरें फैलाकर दिल्ली की शांति भंग करने की साजिश रचने का आरोप लगाया है। उन्होंने कानूनी कार्रवाई की चेतावनी भी दी है। मंत्री ने आप विधायक कुलदीप कुमार द्वारा बिजली कटौती पर लाएँ गए ध्यानाकर्षण प्रस्ताव का जवाब दिया। मंत्री के जवाब के दौरान विपक्षी विधायक सदन से बाहर जा चुके थे।

नई दिल्ली।बिजली को लेकर विपक्ष और सत्ता पक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति बढती जा रही है। पर्व मख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, नेता प्रतिपक्ष आतिशी और आप के अन्य नेता भाजपा सरकार पर बिजली कटौती का आरोप लगा रहे हैं।

शांति भंग करने की साजिश रचने का आरोप विधानसभा में भी विपक्ष ने यह मुद्दा उठाया। जवाब में ऊर्जा मंत्री आशीष सुद ने केजरीवाल और आतिशी पर इंटरनेट मीडिया पर झुठी खबरें फैलाकर दिल्ली की शांति भंग करने की साजिश रचने का आरोप लगाया। उन्होंने कानूनी कार्रवाई की चेतावनी भी दी।

मंत्री ने आप विधायक कलदीप कमार द्वारा बिजली कटौती पर लाए गए ध्यानाकर्षण प्रस्ताव का जवाब दिया। मंत्री के जवाब के दौरान विपक्षी विधायक सदन से बाहर जा चुके थे।

'फर्जी अकाउंट को बढ़ावा दे रहीं आतिशी'

उन्होंने कहा, एक्स पर फर्जी अकाउंट से फर्जी पोस्ट किए जा रहे हैं कि आप के राज में बिजली कटौती नहीं होती थी और अब घंटों बिजली कटौती हो रही है। केजरीवाल और आतिशी फर्जी अकाउंट से किए गए ऐसे पोस्ट को बढ़ावा दे रहे हैं।

उन्होंने दावा किया कि आप के राज में पिछले एक साल में 21597 बार और 10 साल में 2.72 लाख से ज्यादा बार एक घंटे से ज्यादा समय के लिए बिजली गुल हुई। उन्होंने कहा, नेता प्रतिपक्ष सुबह से कई वीडियो अपलोड कर दावा कर रही हैं कि उनके घर में कई बार

सच्चाई यह है कि दो फीडरों से बिजली की आपूर्ति होती है। उनके घर में पहले भी बिजली गुल हो चुकी है। पिछले साल 11 मई को 57 मिनट 48 सेकंड के लिए बिजली गुल रही थी। 3 मई को 29 मिनट 56 सेकंड, 30 मई को 29 मिनट 50 सेकंड, 18 जून को 23 मिनट 51 सेकंड और 19 जुलाई को 22 मिनट 20 सेकंड के लिए बिजली गुल रही थी।

मंत्री का आतिशी से सवाल

उन्हें बताना चाहिए कि अगर उनके शासनकाल में बिजली कटौती नहीं हुई तो उनके आवास शीशमहल. पूर्व विधानसभा अध्यक्ष और कई मंत्रियों के घरों में डीसी सेट क्यों लगाए गए?

उन्होंने कहा, गर्मी को ध्यान में रखते हुए बिजली नेटवर्क को दुरुस्त करने और ट्रांसफार्मरों की क्षमता बढ़ाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कुछ समय के लिए बिजली कटौती की जा रही है। विपक्ष भ्रम फैलाकर इस काम को रोकने की कोशिश कर रहा है लेकिन मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व वाली यह सरकार अपना काम करेगी।

उन्होंने कहा कि वे विपक्ष के ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पर जवाब दे रहे हैं और विपक्षी सदस्य सदन से वॉकआउट कर गए हैं। यह सदन की अवमानना है। अध्यक्ष से

कार्रवाई की अपेक्षा है। बिजली कटेगी तो कंपनियों को लगेगा जुर्माना

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार ने बिजली उपभोक्ता अधिकार अधिनियम 2020 के तहत बिजली कंपनियों को 24 घंटे बिजली देने का निर्देश दिया है। इसका उल्लंघन करने पर उपभोक्ता को 10 रुपये प्रति किलोवाट प्रति घंटे के हिसाब से जर्माना देना पडता है। आप सरकार ने इसे दिल्ली में क्यों लाग नहीं किया, इसकी जांच कराई जाएगी।

उन्होंने कहा कि बिजली आपर्ति को बेहतर बनाने के लिए 15 मई तक टांसफार्मर बदलने का काम परा कर लिया जाएगा। मंडका में 20 मेगावाट बिजली स्टोर करने का सिस्टम विकसित किया जा रहा है। इसका ट्रायल 12 अप्रैल तक पूरा हो जाएगा। ऊर्जा मंत्री के कार्यालय में 24 घंटे काम करने वाला कंट्रोल रूम

'नागरिकों के अधिकारों को मनमाने ढंग से नहीं किया जा सकता सीमित', हाईकोर्ट का बड़ा फैसला

दिल्ली हाई कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि वैध OCI कार्ड रखने वाले प्रवासी भारतीय नागरिकों के अधिकारों को मनमाने ढंग से सीमित नहीं किया जा सकता। कोर्ट ने कहा कि नागालैंड और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में अनधिकृत मिशनरी गतिविधियों में शामिल OCI कार्ड धारक को निर्वासित करने और काली सुची में डालने में कानूनी प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया।

नर्इ दिल्ली।ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया (ओसीआई) कार्ड की वैधता से जुड़े मामले में अहम टिप्पणी करते हुए दिल्ली हाई कोर्ट ने कहा कि वैध ओसीआई कार्ड रखने वाले प्रवासी भारतीय नागरिक के अधिकारों को मनमाने ढंग से सीमित नहीं किया जा सकता।

जस्टिस सचिन दत्ता की पीठ ने कहा कि नगालैंड और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में अनिधकृत मिशनरी गतिविधियों में शामिल ओसीआई कार्ड धारक को निर्वासित करने और काली सूची में डालने में कानूनी प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया। कोर्ट ने कहा कि जॉन रॉबर्ट रतन तृतीय को आरोपों के समाधान के लिए प्रभावी अवसर दिया जाना चाहिए था।

ओसीआईकार्डधारकका पंजीकरण रद्द करने की एक वैधानिक प्रक्रिया

उक्त टिप्पणी के साथ पीठ ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया कि वह उनके जवाब पर विचार करने के बाद इस मुद्देपर उचित आदेश पारित करने से पहले



कारण बताओ नोटिस जारी करे। पीठ ने कहा कि ओसीआई कार्डधारक का पंजीकरण रहकरने की एक वैधानिक प्रक्रिया है।

पीठ ने कहा कि मौजूदा मामले में याचिकाकर्ता को न तो सनवाई का मौका दिया गया और न ही उसे निर्वासन/काली सुची में डालने के आधार के बारे में

जून 2024 में दंपती याचिकाकर्ता के माता-पिता से मिलने अमेरिका गए, लेकिन उसी साल अक्टूबर में भारत लौटने पर वैध ओसीआई कार्ड होने के बावजूद उन्हें देश में प्रवेश नहीं करने दिया

गया। उन्हें ओसीआई कार्ड के आधार पर आजीवन वीजा देदिया गया।

याचिकाकर्ता ने दलील दी कि न तो उन्हें कोई कारण बताया गया और नहीं उनके निर्वासन को स्पष्ट करने के लिए कोई आधिकारिक आदेश दिया गया।वहीं, केंद्र सरकार ने दलील दी कि याचिकाकर्ता सक्षम प्राधिकारी से विशेष अनमति प्राप्त किए बिना कई वर्षों से नागालैंड और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में मिशनरी गतिविधियों में शामिल था। ऐसे में उसे सुरक्षा एजेंसियों ने काली सुची में

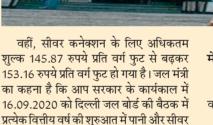
दिल्ली में पानी और सीवर कनेक्शन लेना हुआ महंगा, जल बोर्ड ने बढ़ाई फीस

इंफ्रास्ट्रक्चर शुल्क में वृद्धि की है। बढ़ोतरी 1 अप्रैल से लागू हो गई हैं। रिहायशी कॉलोनियों में पानी के कनेक्शन के लिए अधिकतम ढांचागत शुल्क २४३ .११ रुपये प्रति वर्ग फुट से बढ़कर 255.27 रुपये प्रति वर्ग फुट हो गया है। वहीं सीवर कनेक्शन के लिए अधिकतम शुल्क १४५ .८७ रुपये प्रति वर्ग फुट से बढ़कर १५३ .१६ रुपये प्रति वर्ग फुट हो गया है।

नई दिल्ली। दिल्ली में पानी और सीवर का कनेक्शन लेना महंगा हो गया है, क्योंकि दिल्ली जल बोर्ड ने इंफ्रास्ट्रक्चर शुल्क में बढ़ोतरी कर दी है। यह बढोतरी एक अप्रैल से लाग हो गई है। वहीं, जल मंत्री प्रवेश वर्मा का कहना है कि पिछली आप सरकार ने जो प्रावधान किया था, उसके मृताबिक हर वित्तीय वर्ष में इंफ्रास्ट्रक्चर शुल्क अपने आप बढ़ जाता है। इस प्रावधान में बदलाव किया

इन क्षेत्रों लागू होगा शुल्क

जल बोर्ड द्वारा की गई वृद्धि सभी श्रेणी की रिहायशी कॉलोनियों और व्यावसायिक क्षेत्रों पर लागू होगी। रिहायशी कॉलोनियों में पानी के कनेक्शन के लिए अधिकतम ढांचागत शुल्क 243.11 रुपये प्रति वर्ग फुट था। अब यह बढ़कर 255.27 रुपये प्रति वर्ग फुट हो गया है।



इसी के अनुरूप यह बढ़ोतरी की गई है। बोर्ड की अगली बैठक में यह प्रावधान समाप्त कर दिया

कनेक्शन के ढांचागत शुल्क में पांच फीसदी की

बढ़ोतरी करने का निर्णय लिया गया था।

पिछले दिनों जलदाय मंत्री ने जल बोर्ड के अधिकारियों के साथ बैठक में कहा था कि पानी के कनेक्शन की दरें अधिक होने के कारण अवैध कनेक्शन बढ़ रहे हैं। इसे ध्यान में रखते हुए कनेक्शन के लिए ली जाने वाली फीस की समीक्षा कर उसे कम किया जाएगा।

पानी कनेक्शन के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर शुल्क

ए, बी श्रेणी की कॉलोनी

संपत्ति पुरानी (प्रति वर्गफुट) नई (प्रति वर्गफुट) व्यवसायिक 425.43 446.70 243.11 303.88

ई, एफ, जी, एच श्रेणी कॉलोनी संपत्ति प्रानी (प्रति वर्गफुट) नई (प्रति वर्गफुट)

> आवासीय 60.77 91.16

जल संकट का समाधानः परंपरागत ज्ञान और आधुनिक तकनीक का संगम

जल संरक्षण एक सामहिक जिम्मेदारी है। पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीकों को मिलाकर जल संकट से बचा जा सकता है। भारत में जल संरक्षण का एक समृद्ध इतिहास रहा है। हमारे पूर्वजों ने भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों के अनुसार जल संरक्षण की अनेक प्रणालियाँ विकसित की थीं, जो आज भी प्रासंगिक हैं।

डॉo सत्यवान सौरभ

ल संकट आज की दुनिया के सबसे गंभीर मुद्दों में से एक है। बढ़ती जनसंख्या, अनियंत्रित औद्योगीकरण, और जलवायु परिवर्तन ने पानी की उपलब्धता पर गंभीर प्रभाव डाला है। इस संकट से निपटने के लिए हमें परंपरागत जल संरक्षण तकनीकों और आधुनिक विज्ञान व तकनीक के समन्वय की आवश्यकता है।जल संरक्षण का अर्थ है पानी के स्रोतों का समझदारी से प्रबंधन करना ताकि भविष्य में पानी की कमी न हो। भारत के पास दुनिया का केवल 4% मीठा पानी है, लेकिन इसकी 18% आबादी जल संकट से जूझ रही है। इस समस्या को हल करने के लिए सरकार और समुदायों की भागीदारी जरूरी है। आंध्र प्रदेश में जल शक्ति अभियान और नीरू-चेट्ट जैसी योजनाओं ने पानी की उपलब्धता बढ़ाने में मदद की है।

स्थानीय समुदाय अपने पारंपरिक ज्ञान और नए तकनीकी उपायों को अपनाकर पानी का बेहतर उपयोग कर सकते हैं। महाराष्ट्र का हिवरे बाजार मॉडलः इस गाँव में पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके भूजल स्तर बढ़ाया गया। वर्षा जल संचयन और कुओं की सफाई से यहाँ जल उपलब्धता बढ़ी। राजस्थान की जोहड़ प्रणाली: छोटे-छोटे तालाबों (जोहड़) के निर्माण से भूजल स्तर सुधरा और सूखे की समस्या कम हुई। उत्तराखंड की चाल-खाल प्रणालीः ये छोटे जलाशय वर्षा जल को संग्रहीत कर भूजल

पुनर्भरण में मदद करते हैं। पानी के कुशल उपयोग के लिए पारंपरिक तरीकों और नई तकनीकों को अपनाना जरूरी हैं। नागालैंड की जाबो कृषि पद्धतिः यह विधि बारिश के पानी को इकट्ठा कर खेती के लिए उपयोग करती है, जिससे सूखे की मार कम होती है। राजस्थान के टांके वर्षा जल संग्रहण के लिए बनाए गए छोटे जल भंडार हैं. जिनमें अब आधुनिक निस्पंदन

तकनीक भी जोड़ी जा रही है। तमिलनाड में एरियों (तालाब) प्रणालीः यह प्रणाली वर्षा जल को संग्रहित कर सिंचाई और पेयजल आपूर्ति में मदद करती है।

जल संरक्षण के लिए जंगल, नदी, तालाब और मिट्टी को संतुलित बनाए रखना जरूरी है। राजस्थान में ओरण (पवित्र वन) क्षेत्रों में जल स्रोतों और जैव विविधता की सुरक्षा होती है, जिससे मरुस्थलीकरण को रोका जाता है। मेघालय की झरना पुनरुद्धार परियोजना के तहत वनों और जलग्रहण क्षेत्रों को पुनर्जीवित किया जा रहा है, जिससे जल स्रोत संरक्षित हो रहे हैं। मध्य प्रदेश में नर्मदा सेवा यात्रा पहल का उद्देश्य नर्मदा नदी के किनारे पेड़ लगाकर जल संरक्षण और पर्यावरण सुधार को बढ़ावा देना है। महाराष्ट्र की पानी पंचायतें और झारखंड की ग्राम सभाएँ जल संसाधनों के न्यायसंगत उपयोग को सुनिश्चित कर रही हैं।

जलवायु परिवर्तन और अनियमित बारिश जल संकट को बढ़ा सकते हैं। ऐसे में परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियाँ मददगार साबित हो सकती हैं। बुंदेलखंड में सूखा राहत कार्यः तालाबों के पुनर्निर्माण और वर्षा जल संचयन से इस क्षेत्र में पानी की समस्या कम हो रही है। लद्दाख में सर्दियों में कृत्रिम हिमनद बनाए जाते हैं, ताकि गर्मियों में इनसे पानी मिलता रहे। हालांकि, बढ़ते तापमान से यह विधि चुनौतियों का सामना कर रही है। गजरात में वाडी प्रणाली में जल संरक्षण के लिए टपक सिंचाई और बहुफसलीय खेती



अपनाई जाती है। जलवायु परिवर्तन, औद्योगिक प्रदूषण, असमान जल वितरण और सरकारी योजनाओं में पारंपरिक प्रणालियों की अनदेखी प्रमख बाधाएँ हैं। समदायों को जल संसाधनों के प्रबंधन में

अधिकार मिलना चाहिए ताकि वे जल को संधारणीय रूप से उपयोग कर सकें। महाराष्ट्र की पानी पंचायतेंः इन पंचायतों के माध्यम से किसानों को पानी का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित किया जाता है। झारखंड में ग्राम सभा अधिनियम के तहत गाँव की सभाएँ छोटे जलाशयों का प्रबंधन कर रही हैं। ओडिशा में पाणी पंचायतः यह योजना सामुदायिक भागीदारी से जल प्रबंधन को बढ़ावा देती है। शहरों को अधिक पानी दिया जाता है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में कमी हो जाती है। उदाहरण के लिए, चेन्नई के लिए आसपास के गाँवों से पानी लिया जाता है, जिससे किसानों को परेशानी होती है। हिमालय के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं जिससे गंगा जैसी नदियों का प्रवाह कम हो रहा है और जल संकट बढ़ रहा है।

पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियों को सरकारी योजनाओं में ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता। कई उद्योग अपशिष्ट जल को नदियों और तालाबों में छोड़ देते हैं, जिससे जल स्रोत दूषित हो जाते हैं।

परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियों को काननी दर्जा मिलना चाहिए। वैज्ञानिक संस्थानों, सरकारी एजेंसियों और स्थानीय

समदायों के बीच साझेदारी को मजबत करना चाहिए। IIT मद्रास ग्रामीण इलाकों में वर्षा जल संचयन के लिए तकनीकी सहायता दे रहा है। जल प्रबंधन योजनाओं में स्थानीय लोगों की भागीदारी बढ़ानी चाहिए। जल, जंगल और भूमि को एक साथ जोड़कर संरक्षण योजनाएँ बनानी चाहिए। आधनिक तकनीकों और पारंपरिक ज्ञान को मिलाकर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने की रणनीति बनाई जानी चाहिए। शहरी जल पुनर्चक्रणः शहरों में अपशिष्ट जल को पुनः उपयोग में लाने की प्रणाली विकसित करनी

जल संरक्षण केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि इसमें समदायों की भागीदारी भी बहुत जरूरी है। पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीक को मिलाकर जल संसाधनों का कुशल प्रबंधन किया जा सकता है। जल शक्ति अभियान और मनरेगा जैसी योजनाओं के साथ AI आधारित निगरानी प्रणाली को जोड़कर जल संरक्षण को और प्रभावी बनाया जा सकता है। इससे जल संकट से निपटने में मदद मिलेगी और भविष्य के लिए जल सुरक्षा सुनिश्चित होगी। कानूनी मान्यता, वैज्ञानिक सहयोग, स्थानीय भागीदारी, जल पुनर्चक्रण और जलवायु अनुकूलन उपायों को अपनाकर जल संरक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है।

जल संकट से निपटने के लिए हमें अतीत की सीख और भविष्य की तकनीकों के बीच संतुलन बनाना होगा। परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियाँ हमें स्थिरता और स्थानीय अनुकूलन का ज्ञान देती हैं, जबकि आधुनिक तकनीकें जल संसाधनों के कुशल प्रबंधन में सहायता कर सकती हैं। यदि हम दोनों का संगम करके कार्य करें, तो जल संकट का स्थायी समाधान प्राप्त किया जा सकता है।

"बुँद-बुँद से घड़ा भरता है" – जल संरक्षण की दिशा में एक छोटा प्रयास भी भविष्य में बड़ा बदलाव ला सकता है।

ईद एवं नवरात्रि के अवसर पर जियो जागो फाउंडेशन द्वारा निशुल्क सैनिटरी नैपकिन का वितरण



स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली।ईद के मुकद्दस मौके तथा नवरात्रि के शुभ अवसर पर महिलाओं के स्वास्थ्य और स्वच्छता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जीयो जागो फाउंडेशन ने शिव पार्क, अंबेडकर नगर में निःशुल्क सेनेटरी नैपकिन वितरण अभियान का आयोजन किया।इस पहल के तहत, फाउंडेशन ने जरूरतमंद महिलाओं और किशोरियों को सेनेटरी नैपकिन वितरित किए और मासिक धर्म स्वच्छता के महत्व पर जागरूकता फैलाई। कार्यक्रम में नारी शक्ति नमोस्तुते पहल के तहत महिलाओं को सशक्त बनाने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का संदेश दिया गया।जीयो जागो फाउंडेशन की इस पहल का उद्देश्य महिलाओं को मासिक धर्म से जुड़ी झिझक और स्वास्थ्य समस्याओं से

मुक्त कर, उन्हें जागरूक और आत्मनिर्भर बनाना है।फाउंडेशन के फाउंडर श्री धर्मवीर प्रभाकर ने समाज के सभी वर्गों से अपील की कि वे महिलाओं के स्वास्थ्य और स्वच्छता को प्राथमिकता दें और इस अभियान का हिस्सा बनें। जियो जागो फाउंडेशन हमेशा अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करती रही है। इसके तहत विभिन्न तरह के सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन कर कमजोर वर्ग की सहायता एवं उन्हें जागरूक बनाने का काम फाउंडेशन द्वारा किया जाता है। यही कारण है कि आज यह फाउंडेशन जन जन की जुबान पर है और लोग मुक्त कंठ से इसके कार्यों की प्रशंसा कर रहे हैं। संस्था के फाउंडर धर्मवीर प्रभाकर एक ख्याति प्राप्त समाजसेवी है। जिन्होंने सेवा के बदौलत अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

मू-जल प्रबंधन,कुशल सिंचाई प्रबंधन व वर्षा जल संचयन आवश्यक है

ज ल मनुष्य ही नहीं इस धरती के समस्त प्राणियों व वनस्पतियों की मूलभूत आवश्यकता है। जल बिना जीवन संभव नहीं है। वास्तव में, पंचतत्व जीवन के लिए आधार माने गए हैं। उसमें से एक तत्व जल भी है। एक शोध के मताबिक आज जिस रफ्तार से जंगल खत्म हो रहे हैं उससे तीन गुना अधिक रफ्तार से जल के स्रोत सूख रहे हैं। नीति आयोग के 'समग्र जल प्रबंधन सूचकांक (कंपोजिट वाटर मैनेजमेंट इंडेक्स)' की माने तो भारत के लगभग 600 मिलियन से अधिक लोग गंभीर जल संकट का सामना कर रहे हैं। रिपोर्ट में इस बात का भी अंदेशा जताया गया है कि साल 2030 तक भारत में पानी की मांग उपलब्ध आपूर्ति की तुलना में दोगुनी हो जाएगी। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' के 120वें एपिसोड के जरिए देश की आम जनता से रूबरू हुए। गौरतलब है कि'मन की बात' में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने समर वेकेशन और जल संचय को लेकर खास संदेश दिया है।उन्होंने 'मन की बात' के दौरान देशवासियों को 'जल संरक्षण' का महत्वपूर्ण संदेश दिया है। पाठकों को बताता चलूं कि पीएम मोदी ने कहा, 'गर्मी के मौसम में पानी बचाने का अभियान भी शुरू हो जाता है। विभिन्न जगहों पर वाटर हॉर्वेस्टिंग का काम शुरू हो गया है। इसके लिए अलग-अलग संस्थाएं काम करती हैं। इस बार भी 'कैच द रेन अभियान'(वर्षा जल संचयन) के लिए कमर कस ली गई है। ये अभियान सरकार का नहीं बल्कि जनता का अभियान है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहुंगा कि 22 मार्च 2021 को विश्व जल

दिवस के अवसर पर 'जल शक्ति अभियानः कैच-द-रेन' को प्रारंभ किया गया था। यह अभियान 22 मार्च से 30 नवंबर 2021 (मानसून पूर्व एवं मानसून अवधि) तक ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में चलाया गया था तथा इस अभियान का उद्देश्य जल संरक्षण एवं जल संचयन संरचनाओं का निर्माण करना तथा जागरूकता फैलाना है, ताकि वर्षा जल का उचित भण्डारण किया जा सके ।अब प्रधानमंत्री जी ने पुनः इसकी बात की है, जो जल संरक्षण में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यह बात कही है कि 'प्रयास यही है कि जो प्राकृतिक संसाधन हमें मिले हैं, उन्हें अगली पीढ़ी तक हमें पहुंचाना है। इस अभियान के तहत पिछले कुछ सालों में देश के कई हिस्सों में जल संरक्षण के कई दिलचस्प काम हुए हैं।' उन्होंने कहा कि 'पिछले 7-8 साल में नए बने टैंक, तालाब और अन्य 'वाटर रिचार्ज स्ट्रक्चर'(जल पुनर्भरण संरचना) से 11 बिलियन(1100 करोड़) क्यूबिक मीटर से भी ज्यादा पानी का संरक्षण हुआ है।' बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में जल संरक्षण पर जोर देकर देश की जनता को सही समय पर एक सही संदेश देने का काम किया है। वास्तव में, पिछले सात-आठ वर्षों में जल संरक्षण के विभिन्न उपायों के जरिये 1100 करोड़ क्युबिक मीटर पानी बचाने में सफलता मिली, यह बात देश की आम जनता को कहीं न कहीं जल संरक्षण के प्रति उत्साहित व प्रेरित करेगी। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज जल संरक्षण बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्यों कि बढ़ती आबादी व बढ़ते औधोगिकीकरण

www.newsparivahan.com

की जरूरतों को तभी पूरा किया जा सकता है,जब हम जल की बूंद-बूंद बचायेंगे। हम अपने दैनिक जीवन में छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखकर भरपूर मात्रा में जल संरक्षण कर सकते हैं। मसलन हम केवल तभी फ्लश करें जब ऐसा करना जरूरी हो।नहाने की बजाय हमें जल्दी से शॉवर लेना चाहिए। वास्तव में.शॉवर या पाइप से नहाने की बजाय बाल्टी से स्नान करना चाहिए।हमें यह चाहिए कि जब भी हम ब्रश व दाढी (शेव) करें तब नल को बंद कर दें।अपशिष्ट जल को सिंक में फेंकने के बजाय, उसे बचाकर रखा जा सकता है और अन्य कामों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।टपकता नल, बहता शौचालय या टपकता पाइप भारी मात्रा में पानी की बर्बादी के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। इसलिए हर लीकेज को ठीक रखें। पानी को कभी भी बहता हुआ नहीं छोड़ा जाना चाहिए। वर्षा जल संचयन बहुत ही महत्वपूर्ण और जरूरी है।भूमिगत जल की रिचार्जिंग तथा व्यय को रोका जाना चाहिए।सर्बज़यों/फलों आदि को धोने के बाद बचा पानी बाग-बगीचे में डालना चाहिए। जल संरक्षण के लिए हमें स्मार्ट सिंचाई तकनीकों का इस्तेमाल करना चाहिए। मसलन, टपकन टैंक/डिप/सीप्रंकल सिंचाई के उपयोग से सिंचाई जल के संरक्षण को बढ़ावा दिया जा सकता है।फसल उगाने के तरीकों का प्रबंधन करके; जैसे कि कम जल क्षेत्रों में ऐसे पौधों का चयन करके जिनकी पैदावार के लिए कम पानी की जरूरत हो, काफी मात्रा में जल संरक्षण किया जा सकता है।कार को बाल्टी के पानी से धोना या कमर्शियल



फुटपाथ, और सीढियों को पानी से धोने के बजाय साफ़ करना चाहिए। कहना ग़लत नहीं होगा कि घरेलु स्तर पर जल का उचित व संयमित उपयोग एवं उद्योगों में पानी के चक्रीय उपयोग जल संरक्षण में सहायक हो सकते हैं।जल का सदुपयोग कैसे करना है, इस दिशा में जन-जागरूकता बढ़ायी जाने की आवश्यकता है।प्राचीन भारत में जल संरक्षण के लिए कई उपाय अपनाए जाते थे।इनमें जोहड़ ,बावलियां(बावड़ियां), कुएं, तटबंध, जलाशय, और जलग्रहण क्षेत्र शामिल हैं, इनका पुनरूद्धार किया जाना चाहिए। यह ठीक है कि आज सरकार व विभिन्न संस्थाएं जल संरक्षण के लिए नीतिगत स्तर पर उल्लेखनीय कार्य कर रहें हैं, लेकिन अभी भी इस दिशा में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज विभिन्न जल स्त्रोतों की समय-समय पर साफ-सफाई की जरूरत है।जल निकायों के जीर्णोद्धार और पुनरुद्धार,जल संरक्षण के लिए लोगों को प्रेरित करना,जल संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करना तथा जल संरक्षण के लिए लोगों को प्रेरित करना और जल संरक्षण के लिए

लोगों को जोड़ना बहुत ही महत्वपर्ण और जरूरी है। आज जरूरत इस बात की है कि विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं के साथ आम आदमी भी जल संरक्षण के लिए आगे आए और कृतसंकल्पित होकर कार्य करें। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के समय हमारे देश में पानी को बचाने के वैसे उपाय नहीं किए जा रहे हैं जैसे कि आवश्यक हैं। ऊपर जानकारी दे चुका हूं कि वर्षा जल संचयन करके हम जल संरक्षण में बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं। आज वर्षा ऋतु में बहुत सा जल बेकार चला जाता है। सरकार और समाज की यह कोशिश होनी चाहिए कि वर्षा जल का अधिकाधिक संग्रह किया जा सके, क्योंकि भारत उन देशों में प्रमुख है जहां जल संकट एक बड़ी समस्या के रूप में उभरकर सामने आ रहा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि भारत में जल संकट एक गंभीर समस्या है। वास्तव में इस जल संकट के कई कारण हैं, जैसे कि जलवायु परिवर्तन, भूजल दोहन, और जल निकायों का प्रदूषण ।इस समस्या से लाखों करोड़ों लोगों की ज़िंदगी और आजीविका दोनों समान रूप से

प्रभावित हो रही है ।यह अनुमान लगाया गया है कि भारत 2025 तक पानी की कमी वाला देश बन जाएगा, इसलिए जल संरक्षण आवश्यक है। जल धरती का एक असीमित नहीं बल्कि सीमित संसाधन है और इसका विवेकपूर्ण उपयोग जरूरी है।जल संरक्षण के प्रयासों को कितनी गंभीरता से लेने की आवश्यकता है, इसे इससे समझा जा सकता है कि भारत में दिनया की 17 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, जबकि उसके उपयोग के लिए उपलब्ध जल चार प्रतिशत से भी कम है। यह एक कट् व बड़ा सत्य है कि देश में अत्यधिक जल दोहन तथा अकुशल प्रबंधन के कारण भू-जल स्तर में निरंतर गिरावट आ रही है और इसके परिणामस्वरूप आने वाले समय में देश को गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ सकता है।नीति आयोग के अनुसार, वर्तमान में स्वच्छ जल की अपर्याप्त पहुँच के कारण लगभग 60 करोड़ भारतीय गंभीर जल संकट का सामना कर रहे हैं तथा इसके कारण प्रतिवर्ष लगभग 2 लाख लोगों की मृत्यु होती है।स्पष्ट है कि जल संरक्षण की चिंता पूरे वर्ष की जानी चाहिए। अंत में यही कहूंगा कि जल संरक्षण का काम केवल सरकार और उसकी एजेंसियों के भरोसे नहीं छोडा जा सकता। यह हम सबकी साझा व नैतिक जिम्मेदारी है और इसका निर्वहन इसी रूप में किया जाना चाहिए। वास्तव में भू-जल प्रबंधन, कशल सिंचाई प्रबंधन एवं वर्षा जल संचयन उपायों को अपनाकर भविष्य के जल संकट को कम किया जा सकता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

घिब्ली की दुनिया बनाम हकीकतः कला, रोजगार और मौलिकता का संघर्ष

रोजगार हमारी ज़रूरतों के लिए आवश्यक है, लेकिन कला और मनोरंजन मानसिक शांति और प्रेरणा का स्रोत बन सकते हैं। घिब्ली स्टाइल इमेजरी और एआई टूल्स सोशल मीडिया पर ट्रेंड कर रहे हैं, जिससे मौलिकता पर सवाल उठ रहे हैं। पहले जहां कलाकारों को महीनों मेहनत करनी पड़ती थी, अब एआई कुछ सेकंड में वैसा ही आर्ट तैयार कर देता है, जिससे असली कलाकारों को चनौती मिल रही है।

प्रियंका सौरभ

भिर हम हकीकत की दुनिया में देखें, तो रोजगार जरूरी है। बिना नौकरी या व्यवसाय के, सिर्फ घिब्ली की खूबसूरत दुनिया में खोकर पेट नहीं भरा जा सकता। लेकिन मानसिक शांति और प्रेरणा के लिए कला भी आवश्यक है। यही वजह है कि सोशल मीडिया पर घिब्ली स्टाइल की इमेज और वीडियो एक ट्रेंड बन चुके हैं। लोग पिनटेरेस्ट, इंस्टाग्राम और टिकटोक पर इसे देखकर टाइम पास कर रहे हैं, कुछ इसे खुद ट्राई कर रहे हैं, और एआई टूल्स की मदद से घिब्ली-स्टाइल की इमेज बना रहे हैं।

आजकल सोशल मीडिया पर घिब्ली स्टाइल इमेज और वीडियो बहुत लोकप्रिय हो गए हैं। एआई टूल्स की मदद से अब कोई भी बिना आर्टिस्कल्स के घिब्ली जैसी इमेज बना सकता है। लोग पिनटेरेस्ट और इंस्टाग्राम पर घिब्ली मूवी के सीन से बनी एस्थेटिक गिफ्स और वॉलपेपर शेयर कर रहे हैं। टिकटोक और रील्स मेंघिब्ली सीन के साथि रिलेटेबल ऑडियो या कोट्स लगाकर मजेदार कंटेंट बनाया जा रहा है। कुछ एआई टूल्स अब आपकी असली फोटो को भी घिब्ली स्टाइल में बदल सकते हैं, जिससे लोग अपनी तस्वीरों को फेयरीटेल लुक दे रहे हैं। यह ट्रंड सिर्फ मनोरंजन तक सीमित नहीं है. बल्कि यह एक बड़ी बहस को जन्म दे रहा है—क्या एआई जनरेटेड आर्ट असली कला की जगह ले सकती है?

एआई-जनरेटेड घिब्ली स्टाइल इमेजरी ने मौलिकता पर सवाल खडा कर दिया है। पहले कलाकारों को महीनों मेहनत करके घिब्ली जैसी पेंटिंग बनानी पड़ती थी, अब एआई कुछ सेकंड में वैसा ही कुछ तैयार कर देता है। लोग ख़ुद से नया सोचने के बजाय रेडीमेड आर्ट पर निर्भर हो रहे हैं। असली कलाकार अब एआई-जेनरेटेड कंटेंट से मुकाबला करने को मजबूर हैं। एआई और टेम्प्लेट्स के चलते ₹कछ हटकर₹ करने की सोच धीरे-धीरे खत्म हो रही है। अगर आर्ट को केवल एक ट्रेंड बना दिया गया, तो मौलिकता धीरे-धीरे खत्म हो जाएगी। इसका समाधान यह है कि लोग घिब्ली स्टाइल से प्रेरणा लेकर अपनी खुद की यूनिक कहानियाँ और आर्ट बनाएं, न कि बस इंटरनेट पर मौजूद चीजों को दोहराएँ। घिब्ली की आत्मा सिर्फ उसकी खुबसुरत विजुअल्स में नहीं, बल्कि उसकी गहरी कहानियों और भावनात्मक जुड़ाव में है।

अगर किसी को घिब्ली की दिनया इतनी पसंद है कि वह इसमें कुछ नया जोड़ना चाहता है, तो यह एक रोजगार का साधन भी बन सकता है। उदाहरण के लिए डिजिटल आर्टिस्ट घिब्ली-स्टाइल आर्टबनाकर पैसा कमा सकते हैं। मर्चेंडाइज़ बिज़नेस (पोस्टर, स्टिकर, कपड़े) से आय हो सकती है। YouTube और सोशल मीडिया पर घिब्ली स्टाइल कंटेंट क्रिएट करना एक करियर विकल्प हो सकता है। एनिमेशन इंडस्ट्री में घिब्ली से प्रेरित होकर ओरिजिनल शॉर्ट फिल्म्स और सीरीज़ बनाई जा सकती हैं। गेम डिजाइन और वीएफएक्स स्टूडियो में भी घिब्ली जैसी विजुअल स्टाइल को अपनाकर कैरियर बनाया जा सकता है। हालांकि, केवल घिब्ली की दिनया में खोए रहनानुकसानदायक हो सकता है। असली जिंदगी के कामटलते रहते हैं, और लोग प्रोडिक्टिवटी खो सकते हैं।अगर कोई सिर्फएनीमेशन देखने में उलझा रहता



है और अपने करियर पर ध्यान नहीं देता, तो यह एक समस्या बन सकती है।

घिब्ली की दुनिया आदर्श (Idealistic) होती है—जहाँ हर चीज खूबसूरत, शांत और जादुई होती है। लेकिन असली दुनिया संघर्ष, तनाव और कठिनाइयों से भरी होती है। अगर कोई हर समय घिब्ली जैसीजिंदगीढूंढे, तो असलीदुनिया बेरंगऔर कठिन लग सकती है। समय की बर्बादीः लोग घंटों तकघिब्ली मूवीज, पिनटेरेस्ट आर्ट, एआई-जनरेटेड इमेज और इंस्टाग्राम रील्स देखते रहते हैं।यह ₹टाइम पास₹ कब ₹टाइम वेस्ट₹ में बदल जाता है, पता भी नहीं चलता। अगर कोई सिर्फ एनीमेशन देखने में उलझा रहता है, लेकिन उसे अपने करियर पर ध्यान देना चाहिए, तो यह नुकसानदेह हो सकता है।

अगर कोई हर समयघिब्ली जैसी जिंदगी ढूंढे, तो असली दुनिया बेरंग और कठिन लग सकती है। कुछ लोग इस वजह से प्रेरणा और महत्वाकांक्षा (Ambition) भी खो सकते हैं। घिब्ली स्टाइल इतना लोकप्रिय हो गया है कि कई कलाकार अपनी खुद की स्टाइल डिवेलप करने के बजाय सिर्फ घिब्ली-स्टाइल आर्ट कॉपी कर रहे हैं। घिब्ली स्टाइल एन्जॉय करें, लेकिन उसमें खोन जाएँ। अगर आपको आर्ट पसंद है, तो इसे एक स्किल में बदलें, जिससे आप कमाई कर सकें। अपने करियर और लाइफ गोल्सकोइग्नोर नकरें—काम जरूरी है, कलासिर्फ सुकून के लिए है। मौलिकता बनाए रखें—घिब्ली से प्रेरित हों, लेकिन अपनी खुद की यूनिक स्टाइल डेवलप करें। टाइम मैनेजमेंट करें—आर्ट और मनोरंजन का आनंद लें, लेकिन काम और जिम्मेदारियों को नजरअंदाज नकरें।

घिब्ली का जादू खूबसूरत है, लेकिन अगर यह हमारी असली जिंदगी को प्रभावित करने लगे, तो नुकसान हो सकता है। बैलेंस बनाना जरूरी है— कला और करियर, कल्पना और हकीकत के बीच! घिब्ली-प्रेरित कला को करियर में बदला जा सकता है—डिजिटल आर्ट, मचेंडाइज, यू ट्यूब कंटेंट और एनिमेशन इंडस्ट्री में इसका उपयोग हो सकता है। लेकिन सिर्फ घिब्ली की दुनिया में खो जाना नुकसानदेह हो सकता है—यह समय की बर्बादी, करियर पर असर, असली दुनिया सेडिस्कनेक्ट और मौलिकता की कमी ला सकता है।

समाधानयह है कि घिब्ली की प्रेरणा से कुछ नया और मौलिक बनाया जाए, निक केवल कॉपी किया जाए। कला और रोजगार के बीच संतुलन बनाए रखना जरूरी हैताकि हम जीवन के दोनों पहलुओं का पूरा लाभ उठा सकें।

समस्त रोगों की जड़ है रात्रि भोजन

सी भी चिड़िया को डायबिटीज नहीं होती। किसी प्रीभी बन्दर को हार्ट अटैक नहीं आता कोई भी जानवर न तो आयोडीन नमक खाता है और न ब्रश करता है फिर भी किसी को थायराइड नहीं होता और न दांत खराब होता है। बन्दर शरीर संरचना में मनुष्य के सबसे नजदीक है बस बंदर और आप में यही फर्क है कि बंदर के पुँछ है आप के नहीं है बाकी सब कुछ समान है तो फिर बंदर को कभी भी हार्ट अटैक, डायबिटीज, उच्च रक्तचाप क्यों नहीं होता है ? एक पुरानी कहावत है बंदर कभी बीमार नहीं होता और यदि बीमार होगा तो जिंदा नहीं बचेगा मर जाएगा या बंदर बीमार क्यों नहीं होता ? हमारे एक मित्र बताते हैं कि एक बहुत बड़े प्रोफेसर हैं, मेडिकल कॉलेज में काम करते हैं। उन्होंने एक बड़ा गहरा रिसर्च किया कि बंदर को बीमार बनाओ तो उन्होने तरह - तरह के वायरस और वैक्टीरिया बंदर के शरीर में डालना शुरू किया, कभी इंजेक्शन के माध्यम से कभी किसी और माध्यम से, वो कहते है, मैं 15 साल असफल रहा लेकिन बंदर को कुछ नहीं हुआ। मित्र ने प्रोफेसर से कहा कि आप यह कैसे कह सकते है कि बंदर को कुछ नहीं हो सकता ? तब उन्होंने एक दिन यह रहस्य की बात बताई वो आपको भी बता देता हूँ कि बंदर का जो आर.एच. फैक्टर है वह सबसे आदर्श है। कोई डॉक्टर जब आपका आर.एच. फैक्टर नापता है, तो वह बंदर के ही आर.एच. फैक्टर से तुलना करता है, वह डॉक्टर आपको बताता नहीं यह अलग बात है उसका कारण यह है कि, उसे कोई बीमारी आ ही नहीं सकती, उसके ब्लड में कभी कॉलेस्टेरॉल नहीं बढ़ता, कभी ट्रायग्लेसराइड नहीं बढ़ती, न ही उसे कभी डायबिटीज होती है। शगर को कितनी भी बाहर से उसके शरीर में इंट्रोडयूस करो, वो टिकती नहीं तो वह प्रोफेसर साहब कहते हैं कि यही चक्कर है कि बंदर सबेरे सबेरे ही भरपेट खाता है। जो आदमी नहीं खा पाता है, इसीलिए उसको सारी बीमारियां होती है ।

सूर्य निकलते ही सारी चिड़िया, सारे जानवर खाना खाते हैं जब से मनुष्य इस ब्रेकफास्ट, लंच, डिनर के चक्कर में फंसा तबसे मनुष्य ज्यादा बीमार रहने लगा है। प्रोफेसर रवींदनाथ शानवाग ने अपने सभी मरींजों से कहा



कि सुबह सुबह भरपेट खाओ उनके मरीज बताते है कि, जबसे उन्होंने सुबह भरपेट खाना शुरू किया तबसे उन्हें डायबिटीज यानि शुगर कम हो गयी, किसी का कॉलेस्टेरॉल कम हो गया, किसी के घुटनों का दर्द कम हो गया, किसी का कमर का दर्द कम हो गया गैस बनाना बंद हो गई, पेट मे जलन होना बंद हो गया, नींद अच्छी आने लगी.. वगैरह ..वगैरह ।

और यह बात बागभट्ट जी ने 3500 साल पहले कहा, कि सुबह का किया हुआ भोजन सबसे अच्छा है सुबह सुरज निकलने से ढाई घंटे तक यानि 9.30 बजे तक, ज्यादाँ से ज्यादा 10 बजे तक आपका भरपेट भोजन हो जाना चाहिए और यह भोजन तभी होगा जब आप नाश्ता बंद करेंगे। यह नाश्ता का प्रचलन हिंदुस्तानी नहीं है, यह अंग्रेजो की देन है और रात्रि का भोजन सूर्य अस्त होने से आधा घंटा पहले कर लें तभी बीमारियों से बचेंगे। सबह सर्य निकलने से ढाई घंटे तक हमारी जठराग्नि बहुत तीव्र होती है । हमारी जठराग्नि का सम्बन्ध सुर्य से है। हमारी जठराग्नि सबसे अधिक तीव्र स्नान के बाद होती है। स्नान के बाद पित्त बढता है, इसलिए सबह स्नान करके भोजन कर लें तथा एक भोजन से दसरे भोजन के बीच ४ से ८ घंटे का अंतराल रखें बीच में कुछ न खाएं और दिन ड्रबने के बाद बिल्कुल न खायें। चूंकि यह पक्षियों और जंगली जानवरों की दिनचर्या में सम्मिलित है, अतः वे अमुमन बीमार नहीं होते।।

स्वस्थरहे,स्वस्थरखे

डोनाल्ड ट्रंप का बड़ा इशारा- तीसरी बार राष्ट्रपति बनने से रोकने वाले कानून की ख़ोज ली क़ाट-बदल देंगे यूएसए का संविधान ?

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट

म भारतीय पीढ़ीयों से अपने बड़े बुजुर्गों से सुनते आ रहे हैं कि किसी समय पृथ्वी पर सतयुग का क़ाल था,जब

ईमानदारी, निस्वार्थपना, अपनापन जिम्मेदारी जवाबदारी सभी गुण भरपूर मात्रा में थे तथा भ्रष्टाचार का नामो निशान नहीं था,दूसरों के लिए जीना ही मकसद था परंतु आज घोर कलयुग आ गया है उपरोक्त सभी गुण विलुप्त से हो गए हैं। भले ही मैक्सिमम लेवल पर ही सही यह गुण वैश्विक स्तरपर गुम से हो गए हैं।आज हम देख रहे हैं कि निजी हो या प्रशासकीय, प्रशासनिक लेवल पर अपने फायदे के लिए ही सब कुछ सोचा व किया जा रहा है, अपने व्यक्तिगत या पारिवारिक फायदे के लिए अपनी मान्यताएं प्रथाएं नियम सब बदल दिए जाते हैं, शासन प्रशासन स्तरपर भी अपने फायदे के लिए आदेश, अध्यादेश निकाल लिए जाते है,संविधान संशोधन कर दिया जाता, सप्रीम कोर्ट के जजमेंट को अध्यादेशों के माध्यम से पलट दिया जाता है, कानून नियमों विनियमों को संशोधन कर दिया जाता है। हालांकि उसमें जनता का फायदा भी हो सकता है परंतु पर्दे के पीछे मकसद कुछ और ही रहता है, इन अध्यादेशों संविधान संशोधनों के अनेक उदाहरण हम वैश्विक स्तरपर देख सकते हैं इजरायल पाकिस्तान इत्यादि देशों में न्यायिक संशोधन, भारत में दिल्ली कानून अध्यादेश, जिसने सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को पालटा था। आज हम यह चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 30 मार्च 2025 को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक इंटरव्यू में इशारा दिया कि

वह अपने तीसरे कार्यकाल की योजना बना रहे हैं, जिसके लिए अमेरिकी संविधान में संशोधन किया जा सकता है बता दें अमेरिका में कानून है कि कोई भी व्यक्ति दो बार से अधिक राष्ट्रपित नहीं बन सकता, चाहे वह क्रम से हो या अलग-अलग अविध में राष्ट्रपित बना हो, यह नियम संविधान संशोधन के द्वारा बदला जा सकता है।चूँकि दुनियाँ के हर देश मे कानूनों व संविधानों की कुछ किमयों रूपी लिकेजेस का लाभ उठाने का प्रचलन बड़ा है इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, डोनाल्ड ट्रंप का बड़ा इशारा, तीसरी बार राष्ट्रपित बनने से रोकने वाले कानून की खोज ली काट, बदल देंगे यूएसए का संविधान?

साथियों बात अगर हम ट्रंप के तीसरे कार्यकाल के लिए अमेरिकी संविधान बदलने के बयान की करें तो, उन्होंने एनबीसी न्यूज चैनल को दिए इंटरव्यू में कहा कि वह राष्ट्रपति के तौर पर तीसरे कार्यकाल के लिए विचार कर रहे हैं और इसके लिए संविधान को बदलने की सोच रहे हैं। उन्होंने कहा कि संविधान में तीसरी बार राष्ट्रपति बनने के तरीके मौजूद हैं और वह इसे लेकर गंभीर हैं,इस दौरान ट्रंप से पूछा गया कि वह कौन से तरीके हैं ? इस पर ट्रंप ने कहा कि ऐसे कई तरीके हैं, जिनसे आप ऐसा कर सकते हैं, यह पूछने पर कि क्या जेडी वेंस राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ेंगे और इलेक्शन जीतने के बाद वे ट्रंप को राष्ट्रपति की कुर्सी सौंप देंगे? ट्रंप ने इस पर झट से कहा कि ये भी एक कारगर तरीका है लेकिन इसके अलावा भी कई और तरीके हैं, इंटरव्यू में अमेरिकी राष्ट्रपति से जब उनके तीसरे कार्यकाल के पिछले इशारों के बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने जवाब देते हुए कहा कि वह मजाक नहीं कर रहे थे। इसके लिए कुछ तरीके भी हैं, जिससे यह किया जा सकता है। डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, बहुत से लोग चाहते हैं कि मैं ऐसा करूं लेकिन मेरा मतलब है, मैं मूल रूप से उनसे कहता हूं कि हमें अभी लंबा रास्ता तय करना है, आप जॉनते हैं, प्रशासन में यह बहुत शुरुआती दौर है। बता दें कि अगर ट्रंप तीसरी बार राष्ट्रपति बनने की कोशिश करते हैं तो इसके लिए उन्हें संविधान में संशोधन करना होगा, ऐसा करने के लिए अमेरिकी संसद और राज्यों से समर्थन की जरूरत होगी।ट्रंप को इसके लिए अमेरिकी सीनेट और प्रतिनिधि सभा में दो-तिहाई बहुमत से बिल पास कराना होगा। ट्रंप का मौजुदा कार्यकाल 2029 में पुरा होगा। अमेरिका में दो बार राष्ट्रपति बनने का प्रावधान है। वह नवंबर 2024 में दूसरी बार देश के राष्ट्रपति चुने गए थे। ट्रंप कई मौकों पर तीसरे कार्यकाल के लिए चुनाव लड़ने की बात कह चुके हैं, नवंबर में चुनाव जीतने के बाद और फिर जनवरी में शपथ से पहले भी वह यही बात कह चुके हैं। इस बीच जनवरी में ही ट्रंप की रिपब्लिकन पार्टी के एक सांसद ने एक बिल भी संसद में पेश किया था, ट्रंप को तीसरी बार राष्ट्रपति बनने की अनुमति देने के लिए संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा में इस बिल को पेश किया गया था।इस बिल में कहा गया था कि अगर कोई शख्स लगातार दो बार राष्ट्रपति रह चुका है, वो तीसरी बार राष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित नहीं हो सकता, लेकिन ट्रंप 2020 का चुनाव बाइडेन से हार गए थे, ऐसे में वह तीसरी बार भी राष्ट्रपति चुने जाने के लिए योग्य हैं। अब तक का सबसे स्पष्ट संकेत है कि ट्रंप संवैधानिक बाधाओं को पार करने के तरीके भी तलाश सकते हैं।1951 में जोड़े गए संविधान के 22 वें संशोधन के

तहत, अमेरिका में कोई भी व्यक्ति दो बार से ज्यादा राष्ट्रपति नहीं चुना जा सकता। ऐसे में ट्रंप का यह बयान कानूनी रूप से संदेहास्पद माना जा रहा है और विशेषज्ञों के अनुसार, इस पर अमल कर पाना लगभग असंभव होगा।

साथियों बात अगर हम राष्ट्रपति बनने के अमेरिकी संविधान में नियमों की करें तो, अमेरिकी में दो बार ही बन सकते हैं राष्ट्रपति अमेरिकी संविधान के 22 वें संशोधन के अनुसार, अमेरिकी राष्ट्रपति का कार्यकाल केवल दो बार तक ही सीमित है और यह चार साल के लिए होता है, चाहे वह लगातार हो या नहीं। किसी संवैधानिक संशोधन को पलटने के प्रस्ताव के लिए कांग्रेस के दोनों सदनों में दो-तिहाई मत व 50 अमेरिकी राज्यों में से तीन-चौथाई राज्यों की विधान सभाओं द्वारा समर्थन की जरूरत होती है। 22 वें संशोधन के पारित होने के बाद किसी भी अमेरिकी राष्ट्रपति ने तीसरा कार्यकाल पाने की कोशिश नहीं की है। पहले यह परंपरा नहीं होती थी। दो कार्यकाल के राष्ट्रपति पद की परंपरा साल 1796 से चली आ रही है, जब जॉर्ज वाशिंगटन ने दो कार्यकाल के बाद अपनी इच्छा से पद छोड़ दिया। इसके बाद एक नई मिसाल कायम हुई। इसका पालन 140 सालों से ज्यादा तक हुआ। नॉर्थईस्टर्न युनिवर्सिटी के संवैधानिक कानून विशेषज्ञ का कहना है कि कोई कानूनी आधार नहीं है जिससे ट्रंप तीसरी बार राष्ट्रपति बन सकें,वहीं एक यूनिवर्सिटी के चुनाव कानून प्रोफेसर मुलर ने कहा कि 12 वें संशोधन के तहत, अगर कोई व्यक्ति राष्ट्रपति पद के लिए अयोग्य है, तो वह उपराष्ट्रपति भी नहीं बन सकता। मुलर ने यह भी कहा,राष्ट्रपति पद के कार्यकाल की सीमा पार करने के लिए कोई एक जादुई तरीका नहीं

है। ट्रंप ने दावा किया कि वे अमेरिका में अब तक के सबसे लोकप्रिय रिपब्लिकन नेता हैं।हालांकि, गैलप पोल के आंकड़ों के अनुसार, 9/11 के बाद जॉर्ज डब्ल्यू. बुश की लोकप्रियता 90 पेसेंट तक पहुंच गई थी, जो ट्रंप के दावे को गलत साबित करता है।हालांकि ट्रंप ने साफ कर दिया है कि अभी इस पर विचारकरना बहुत जल्दी होगा लेकिन उनके बयान ने राजनीतिक और कानूनी हलकों में हलचल मचा दी है बताते चलें कि ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल के अंत में 82 वर्ष के होंगे। ऐसे में उनसे पूछा गया कि क्या वह उस समय देश के सबसे कठिन काम में सेवा जारी रखना चाहेंगे, तो उन्होंने कहा, खैर, मुझे काम करना

पसंद है। साथियों बात अगर हम उत्तराधिकार के एंगल से तीसरी बार राष्ट्रपति बनने के लिए पॉलिसी करें तो, ट्रंप के तीसरी बार राष्ट्रपति बनने की बात इसलिए भी सामने आई है क्योंकि अमेरिकी संविधान में एकऐसा लुप होलहैजिसकी वजह से यह संभव हो सकता है। दरअसल, 22 वें संशोधन के मुताबिक अमेरिका का राष्ट्र पति दो बार से ज्यादा बार नहीं चुना जा सकता है, लेकिन वे उत्तराधिकार की प्रक्रिया के माध्यम से फिर से इस भूमिका को निभा सकते हैं।उत्तराधिकार की प्रक्रिया कैसे काम करती है इसे एक प्रक्रिया के जरिए समझा जा सकता है। दरअसल, अमेरिकी संविधान के 22 वें संशोधन के अनुसार, दो बार चुना जा चुका राष्ट्रपति तीसरी उत्तराधिकार के रूप में यह दायित्व निभा सकता है।अगर ट्रंप दूसरे कार्यकाल की समाप्ति के बाद उपराष्ट्रपति का चुनाव लड़ते हैं और उनका साथी जीतने के बाद राष्ट्रपति के

पद से इस्तीफा दे देता है तो वह तीसरी बार उत्तराधिकारी के रूप में राष्ट्रपति की भूमिका को निभा सकते हैं।डेलीमेल की रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्रपति ट्रंप अगर इस रणनीति का पालन करते हैं तो वे 2029 के बाद और संभावित रूप से 2037 तक व्हाइट हाउस में काम करना जारी रख सकते हैं। ट्रंप के तीसरी बार राष्ट्रपति बनने को लेकर मुख्य तौर पर रणनीति इस तरह से हो सकती है कि ट्रंप 2028 में जेडी वेंस सरीखे अपने किसी भरोसेमंद साथी को राष्ट्रपति का चुनाव लडवाते हैं और वेंस चुनाव जीतने के बाद इस्तीफा दे देते हैं तो ट्रंप आगामी कार्यकाल के लिए राष्ट्र पति बने रह सकते हैं। यह एक ऐसी रणनीति है जो दो बार से अधिक राष्ट्रपति के रूप में चुने जाने परसंवैधानिक प्रतिबंध का उल्लंघन नहीं करेगी। ट्रम्प 2032 में इस प्रक्रिया को दोहरा सकते हैं, और यदि वे चुनाव से पहले इस्तीफा देते हैं, तो वे फिर से उप-राष्ट्रपति के रूप में चुनाव लड़ सकते हैं और उत्तराधिकार की उसी प्रक्रिया का उपयोग करके अपने राष्ट्रपति पद को पुनः प्राप्त कर

सकते हैं।
अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का
अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे
कि डोनाल्ड ट्रंप का बड़ा इशारा- तीसरी बार
राष्ट्रपति बनने से रोकने वाले कानून की ख़ोज ली
काट-बदल देंगे यूएसए का संविधान ?दुनियाँ के
हर देश के कानूनों, संविधानों की कुछ ख़ामियों
रूपी लिकेजेस का लाभ उठाने का प्रचलन
बढ़ा ।वैश्विक स्तरपर सरकारों द्वारा अपना हित
साधने, अध्यादेश संविधान संशोधन ग़जट में
अधिसूचना इत्यादि बैसाखियोंविशेषाधिकारों का
उपयोग करने का प्रचलन बढ़ा।

सिट्रोएन बेसाल्ट का जल्द लॉन्च होगा डार्क एडिशन सी३ और एयरक्रॉस को भी मिलेगा स्पेशल एडिशन

सिट्रोएन ने हाल ही में Basalt के Dark Edition का पहला टीजर जारी किया था। अब कंपनी ने इसकी दूसरी झलक दिखाई है। इस टीजर में इसके एक्सटीरियर और इंटीरियर दोनों की हल्की झलक देखने के लिए मिली है। इतना ही नहीं इस टीजर के साथ भी साफ हो गया है कि C3 और Aircross को भी यह स्पेशल एडिशन मिल सकता है।

नईदिल्ली।सिट्रोएन अपनी Basalt का Dark Edition लेकर आने वाली है। कंपनी ने इसे लॉन्च करने से पहले इसकी दूसरी झलक दिखाई है, जिससे अब यह पक्का हो गया है कि C3 और Aircross को भी यह स्पेशल एडिशन मिलेगा। Citroen के यह पहले मॉडल होंगे, जो Dark Edition में आने वाली है। हाल ही में कंपनी ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर एक नया टीज़र वीडियो पोस्ट किया, जिसमें इनके एक्सटीरियर और इंटीरियर की झलक दिखाई गई

क्या होगा इसमें खास?

सिट्रोएन के Basalt, C3 और Aircross Dark Edition के एक्सटीरियर और इंटीरियर की झलक दिखाई गई है। इसके C3 की गिल grille को और Aircross के डयल-टोन अलॉय व्हील्स देखने के लिए मिले हैं। Aircross SUV की स्पेशलिटी ड्यूल-टोन अलॉय व्हील्स है, जो इसे स्पोर्टी और प्रीमियम लुक देते हैं।

इसके अलावा, इनके इंटीरियर में रेड स्टिचिंग के साथ ब्लैक सीट्स देखने के लिए मिली है। इनपर Citroen का रेड एम्बॉसिंग भी दिखाई दिया है, जो इन Dark Editions को सामान्य वेरिएंट्स से दिखाता है।



सुविधाएं और सुरक्षा

अभी तक इन तीनों मॉडल्स के फीचर्स और सेफ्टी सूट के बारे में पूरी जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन उम्मीद किया जा रहा है कि Dark Edition को हाई-स्पेक ट्रिम्स पर आधारित किया जा सकता है।

Dark Edition में मिलने वाले फीचर्स के बारे में बात करें तो इसमें 10.2 इंच का टचस्क्रीन, 7 इंच का डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, ऑटो-एसी, इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल ORVMs और रिमोट कीलेस एंट्री जैसी सुविधाएं मिल सकती है।

इसमें लोगों की सेफ्टी के लिए 6 एयरबैग्स. रियर व्यू कैमरा और सेंसर्स, ABS with EBD, टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS) और हिल होल्ड असिस्ट जैसे फीचर्स देखने के लिए मिल सकते हैं।

पावरट्रेन और इंजन

Citroen के Basalt, C3 और Aircross Dark Edition के फीचर्स की तरह ही इसके पावरट्रेन के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन यह एक कॉस्मेटिक अपडेट होने वाला है। इसलिए उम्मीद की जा रही है कि इन तीनों के इंजन ऑप्शन में कोई बदलाव नहीं हो सकता है। इन तीनों कारों में समान इंजन देखने के लिए मिल सकता है। कीमत और प्रतिद्वंदी

Citroen के Basalt, C3 और Aircross Dark Edition की कीमत बाकी वेरिएंट की तुलना में ज्यादा हो सकती है। भारतीय बाजार में Basalt का मुकाबला Tata Curvv से, तो C3 का मुकाबला Maruti Wagon R और Tata Tiago, जबिक Aircross का Hyundai Creta, Maruti Grand Vitara और Toyota Hyryder से देखने के लिए मिलता है।

बीवाईडी ने हैदराबाद में ईवी मैन्युफैक्चरिंग प्लांट की खबरों को नकारा, निवेश रिपोर्ट को 'असत्य' बताया

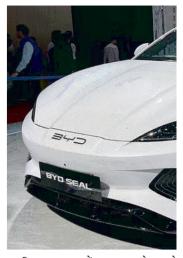
चीन की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता कंपनी बीवाईडी ने भारत में मैन्यूफैक्चरिंग प्लांट स्थापित करने की खबरों को पूरी तरह खारिज कर दिया है। कुछ दिन पहले एक मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया था कि BYD हैदराबाद में एक मैन्युफैक्चरिंग प्लांट लगाने की योजना बना रही है।

चीन की इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) निर्माता कंपनी Build Your Dreams (BYD) (बीवाईडी) ने भारत में मैन्युफैक्चरिंग प्लांट स्थापित करने की खबरों को परी तरह खारिज कर दिया है। कुछ दिन पहले एक मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया था कि BYD हैदराबाद में एक मैन्यफैक्चरिंग प्लांट लगाने की योजना बना रहीं है। ताकि भारत में लोकल स्तर पर इलेक्ट्रिक वाहनों का उत्पादन किया जा सके। लेकिन अब कंपनी ने इस खबर को गलत बताया है। कंपनी ने अपने वीचैट अकाउंट पर जारी एक आधिकारिक बयान में इन रिपोर्टों को 'असत्य' बताते हए खारिज कर दिया।

BYD का आधिकारिक बयान मीडिया रिपोर्ट के मताबिक, BYD ने साफ कर दिया है कि वह भारत में नए अवसरों की तलाश कर रही है. लेकिन फिलहाल हैदराबाद या किसी अन्य जगह पर मैन्युफैक्चरिंग प्लांट लगाने की कोई ठोस योजना नहीं है। कंपनी का कहना है कि वह भारतीय बाजार और सरकारी नियमों का आकलन करने के बाद ही कोई बड़ा निवेश करेगी।

क्या सच में 85,000 करोड़ का

हाल ही में एक रिपोर्ट में दावा किया गया



था कि BYD भारत में 85,000 करोड़ रुपये (10 अरब डॉलर) का निवेश कर एक अत्याधुनिक मैन्युफैक्चरिंग प्लांट बनाएगी। दूसरी रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि तेलंगाना सरकार ने BYD के लिए 200 एकड जमीन चिन्हित कर ली है। इस रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि BYD, हैदराबाद की मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (MEIL) के साथ मिलकर इस प्लांट को जॉइंट वेंचर के रूप में स्थापित करेगी।

कहा जा रहा था कि BYD तेलंगाना में संभावित जगहों की तलाश कर रही है और हैदराबाद इसका अंतिम विकल्प हो सकता है। रिपोर्ट के मुताबिक, यह भारतीय प्लांट 500 एकड़ में फैला होगा और 2032 तक हर साल 6 लाख वाहन बनाने की क्षमता रखेगा। इसके अलावा, कंपनी 20 गीगावॉट-घंटे (GWh) क्षमता वाली एक बैटरी निर्माण इकाई भी स्थापित करने की योजना बना रही थी।

एसयूवी और एमपीवी की बदौलत मारुति ने मार्च २०२५ में १.५० लाख से ज्यादा कारों की बिक्री, जानें किस सेगमेंट में रहा कैसा हाल

परिवहन विशेष न्यूज

भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti Suzuki की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। मारुति की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक बीते महीने के दौरान कितनी बिक्री हुई है। किस सेगमेंट में कैसा प्रदर्शन रहा है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कैसी बिक्री रही है। आइए

नई दिल्ली।भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करने वाली प्रमुख निर्माता Maruti Suzuki के लिए March 2025 बेहतरीन रहा है। निर्माता की ओर से जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक बीते महीने कैसा प्रदर्शन रहा है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर प्रदर्शन में क्या बदलाव हुआ है। घरेलू बाजार के साथ ही एक्सपोर्ट में कैसा प्रदर्शन (March 2025 car sales report) किया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

March 2025 में कितनी हुई बिक्री

मारुति की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक March 2025 के दौरान 150743 यूनिट्स की बिक्री हुई है। इनमें सबसे ज्यादा बिक्री एमपीवी और एसयूवी सेगमेंट के वाहनों में दर्ज की गई है।



2024 में कैसा था प्रदर्शन रिपोर्ट के मुताबिक मारुति की ओर से निजी वाहनों की बिक्री का आंकड़ा 152718 यूनिट्स रहा था। ऐसे में साल 2025 में निजी वाहनों की बिक्री

में गिरावट दर्ज की गई है। किस सेगमेंट में कितनी हुई बिक्री

मारुति के मुताबिक मार्च 2025 में ऑल्टो और एस-प्रेसो की 11655 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबिक 2024 में यह संख्या 11829 यूनिट्स थी। हैचबैक और कॉम्पैक्ट सेडान कारों में बलेनो, सिलेरियो, डिजायर, इंग्निस, स्विफ्ट और वैगन आर की कुल 66906 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबकि 2024 में यह संख्या 68844 यूनिट्स थी। मारुति की ओर से सियाज की मार्च 2025 में 676 और 2024 में 590 यूनिट्स की बिक्री हुई थी।

सबसे ज्यादा बिक्री एमपीवी और एसयुवी सेगमेंट के वाहनों की हुई है। जानकारी के मुताबिक मार्च 2025 में ब्रेजा, अर्टिगा, फ्रॉन्क्स, ग्रैंड विटारा, इनविक्टो, जिम्नी और XL6 की 61097 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबकि मार्च 2024 में यह संख्या 58436 यूनिट्स की थी। वैन सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली ईको की मार्च 2025 में 10409 और मार्च 2024 में 12019 यनिटस की बिक्री हुई

कैसा रहा एक सपोर्ट जानकारी के मुताबिक

मारुति ने मार्च 2025 में 32968 यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया है। जबकि मार्च 2024 में यह संख्या 25892 यूनिट्स की

अन्य OEM को दीं कितनी यूनिट्स

मारुति की ओर से टोयोटा के साथ साझेदारी में कई वाहनों का निर्माण किया जाता है। ऐसे में मारुति की ओर से कुछ OEM को अपने वाहन दिए जाते हैं। रिपोर्ट के मताबिक मार्च 2025 में ऐसे वाहनों की संख्या 6882 यूनिट्स रही, जबकि मार्च 2024 में यह संख्या 4974 यनिटस की थी।

स्कोडा एल्रॉक RS की आई पहली झलक, ग्लोबल लेवल पर ३ अप्रैल को होगी पेश



परिवहन विशेष न्यूज

Skoda Elrog RS का पहला टीजर कंपनी ने जारी कर दिया है। इसमें यह इलेक्टिक SUV ग्लोबल बाजार में 3 अप्रैल 2025 को पेश होगी। कंपनी इसे अपनी Youtube चैनल पर लाइव शोकेस करेगी। इसमें बड़ी बैटरी पैक के साथ ज्यादा ड्राइविंग रेंज मिलने की उम्मीद है। इसे एक्सटीरियर और इंटीरियर को स्पोर्टी लुक देने के लिए कई फीचर्स को सामिल किया गया है।

नर्ड दिल्ली। स्कोडा अपनी नई इलेक्टिक कार लाने की तैयारी कर रही है। कंपनी ने इलेक्ट्रिक एसयूवी Skoda Elrog RS का एक वीडियो टीजर जारी किया है। इसके टीजर में इलेक्ट्रिक SUV के स्पोर्टी वर्जन और इंटीरियर की झलक दिखाई गई है। इसे ग्लोबल रूप में 3 अप्रैल 2025 को डेब्यू किया जाएगा। कंपनी इसे अपनी Youtube चैनल पर लाइव शोकेस करेंगा।

Skoda Elroq RS का एक्सटीरियर

इसके बाहरी डिजाइन में कई नए और अट्रैक्टिव फीचर्स को शामिल किया गया है। इसे स्पेशल हाइपर ग्रीन कलर में आने वाली है, जो स्कोडा के RS सब-ब्रांड का सिग्नेचर कलर है। इस कलर को हाल ही में स्कोडा Octavia RS में भी देखा गया था, और अब इसे Elroq RS में देखने के लिए मिलेगा। इसके अलावा, इसके फ्रंट बम्पर को नया रूप दिया गया है और इसके

ORVMs, रूफ रेल्स, और फेंडर के ऊपर RS की बैजिंग दी गई है। इसमें एरो-ऑप्टिमाइज्ड एलॉय व्हील्स को विजन 7S कॉन्सेप्ट जैसा डिजाइन दिया

गया है। इसमें 21 इंच के व्हील्स दिए गए हैं और साथ ही Skoda Crystal Lighting एंग्रेविंग की गई है।

Skoda Elroq RS का इंटीरियर

इसके इंटीरियर में खास स्पोर्टी बदलाव किए गए हैं। इसके स्पोर्ट्स सीटस और स्टीयरिंग व्हील पर खास ध्यान दिया गया है। इसमें 13 इंच का केंद्रीय इंफोटेनमेंट स्क्रीन, हेड-अप डिस्प्ले, एंबियंट लाइट्स और वायरलेस चार्जिंग पैड को शामिल किया गया है।

Skoda Elrog RS की बैटरी और डाइविंग रेंज

कंपनी ने अभी तक इसकी बैटरी पैक की खासियत के बारे में नहीं बताया है, लेकिन संभावना जताई जा रही है कि इसमें 85kWh बैटरी पैक के साथ पेश किया जा सकता है। इस बैटरी पैक के साथ इममें RWD इलेक्ट्रिक मोटर मिल सकता है, जो 326 हॉर्सपावर की पावर जनरेट कर सकता है। इसमें 560 किमी से ज्यादा की ड्राइविंग रेंज मिल सकती है।

भारत में कम होगी लॉन्च?

स्कोडा भारत में अपनी पहली इलेक्ट्रिक कार सितंबर 2025 तक लॉन्च करने की प्लानिंग कर रही है। इसमें स्कोडा एन्याक, एन्याक कपे और एलरॉक जैसे मॉडल में एक हो सकती है। बात करें Skoda Elroq RS की भारत में लॉन्च होने की तो कंपनी की तरफ से अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। इसी बीच, Skoda Octavia RS को कंपनी भारत में लॉन्च करने की तैयारी कर रही है, जिसे भारत फुल इंपोर्ट के रूप में लाया जाएगा।

बजाज पल्सर पर मिल रहा तगड़ा डिस्काउंट, इस मॉडल पर 7,300 रुपये तक की छूट

परिवहन विशेष न्यूज

हाल ही में बजाज ऑटो ने पल्सर की 2 करोड़ युनिट्स बिक्री के आंकड़े को पार किया है। जिसकी खुशी में कंपनी Pulsar को कई मॉडल पर बंपर डिस्काउंट दे रही है। कंपनी Bajaj Pulsar 220F पर सबसे ज्यादा डिस्काउंट ऑफर कर रही है। आइए जानते हैं कि Bajaj Auto Pulsar के किस मॉडल पर कितना छूट दे रही है।

नई दिल्ली। बजाज ऑटो अपनी सभी Pulsar गाड़ियों की बिक्री को 2 करोड़ युनिट्स का आंकड़ा छुआ है। इसे देखते हुए कंपनी ने अपने Pulsar मोटरसाइकिल पर बंपर डिस्काउंट दे रही है। यह डिस्काउंट खास करके उन मॉडल पर दिया जा रहा है, जिनकी बिक्री हमेशा से रही है। आइए जानते हैं कि कंपनी किन Pulsar मॉडल पर डिस्काउंट ऑफर दे रही है और कितनी छूट मिल

Bajaj Pulsar 220F पर सबसे ज्यादा डिस्काउंट

बजाज अपनी Pulsar 220F पर अप्रैल 2025 में सबसे ज्यादा डिस्काउंट दे रही है। यह भारत में एक समय पर सबसे पॉपुलर स्पोर्ट्स बाइक रही है और इसपर कंपनी 7,300 रुपये तक का डिस्काउंट दे रही है। इसपर महाराष्ट्र, बिहार

और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों डिस्काउंट मिल रहा है। यह बाइक स्पोर्टी लुक और कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है, जिसकी वजह से इसे बहुत से लोग खरीदना पसंद करते हैं।

Bajaj Pulsar डिस्काउंट ऑफर कीमत में मॉडल कीमत (रुपये में)

Pulsar 125 Neon 84,493 1,184 Pulsar 125 Carbon Fibre 91,610

2,000 Pulsar 150 Single Disc 1.13 লাভ 3,000

Pulsar 150 Twin Disc 1.20 लाख 3,000

Pulsar N160 USD 5,811 Pulsar NS125 Base 1 लाख

Pulsar N160 TD Single Seat 1.23 लाख 1,000 रुपये कीमत बढ़ी

Pulsar NS125 ABS

Pulsar 220F 1.44 लाख केवल महाराष्ट्र, बिहार और पश्चिम बंगाल में 7,379 नये दाम और बढ़ी हुई कीमतें

बजाज अपनी मोटरसाइकिल पर डिस्काउंट ऑफर देने के साथ ही कुछ मॉडल्स की कीमतों को भी बढ़ाया है। Pulsar N160 TD (ट्वन डिस्क वेरिएंट) की कीमत में 1,000 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। इसकी अब एक्स-शोरूम कीमत 1.23 लाख रुपये पहुंच गई है। कंपनी ने यह बदलाव अपनी प्रोडक्ट रेंज को और भी प्रीमियम बनाने के लिए किया गया है।

पल्सर की 2 करोड़ बिक्री का सफर बजाज ऑटो ने Pulsar को भारतीय बाजार में साल 2001 में लॉन्च किया था, तब कंपनी ने इसके 150cc और 180cc के मॉडल्स को लेकर आई थी। उस समय इस मोटरसाइकिल को हाई परफॉमेंस के लिए जानी जाती थी, क्योंकि उस समय ज्यादातर मोटरसाइकिल 100cc से 125cc रेंज में आती थी। वहीं, पल्सर ने भारत में मोटरसाइकिल के बारे में सोचने का तरीका ही

कंपनी यही नहीं रुकी, पल्सर रेंज ने लगातार विस्तार करती रही और हाल के समय में 125cc से लेकर 400cc तक के मॉडल्स की एक 12-बाइक की रेंज ला चुकी है। पल्सर ने 17 साल में अपना पहला 1 करोड़ यूनिट्स का बिक्री आंकड़ा पार किया, और दूसरी करोड़ की बिक्री सिर्फ 6 साल में





विजय गर्ग

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (ऐवी-पीएमजेऐवाई) 2018 में भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक प्रमुख स्वास्थ्य सुरक्षा पहल है। इसका उद्देश्य समाज के आर्थिक रूप से वंचित वर्गों को व्यापक स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करना है, जो उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुंच सुनिश्चित करता है। इस पहल में गरीबी को कम करने, उत्पादकता बढ़ाने और सामाजिक इक्विटी को बढ़ावा देने के द्वारा देश के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में क्रांति लाने की क्षमता है।

वन अर्थ वन हेल्थ

'वन अर्थ वन हेल्थ' के नारे को भारत का अपनाना स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे को बढ़ाने की अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह दृष्टिकोण सभी जीवित प्राणियों के लिए व्यापक स्वास्थ्य सुरक्षा पर जोर देता है, जिसमें मनुष्यों, जानवरों और पौधों को शामिल किया जाता है। इसके अतिरिक्त, भारत सरकार ने चिकित्सा उपचार को और अधिक सुलभ बनाने को प्राथमिकता

आयुष्मान भारत योजनाः आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (ऐवी-पीएमजेऐवाई) 2018 में भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक प्रमुख स्वास्थ्य सुरक्षा पहल है। इसका उद्देश्य समाज के आर्थिक रूप से वंचित वर्गों को व्यापक स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करना है, जो उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुंच सुनिश्चित करता है। इस पहल में गरीबी को कम करने, उत्पादकता बढ़ाने और सामाजिक इक्विटी को बढ़ावा देने के द्वारा देश के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में क्रांति लाने की क्षमता है। ऐवी-पीएमजेऐवाई के मुख्य उद्देश्यः लाभार्थियों के लिए स्वास्थ्य सेवा पर आउट-ऑफ-पॉकेट व्यय के वित्तीय बोझ को कम करें। लाभार्थियों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं की पहंच और सामर्थ्य बढाएं। देश में स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणालियों की गुणवत्ता और दक्षता में सुधार करें। लाभार्थियों के लिए निवारक प्रचार और उपचारात्मक स्वास्थ्य हस्तक्षेप को बढ़ावा देना।ऐवी-पीएमजेऐवाई की मुख्य विशेषताएं: स्वास्थ्य कवरेजः यह कार्यक्रम माध्यमिक और तृतीयक देखभाल अस्पताल में भर्ती होने के लिए प्रति परिवार 5 लाख रुपये सालाना का स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करता है, जिससे 12 करोड़ से अधिक परिवार (जनसंख्या का निचला 40%) लाभान्वित होते हैं। मेडिकल पैकेजः 1,949 व्यापक पैकेजों को शामिल करते हुए, इस योजना में विभिन्न स्वास्थ्य स्थितियों के लिए चिकित्सा और शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं को शामिल किया गया है, जिसमें कैंसर की देखभाल, कार्डियक केयर, न्यूरोसर्जरी, आर्थोपेडिक्स, बर्न प्रबंधन और मानसिक विकार शामिल हैं।

फंडिंगः ऐवी-पीएमजेऐवाई एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जिसमें केंद्र और राज्य दोनों सरकारों से धन प्राप्त किया जाता है, जिसे अधिकांश राज्यों के लिए 60:40 के अनुपात में वितरित किया जाता है, पूर्वोत्तर और हिमालयी राज्यों के लिए 90:10, और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए 100:0 बिना विधायिका के। आईटी प्लेटफार्मः एक मजबूत आईटी प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हुए, यह योजना निर्बाध सेवा वितरण सुनिश्चित करती है, धोखाधड़ी को रोकती है, और इसमें लाभार्थी पहचान, अस्पताल के पैनल, लेनदेन प्रबंधन, दावा प्रबंधन और शिकायत निवारण जैसी विशेषताएं शामिल हैं।

अस्पताल नेटवर्कः राष्ट्रव्यापी 27,000 से अधिक पैनल वाले अस्पतालों के नेटवर्क के साथ, आधे से अधिक निजी होने के कारण, यह योजना प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सार्वजिनक-निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। पोर्टेबिलिटीः अंतरराज्यीय पोर्टेबिलिटी लाभार्थियों को किसी भी राज्य में एबी-पीएमजेएवाई कार्यक्रम के साथ सेवाओं का लाभ उठाने की अनुमित देती है, विशेष रूप से आपात स्थित में प्रवासियों की सहायता करती है। आरोग्य मित्रः समर्पित प्रधानमंत्री आरोग्य मित्र (पीएमएएम) अपनी योजना यात्रा में लाभार्थियों की सहायता करते हैं,

संभालते हैं।
निगरानी और मूल्यांकनः यह योजना एक
निगरानी और मूल्यांकन तंत्र को नियोजित
करती है, जो वास्तविक समय की ट्रैकिंग
के लिए सार्वजनिक डैशबोर्ड के साथ
पारदर्शिता सुनिश्चित करती है। लाभार्थी
विवरण गोपनीयता से समझौता किए बिना
प्रकाशित किए जाते हैं, और अनाम दावा
प्रसंस्करण लागू किया जाता है।
धोखाधड़ी विरोधी उपायः नेशनल एंटीफ्रॉड यूनिट और राज्य-स्तरीय एंटी-फ्रॉड
इकाइयां संभावित धोखाधड़ी का पता

लगाने, जवाबदेही बनाए रखने के लिए

ऑडिट करने के लिए ऐआई और एमएल

धोखाधड़ी या कदाचार के लिए 210 से

प्रौद्योगिकियों का उपयोग करती हैं।

सत्यापन, पंजीकरण, पूर्व-प्राधिकरण

और दावा प्रस्तृत करने जैसे कार्यों को

अधिक अस्पतालों को डी-पैनल किया

कॉल सेंटरः एक कॉल सेंटर डिस्चार्ज के 48 घंटों के भीतर उपचार की मात्रा और गुणवत्ता की पुष्टि करता है और प्रत्येक लाभार्थी के लिए पूर्वानुमान का आकलन करने के लिए 15 दिनों के बाद इसका अनुसरण करता है।

मूल्यांकनः आयुष्मान 'भारत' और 'जन औषधि योजना' कल्याणकारी स्वास्थ्य योजनाओं ने केवल 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक का वितरण किया है, जिससे मुख्य रूप से निम्न और मध्यम आय के रोगियों को लाभ हुआ है । आयुष्मान भारत के कार्यान्वयन ने न केवल नए अस्पतालों की मांग को बढ़ाया है, बल्कि अतिरिक्त अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों की स्थापना के अवसर भी पैदा किए हैं। इसके अलावा, इसने तकनीकी रूप से संचालित, समग्र स्वास्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र के विकास को उत्प्रेरित किया है। इन पुनर्जीवित स्वास्थ्य प्रयासों ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र की क्षमता को काफी बढ़ा दिया है, जो भविष्य में 10 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान है, बशर्ते निजी क्षेत्र और चिकित्सा शिक्षा के बीच प्रभावी सहयोग हो। सक्रिय उपाय करते हुए, भारत अब न केवल उपचार बल्कि समग्र कल्याण पर भी ध्यान केंद्रित कर रहा है।

स्वतंत्रता के बाद से एक एकीकृत, दीर्घकालिक स्वास्थ्य दृष्टिकोण की ऐतिहासिक कमी से प्रस्थान करते हुए, वर्तमान दृष्टिकोण एक संपूर्ण सरकारी रणनीति की वकालत करता है, जो अकेले स्वास्थ्य मंत्रालय की सीमाओं से परे है। यह एक फॉरवर्ड-लुकिंग परिप्रेक्ष्य का संकेत देता है।

पीएम-आयुष्मान भारत हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन न केवल नए अस्पतालों की स्थापना की सुविधा प्रदान कर रहा है, बल्कि एक व्यापक स्वास्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण को भी बढ़ावा दे रहा है। आगे का रास्ताः हालांकि, राज्य सरकारों के साथ बेहतर समन्वय के माध्यम से एक संभावित सुधार हासिल किया जा सकता था, विशेष रूप से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की जरूरतों को पूरा करने में। दुर्भाग्य से, वर्तमान मंत्रालय ने इस पहलू की अनदेखी की है। छोटे ग्राम स्वास्थ्य केंद्रों और जिला अस्पतालों में परीक्षण सुविधाओं के बीच एक कड़ी स्थापित करने से जमीनी स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं में वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य सेवा में प्रौद्योगिकी को शामिल करने पर जोर स्वास्थ्य सेवा उद्यमियों. निवेशकों और पेशेवरों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है। केंद्रीय बजट 2023-24 में 89,155 करोड़

रुपये के आवंटन ने इस क्षेत्र को नए सिरे से बढावा दिया है। विशेष रूप से, पर्व और पोस्ट-कोविद स्थितियों के बीच ध्यान में एक अलग बदलाव है। चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र में क्रांतिः चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र में पिछले एक दशक में एक उल्लेखनीय क्रांति हुई है। 260 से अधिक नए मेडिकल कॉलेजों के उद्घाटन के परिणामस्वरूप 2014 की तलना में स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के लिए चिकित्सा सीटों में दो गुना वृद्धि हुई है। हालांकि, मेडिकल कॉलेजों की स्थापना के संबंध में नीतिगत निर्णयों का पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकता है, और विदेशों में पढ़ने वाले भारतीय चिकित्सा छात्रों के लिए प्रक्रियाओं को कारगर बनाने के लिए आगे के प्रयासों की आवश्यकता है। नवीनतम बजट ने निसंग क्षेत्र पर भी महत्वपूर्ण जोर दिया है, चिकित्सा कॉलेजों के आसपास 157 नर्सिंग कॉलेजों की स्थापना के साथ चिकित्सा मानव संसाधनों को मजबूत करने में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व किया है। 5 जी जैसी तकनीकें स्टार्टअप के लिए उपन्यास के अवसर पैदा कर रही हैं, जबकि ड्रोन दवा वितरण और परीक्षण सेवाओं में क्रांति ला रहे हैं। मेडिकल डिवाइस क्षेत्र में 12-14% की वृद्धि देखी गई है, जो कि बल्क ड्रग पार्क

लिंक्ड प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाओं में 30 हजार करोड़ रुपये से अधिक का निवेश है। इसके अलावा, बायोमेडिकल इंजीनियरिंग जैसे कार्यक्रमों को शुरू करना और आईआईटी में उद्योग, शिक्षा और सरकार के बीच सहयोग को बढ़ावा देना इस क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण क्षमता रखता है। हालांकि, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के बुनियादी ढांचे को बढ़ाने के बजाय, एम्स जैसे संस्थानों में रोगी देखभाल ओपीडी के विस्तार पर ध्यान केंद्रित किया गया है। एम्स को मुख्य रूप से एक अनुसंधान संस्थान के रूप में मान्यता दिए जाने के बावजूद, अनुसंधान क्षेत्र में उनके ऐतिहासिक योगदान उल्लेखनीय हैं। निवारक हेल्थकेयरः निवारक स्वास्थ्य सेवा और जागरूकता में सरकार की पहल, जैसे स्वच्छता के लिए स्वच्छ भारत अभियान, धूम्रपान से संबंधित बीमारियों को संबोधित करने वाली उज्ज्वला योजना, जल जीवन मिशन जलजनित रोगों को लक्षित करना, राष्ट्रीय पोषण मिशन एनीमिया और कुपोषण को संबोधित करना, और श्री अन्ना जैसी पहल के माध्यम से अनाज पर जोर देना पीएम मटरू वंदना योजना, मिशन इंद्रधनुष, योग, फिट इंडिया मूवमेंट, और आयुर्वेद सहित प्राकृतिक चिकित्सा और वैकल्पिक चिकित्सा प्रणालियों पर बढे हए ध्यान ने रोगों को प्रभावी ढंग से रोका है। निष्कर्षः ये सरकारी उपाय लोगों के लिए एक नए युग के शुरू होने का संकेत देते है और वैश्विक मंच पर स्वास्थ्य के लिए भारत के दृष्टिकोण का प्रदर्शन करते हैं। प्राचीन शास्त्रों के अनुसार वैश्विक महामारियों से बहुत पहले प्राचीन काल में भी भारत का स्वास्थ्य का दृष्टिकोण सार्वभौमिक था। प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि वन अर्थ वन हेल्थ की अवधारणा इन प्राचीन मान्यताओं के साथ संरेखित करती है और कार्रवाई में एक ही विचार की अभिव्यक्ति है, जो मनुष्यों से परे हर जीवित प्राणी के लिए एक सुंदर पृथ्वी को शामिल करने के लिए फैली हुई

के लिए जिम्मेदार है, साथ ही उत्पादन-

सेवानिवृत्तप्राचार्यशैक्षिकस्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट

कहानी: आप की बेटी को एड्स है

विजय गर्ग

स दिन मैं टेलीविजन के सामने बैठी अपनी 14 साल की बेटी के फ्राक में बटन लगा रही थी. पित एक हाथ में चाय का गिलास लिए अपना मनपसंद धारावाहिक देखने में व्यस्त थे. तभी दरवाजे पर घंटी बजी और मैं उठ कर बाहर आ

दरवाजा खोला तो सामने मकानमालिक वर्माजी खड़े थे. मैं ने बड़े आदर से उन्हें भीतर बुलाया और अपने पित को आवाज दे कर ड्राइंगरूम में बुला लिया और बड़े विनम्र स्वर में बोली, ''अच्छा, क्या लेंगे आप. चाय या ठंडा?''

''नहीं, इन सब की तकलीफ मत कीजिए. बस, आप बैठिए, एक जरूरी बात करनी है,'' वर्माजी बेरुखी से बोले.

वमाजा बरुखा स बाल. मैं अपने पति के साथ जा कर बैठ गई. थोड़ा आश्चर्य हुआ कि इतनी सुबहसुबह कैसे आना हुआ. फिर अपने विचारों को विराम दे कर चेहरे

पर बनावटी मुसकान ला कर उन्हें देखने लगी. ''मुझे इस मकान की जरूरत है. आप कहीं और मकान ढूंढ़ लीजिए,'' उन्होंने एकदम सपाट

स्वर में कहा. ''क्या?'' मेरे पति के मुंह से निकला, ''पर मैं ने तो 11 महीने की लीज पर आप से मकान लिया

न ता 11 महान का लाज पर आप स मकान लिया है. आप इस तरह बीच में छोड़ने के लिए कैसे कह सकते हैं.'' ''सर, मेरी मजबूरी है इसलिए कह रहा हूं. और

सर, मरा मजबूरा ह इसालए कह रहा हू. आर फिर यह मेरा हक है कि मैं जब चाहे आप से मकान खाली करवा सकता हूं.''

दोनों के बीच विवाद को बढ़ता देख कर मैं ने बेहद विनम्र स्वर में कहा, ''पर ऐसा क्या कारण है भाई साहब जो आप को अचानक इस मकान की जरूरत पड़ गई. हम ने तो हमेशा समय पर किराया दिया है. फिर आप का तो और भी एक मकान है. आप उसे क्यों नहीं खाली करवा लेते.''

''कारण आप भी जानती हैं. मुझे पहले से पता होता तो आप को कभी भी यह मकान न देता. मेरा 1 महीने का कमीशन और सफेदी कराने में जो पैसा खर्च हुआ, सो अलग.''

च पहुजा, साजराग.

''पर ऐसा क्या किया है हम ने ?'' मैं चौंक गई.

''कारण आप की बेटी है और उस की बीमारी
है. पिछले मकान से भी आप को इसलिए निकाला
गया क्योंकि आप की बेटी को एड्स है और ऐसी
घातक बीमारी के मरीज को मैं अपने घर में नहीं
रख सकता. फिर कालोनी के कई लोगों को भी

एतराज है.'' ''भाई साहब, यह बीमारी कोई संक्रामक रोग तो है नहीं और नहीं छुआछूत से फैलती है. यह तो हर जगह साबित हो चुका है और फिर हम दोनों में

से यह किसी को भी नहीं है.'' ''यह सब न मैं सुनना चाहता हूं और न ही पासपड़ोस के लोग. अधिक पैसा कमाने की होड़ में आप लोग जरा भी नहीं समझते कि बच्चे किस तरफ जा रहे हैं. किन से मिलते हैं. बाहर क्याक्या गुल

''वर्माजी,'' मेरे पित चीख पड़े, ''आप के मुंह में जो आए कहते चले जा रहे हैं. आप को मकान खाली चाहिए मिल जाएगा पर इस तरह के अपशब्द और लांछन मुंह से मत निकालिए.'' ''10 दिन बाद मकान की चाबियां लेने। आऊंगा,'' कह कर वर्माजी उठ कर चले गए.

उन के जाते ही मैं निढाल हो कर सोफे पर पसर गई. तभी भीतर से चारू आई और मुझ से आ कर लता की तरह लिपट कर रोने लगी. मेरे पित मेरे पास आ कर बैठ गए. कुछ कहतेकहते उन की आवाज टूट गई, चेहरा पीला पड़ गया मानो वही दोषी हों

अतीत चलचित्र सा मानसपटल पर तैरने लगा और एक के बाद एक कितनी ही घटनाएं उभरती चली गईं, जिन्हें मैं हमेशा के लिए भूल जाना चाहती थी.

मैं उस दिन किटी पार्टी से लौटी ही थी कि फोन की घंटी बजने लगी. फोन चारू के स्कूल से उस की क्लास टीचर का था. मेरे फोन उठाते ही वह हांफती हुई बोलीं, 'आप चारू की मम्मी बोल रही हैं.'

मेरे 'हां' कहने पर वह बिना रुके बोलती चली गईं, 'कहां थीं आप अब तक. मैं तो काफी समय से आप को फोन मिला रही हूं. आप के पति भी अपने आफिस में नहीं हैं.'

'क्यों, क्या हुआ़?' मैं थोड़ा घबरा गई.

'चारू सीढ़ियों से फिसल कर नीचे गिर गई थी. काफी खून बह गया है. हम ने फौरन उसे फर्स्ट एड दे दी है. अब वह ठीक है. आप उसे यहां से ले जाइए,' वह एक ही सांस में बोल गईं.

में ने बिना देर किए आटो किया और चारू के स्कूल पहुंच गई. वह मेडिकल रूम में लेटी थी और मुझे देख कर थोड़ा सुबकने लगी. मैं ने झट से उसे सीने से लगाया. तब तक वहां पर बैठी एक टीचर ने बताया कि आज हमारी नर्स छुट्टी पर थी. इसलिए पास के क्लीनिक से उस को मरहमपट्टी करवा दी है तथा एक पेनिकलर इंजेक्शन भी दिया है. मैं उसे थोड़ा सहारा दे कर घर ले आई. 1-2 दिन में चारू परी तरह ठीक हो गई और स्कल जाने लगी.

इस बात को कई महीने हो गए. एक दिन सुबहसुबह मेरे पित ने बताया कि प्रगति मैदान में पुस्तक मेला चल रहा है. मैं भी जाने को तैयार हो गई पर चारू थोड़ा मुंह बनाने लगी.

'ममा, वहां बहुत चलना पड़ता है. मैं घर पर ही टीक इं '

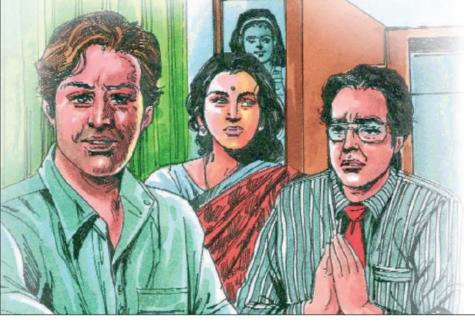
ंक्यों बेटा, वहां तो तुम्हारी रुचि की कई पुस्तकें होंगी. तुम्हें तो किताबों से काफी लगाव है. खुद चल कर अपनी पसंद की पुस्तकें ले लो,' मेरे पति बोले.

कर अपना पसद का पुस्तक ल ला, 'मर पात बाल. 'नहीं पापा, मेरा मन नहीं है, 'कह कर वह बैठ गई, 'अच्छा, आप मेरे लिए कामिक्स ले आना और इंगलिश हैंडराइटिंग की कापी भी. टीचर कहती हैं मेरी हैंडराइटिंग आजकल इतनी साफ नहीं है.'

'क्यों तबीयत ठीक नहीं है क्या ?' मैं ने उस को अलग कमरे में ले जा कर पूछा. मुझे लगा कहीं उस के पीरियड्स न होने वाले हों, शायद इसीलिए वह थोडा जाने के लिए आनाकानी कर रही हो.

पित ने थोड़ा जोर से कहा, 'नहीं बेटा, तुम को साथ ही चलना पड़ेगा. मैं ऐसे तुम को घर पर अकेला नहीं छोड़ सकता.'

वह अनमने मन से तैयार हो गई. पर मैं ने महसूस किया कि वह मेले में जल्दी ही बैठने की जिद करने लगती. फिर उसे एक तरफ बिठा कर हम लोग घुमने चले गए.



घर आतेआते वह फिर से एकदम निढाल हो गई. अगले दिन स्कूल की छुट्टी थी. मैं उसे ले कर डाक्टर के पास गई. उस ने थोड़े से टेस्ट लिख दिए जो 1-2 दिन में कराने थे. 2 दिन बाद फिर से ब्लड टेस्ट के लिए खुन लिया चारू का.

अगले दिन सुबहसुबह डाक्टर का फोन आ गया और मुझे फौरन अस्पताल में बुलाया. पित तब आफिस जाने वाले थे. उन की कोई जरूरी मीटिंग थी. मैं ने कहा कि 12 बजे के बाद मैं आ कर मिल लेती हूं. पर वह बड़े सख्त लहजे में बोलीं कि आप दोनों ही फौरन अभी मिलिए. मैं थोड़ा बिफर सी गई कि ऐसा भी क्या है कि अभी मिलना पड़ेगा पर वह

नहा माना. हमारे पहुंचते ही डाक्टर बोलीं, 'मुझे आप दोनों का ब्लड टेस्ट करना पड़ेगा.'

'हम दोनों का?' मैं एकदम मुंह बना कर बोली.

भी ने आप की बेटी का 2 बार ब्लड टेस्ट किया है. मुझे बड़े खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि उसे एड्स है.'

एड्स हैं.'
'क्या?' हम दोनों ही चौंक गए. मेरी सांसें तेज होती गईं और छाती जोरजोर से धड़कने लगी. मैं ने अविश्वास से डाक्टर की तरफ देख कर कहा, 'आप ने सब टेस्ट ठीक से तो देखे हैं, ऐसा कैसे हो

सकता ह ?' 'ऐसा ही है. अब देखना यह है कि यह बीमारी

कहीं आप दोनों में तो नहीं है.'
मेरे तो प्राण ही सूख गए. मुझे स्वयं पर भरोसा
था और अपने पित पर भी. फिर भी एक बार के लिए
मेरा विश्वास डोल गया. यह सब कैसे हो गया था.
हमारा ब्लड ले लिया गया. लगा जैसे सबकुछ
खत्म हो गया है. मेरे पित उस दिन आफिस नहीं गए
और नहीं मेरा मन किसी काम में लगा.

दूसरे दिन हम दोनों की रिपोर्ट आ गई और रिपोर्टनिगेटिव थी. मैं ने डाक्टर को चारू के बारे में सबकुछ बताया और आश्वासन दिलाया कि उस के साथ कहीं कोई दुर्व्यवहार नहीं हुआ.

बातोंबातों में डाक्टर ने एकएक कर के बहुत सारे प्रश्न पूछे. तभी अचानक मुझे याद आया कि जब वह स्कूल में सीढ़ियों से नीचे गिरी थी तो बाहर से एक इंजेक्शन लगवाया था. डाक्टर की आंखें

'आप के पास उस के ट्रीटमेंट और इंजेक्शन

की परची है ?'
'ऐसा तो मुझे स्कूल वालों ने कुछ नहीं दिया पर एक टीचर कह रही थी कि उसे इंजेक्शन दिया था और इस बात की पष्टि चारू ने भी की थी.'

हम लोग उसी क्षण स्कूल में जा कर प्रिंसिपल सेमिले और अपनी सारी व्यथा सुनाई.

प्रिंसिपल पहले तो बड़े मनोयोग से सारी बातें सुनती रहीं फिर थोड़ी देर के लिए उठ कर चली गईं. उन के वापस आते ही मेरे पित ने कहा कि यदि आप उस टीचर को किसी तरह बुला दें जो चारू को क्लीनिक में ले कर गई थी तो हमें कारण ढूंढ़ने में आसानी होगी. कम से कम हम उस पर कोई कानूनी काररवाई तो कर सकते हैं.

'क्या आप को उस का नाम मालूम है?' वह बड़े ही रूखे स्वर में बोलीं.

चारू उस समय हमारी साथ थी पर वह इस बात का कोई ठीक से उत्तर नहीं दे सकी. इस पर प्रिंसिपल ने बड़ी लापरवाही से उत्तर दिया कि मैं मामले की छानबीन कर के आप को बता दूंगी.

मेरे पति आपे से बाहर हो गए. उन की खीज बढ़ती गई और धैर्य चुकता गया.

'हमारे साथ इतना बड़ा हादसा हो गया और हमिकस मानसिक दौर से गुजर रहे हैं, इस बात का अंदाजा है आप को. एक तो आप के स्कूल में उस दिन नर्स नहीं थी, उस पर जो उपचार बच्ची को दिया गया उस का भी आप के पास ब्योरा नहीं है. आप सबकुछ कर सकती हैं पर आप कुछ करना नहीं चाहती हैं. इसीलिए कि आप का स्कूल बदनाम न हो जाए. मैं एकएक को देख लूंगा.'

'आप को जो करना है कीजिए, पर इस तरह चिल्ला कर स्कूल की शांति भंग मत कीजिए,'वह लगभग खड़े होते हुए बोलीं.

और मेडिकल डिवाइस पार्क जैसी पहल

दोषियों को दंड दिलवाने की इच्छा भी बेकार साबित हुई.

चारू की रिपोर्ट से हम ने थोड़ेबहुत हाथपैर मारे पर सुबूतों के अभाव में दोषी डाक्टर एवं उस का स्टाफ बिना किसी बाधा के साफ बच कर निकल गया और जो हमारी बदनामी हुई, वह अलग.

हां, यदि प्रिंसिपल चाहती तो उन को सजा हो सकती थी पर वह क्लीनिक तो चलता ही प्रिंसिपल के इशारे पर था. स्कूल में प्रवेश से पहले सभी विद्यार्थियों को एक सामान्य हेल्थ चेकअप एवं सर्टिफिकेट की जरूरत होती थी जो वहीं से मिल सकता था.

चारू को एड्स होने की बात दावानल की भांति शहर भर में फैल गई. हम लोगों को हेय नजरों से देखा जाने लगा. चारू की स्कूल में भी हालत लगभग ऐसी ही थी.

सरकार के सारे बयान कि एड्स कोई छुआछूत की बीमारी नहीं है व छूने से एड्स नहीं फैलता, लगभग खोखले हो चुके थे. मेरे घर पर भी कालोनी वालों का आना लगभग न के बराबर हो गया. किटी पार्टी छूट गई. बरतन मांजने वाली भी काम से किनारा कर गई. हम लोग उपेक्षित एवं दयनीय से हो कर रह गए थे. हम सुबह से शाम तक 20 बार जीते 20 बार मरते.

यह जानते हुए भी कि इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है फिर भी अपने मन को समझाने के लिए जिस ने जो बताया मैं ने कर डाला. जिस का असर मेरे तनमन पर यह पड़ा कि मैं खुद को बीमार जैसा अनुभव करने लगी थी. यह जिंदगी तो मौत से भी कहीं ज्यादा कष्ट- दायक थी.

एक दिन चारू रोती हुई स्कूल से आई और कहने लगी कि क्लास टीचर ने उसे सब से अलग और पीछे बैठने के लिए कह दिया है. कहा ही नहीं, अलग से इस बात की व्यवस्था भी कर दी है. मेरा दिल भीतर तक दहल गया. इस छोटे से दिल के टुकड़े को जीतेजी अलग कैसे कर दूं, वह बिलखती रही और मैं चुपचाप तिलतिल सुलगती रही.

रहा आर म चुपचाप तिलातल सुलगता रहा. मैं ने वह स्कूल और घर छोड़ दिया तथा इस नई कालोनी में घर ले लिया और पास ही के स्कूल में चारू को एडमिशन दिलवा दिया, यही सोच कर कि जब तक यह स्कूल जा सकती है जाए. उस का मन् लगा रहेगा. पर यहां भी हम से पहले हमारा

अचानक पित के कहे शब्दों से मेरी तंद्रा टूटी और मैं वर्तमान में आ गई. हमें 10 दिन के भीतर मकान खाली करना है यह सोच कर हम फिर से परेशान हो उठे. जैसेजैसे समय बीतता जा रहा था हमारी चिंता और बेचैनी भी बढ़ती जा रही थी. एक दिन सुबहसुबह दरवाजे की घंटी बजी तो मैं परेशान हो उठी. मुझे दरवाजे और टेलीफोन की घंटियों से अब डर लगने लगा था. मैं ने दरवाजा खोला. सामने एक बेहद स्मार्ट सा व्यक्ति खड़ा था. उस ने मेरे पित से मिलने की इच्छा जाहिर की. मैं बड़े सत्कार से उसे भीतर ले आई. मेरे पित के आते ही वह खड़ा हो गया. फिर बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़ कर बोला, ''मैं डा. चौहान हूं, चाइल्ड स्पेशलिस्ट. आप ने शायद मुझे पहचाना नहीं.''

''मैं आप को कैसे भूल सकता हूं,'' सकते में खड़े मेरे पित बोले, ''आप की वजह से तो मेरी यह हालत हुई है. आप के क्लीनिक के इंजेक्शन की वजह से तो मेरी बच्ची को एड्स हो गया. अदालत से भी आप साफ छूट गए. अब क्या लेने आए हैं यहां? एक मेहरबानी हम पर और कीजिए कि हम तीनों को जहर दे दीजिए.''

''सर, आप मेरी बात तो सुनिए. आप जितनी चाहे बददुआएं मुझे दीजिए, मैं इसी का हकदार हूं. जो गलती मेरे क्लीनिक से हुई है उस के लिए मैं ही जिम्मेदार हूं. मेरी ही लापरवाही से यह सबकुछ हुआ है. कोर्ट ने मुझे बेशक छोड़ दिया पर आप का असली गुनहगार मैं हूं. और यह एक बोझ ले कर मैं हर पल जी रहा हूं.'' और हाथ जोड़ कर वह मेरी ओर देखने लगा. स्वर पछतावे से भरा प्रतीत हुआ.

''मैं ने इस शहर को छोड़ कर पास के शहर में अपना नया क्लीनिक खोल लिया है. इनसान दुनिया से तो भाग सकता है पर अपनेआप से नहीं. मैं मानता हूं कि मेरा अपराध अक्षम्य है पर फिर भी मुझे प्रायश्चित्त करने का मौका दीजिए.

''मैं अपने सूत्रों से हमेशा आप के परिवार पर नजर तो रखता रहा पर यहां तक आने और माफी मांगने की हिम्मत नहीं जुटा सका. अभी कल ही मुझे पता चला कि आप पर फिर से मकान का संकट आ पड़ा है तो मैं यहां तक आने की हिम्मत

''मैं जहां रहता हूं वहीं नीचे मेरा क्लीनिक है. मैं चाहता हूं कि आप लोग मेरे साथ चल कर मेरे मकान में रहिए. मुझे आप से कोई किराया नहीं चाहिए बल्कि आप की चारू का उपचार मेरी देखरेख में चलता रहेगा. मुझे एक बड़ी खुशी यह होगी कि मेरे लिए आप लोगों की सेवा का मौका मिलेगा,'' कहतेकहते वह मेरे चरणों में गिर पड़ा. उस का स्वर जरूरत से ज्यादा कोमल एवं सहानुभृति भरा था.

मुझे समझ में नहीं आया कि मैं क्या करूं. उस का स्वर भारी और आंखें नम थीं. उस के यह क्षण मुझे कहीं भीतर तक छू गए. अचानक मां के स्वर याद आ गए, 'अतीत कड़वा हो या मीठा, उसे भुलाने में ही हित है.'

''मुझे सोचने के लिए समय चाहिए. मैं कल तक आप को उत्तर दूंगी.''

तक आप का उत्तर दूगा.
''मैं कल आप का उत्तर सुनने नहीं बल्कि आप को लेने आ रहा हूं. मेरा आप का कोई खून का रिश्ता तो नहीं पर अपना अपराधी समझ कर ही मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लीजिए,'' कहते- कहते उस का गला भर गया और आंसू छलक आए.

उस के इन शब्दों में आत्मीयता और अधिकार के भाव थे. आंखें क्षमायाचना कर रही थीं.

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

नवरात्रि में माँ के मंत्रों द्वारा भौतिक तापो से मुक्ति के उपाय

सुर्या के इन मंत्रो का जाप प्रति दिन भी कर सकते हैं। पर नवरात्र में जाप करने से शीघ्र प्रभाव देखा गया

सर्व प्रकार कि बाधा मुक्ति हेतु सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न

अर्थातः- मनुष्य मेरे प्रसाद से सब "बाधाओं से मुक्त" तथा धन, धान्य एवं पुत्र से सम्पन्न होगा- इसमें जरा भी संदेह नहीं

कम से कम सवा लाख जप कर

'दशांश' हवन अवश्य करें। किसी भी प्रकार के संकट या बाधा कि आशंका होने पर इस मंत्र का प्रयोग करें। उक्त मंत्र का श्रद्धा एवं विश्वास से जाप करने से व्यक्ति सभी प्रकार की बाधा से मुक्त होकर धन-धान्य एवं पुत्र की प्राप्ति

बाधा शान्ति हेतुः

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि एवमेव त्वया

कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्॥ अर्थातः- सर्वेश्वरि! तुम इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो।

विपत्ति नाश हेतुः शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ अर्थातः- शरण में आये हुए दीनों एवं पीडितों की रक्षा में संलग्न रहनेवाली तथा सबकी पीडा दूर करनेवाली नारायणी देवी ! तुम्हें नमस्कार है।

पाप नाश हेतुः

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः

अर्थातः- देवि! जो अपनी ध्वनि से सम्पूर्ण जगत्को व्याप्त करके दैत्यों के तेज नष्ट किये देता है, वह तुम्हारा घण्टा हमलोगों की पापों से उसी प्रकार रक्षा करे, जैसे माता अपने पुत्रों की बुरे कर्मी से रक्षा

विपत्तिनाश और शुभ की प्राप्ति

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।

अर्थातः- वह कल्याण की साधनभूता ईश्वरी हमारा कल्याण और मङ्गल करे तथा सारी आपत्तियों का नाश कर डाले।

भय नाश हेतुः सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते। भयेभ्याहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥

एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम। पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम। त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते॥ अर्थातः- सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्ति यों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवि ! सब भयों से हमारी रक्षा करो; तुम्हें नमस्कार है। कात्यायनी! यह तीन लोचनों से विभूषित तुम्हारा सौम्य मुख सब प्रकार के भयों से हमारी रक्षा करे। तुम्हें नमस्कार है। भद्रकाली! ज्वालाओं के कारण विकराल प्रतीत होनेवाला, अत्यन्त भयंकर और समस्त असुरों का संहार करनेवाला तुम्हारा त्रिशूल भय से हमें बचाये।तुम्हें नमस्कार है।

सर्वप्रकार के कल्याण हेतुः

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तृ ते॥ अर्थातः- नारायणी! आप सब प्रकार का मङ्गल प्रदान करनेवाली मङ्गलमयी हो।

कल्याणदायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थी को

सिद्ध करनेवाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रोंवाली एवं गौरी हो। आपको नमस्कार

व्यक्ति दुःख, दरिद्रता और भय से परेशान हो चाहकर भी या परीश्रम के उपरांत भी सफलता प्राप्त नहीं होरही हों तो उपरोक्त मंत्र का प्रयोग करें।

सुलक्षणा पत नी की प्राप्ति हेतुः

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम। तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम॥

अर्थात:- मन की इच्छा के अनुसार चलनेवाली मनोहर पत्नी प्रदान करो, जो दुर्गम संसारसागर से तारनेवाली तथा उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो।

शक्ति प्राप्ति हेतुः

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि। गुणाश्रये गुणमये नारायणि

अर्थातः- तुम सृष्टि, पालन और संहार करने वाली शक्ति भूता, सनातनी देवी, गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

रक्षा प्राप्ति हेतुः

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड़गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥

अर्थातः- देवि ! आप शूल से हमारी रक्षा करें। अम्बिके! आप खड्ग से भी हमारी रक्षा करें तथा घण्टा की ध्वनि और धनुष की टंकार से भी हमलोगों की रक्षा करें।

देह को सुरक्षित रखने हेतु एवं उसे किसी भी प्रकार कि चोट या हानी या किसी भी प्रकार के अस्त्र-सस्त्र से सुरक्षित रखने हेतु इस मंत्र का श्रद्धा से नियम पूर्वक जाप करें।

विद्या प्राप्ति एवं मातृभाव हेतुः विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।

अर्थातः- देवि! विश्विक सम्पूर्ण विद्याएँ तुम्हारे ही भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं। जगत में जितनी स्त्रियाँ हैं, वे सब तुम्हारी ही मूर्तियाँ हैं। जगदम्ब! एकमात्र तमने ही इस विश्व को व्याप्त कर रखा है। तुम्हारी स्तृति क्या हो सकती है? तुम तो स्तवन करने योग्य पदार्थी सेपरेहो।

समस्त प्रकार कि विद्याओं की प्राप्ति हेतु और समस्त स्त्रियों में मातृभाव की प्राप्ति के लिये इस मंत्रका पाठ करें।

प्रसन्नता की प्राप्ति हेतुः

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि। त्रैलोक्यवासिनामीडये लोकानां

अर्थातः- विश्व की पीडा दूर करनेवाली देवि! हम तुम्हारे चरणों पर पडे हुए हैं, हमपर

प्रसन्न होओ। त्रिलोकनिवासियों की पुजनीय परमेश्वरि ! सब लोगों को वरदान

आरोग्य और सौभाग्य की प्राप्ति

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो

अर्थातः- मुझे सौभाग्य और आरोग्य दो। परम सुख दो, रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि मेरे शत्रुओं का नाश

महामारी नाश हेतुः जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली

कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्त ते॥

ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः ॥



अर्थातः- जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा और स्वधा- इन नामों से प्रसिद्ध जगदम्बिके ! तुम्हें मेरा नमस्कार हो । रोग नाश हेतुः

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान सकलानभीष्टान।

त्वामाश्रितानां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥

अर्थातः- देवि ! तुमहारे प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवाछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं। तुम्हारी शरण में गये हुए मनुष्य दूसरों को शरण देनेवाले हो जाते हैं।

विश्व की रक्षा हेतु: या श्रीः स्वयं सुकृतिनां

भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतिधयां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

अर्थातः- जो पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं ही लक्ष्मीरूप से, पापियों के यहाँ दरिद्रतारूप से, शुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों के हृदय में बुद्धिरूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से तथा कुलीन मनुष्य में लज्जारूप से निवास करती हैं, उन आप भगवती दुर्गा को हम नमस्कार करते हैं। देवि! आप सम्पूर्ण विश्व का पालन कीजिये।

विश्वव्यापी विपत्तियों के

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद ासीद मातर्जगतोऽखिलस्य । प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं

त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥ अर्थातः- शरणागत की पीडा दुर करनेवाली देवि! हमपर प्रसन्न होओ। सम्पूर्ण जगत की माता! प्रसन्न होओ। विश्वेश्वरि! विश्व की रक्षा करो। देवि!

तुम्हीं चराचर जगत्की अधीश्वरी हो। विश्वकेपाप-तापनिवारणहेतुः देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं

यथासुरवधादधुनैव सद्यः । पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाश्

उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान॥ अर्थातः- देवि ! प्रसन्न होओ। जैसे इस समय असुरों का वध करके तुमने शीघ्र ही हमारी रक्षा की है, उसी प्रकार सदा हमें शत्रुओं के भय से बचाओ। सम्पूर्ण जगत्का पाप नष्ट कर दो और उत्पात एवं पापों के

फलस्वरूप प्राप्त होनेवाले महामारी आदि बडे-बडे उपद्रवों को शीघ्र दूर करो।

विश्व के अशुभ तथा भय का विनाश करने हेतुः

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तु मलं बलं च।

सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥

अर्थातः- जिनके अनुपम प्रभाव और बल का वर्णन करने में भगवान शेषनाग, ब्रह्माजी तथा महादेवजी भी समर्थ नहीं हैं, वे भगवती चण्डिका सम्पूर्ण जगत्का पालन एवं अशुभ भय का नाश करने का विचार

सामूहिक कल्याण हेतुः देव्या यया ततिमदं जगदात्मशक्त्या

निश्शेषदेवगणशक्ति समूहमूत्र्या।

तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ अर्थातः- सम्पूर्ण देवताओं की शक्ति

का समुदाय ही जिनका स्वरूप है तथा जिन देवी ने अपनी शक्ति से सम्पूर्ण जगत को व्याप्त कर रखा है, समस्त देवताओं और महर्षियों की पुजनीया उन जगदम्बा को हम भक्ति पूर्वक नमस्कार करते हैं। वे हमलोगों का कल्याण करें।

कैसे करें मंत्र जाप :- नवरात्रि के प्रतिपदा के दिन संकल्प लेकर प्रातःकाल स्नान करके पूर्व या उत्तर दिशा कि और मुख करके दुर्गा कि मूर्ति या चित्र की पंचोपचार या दक्षोपचार या ₹षोड्षोपचार

शुद्ध-पवित्र आसन ग्रहण कर रुद्राक्ष स्फटिक, तुलसी या चंदन कि माला से मंत्र का जाप १,५,७,११ माला जाप पूर्ण कर अपने कार्य उद्देश्य कि पूर्ति हेतु मां से प्राथना

संपूर्ण नवरात्रि में जाप करने से मनोवांच्छित कामना अवश्य पूरी होती हैं।

गृह प्रवेश करने के नियम

गृह प्रवेश की तैयारी

1. गृह प्रवेश का मुहूर्त विद्वान पंडित से निकलवाएं। 2. गृह प्रवेश के समय मंत्रोच्चार द्वारा घर के वास्तु

पुरुष की पूजा करें। 3. घर के मुखिया को दाया पांव (पुरुष) या बायां पांव (महिला) पहले रखकर घर में प्रवेश करें।

गृहप्रवेश के समय... 4. घर के मालिक की झोली में अनाज, धन, मिष्ठान, जल का कुंभ और

5. घर के ईशान कोण में भगवान गणेश की स्थापना करें और रसोई में अग्नि

6. कन्या पूजन और गो पूजन करना शुभ होता है।

7. रसोई में पहले दिन दूध उबालें और या खीर या मिष्ठान बनाकर भोग

गृह प्रवेश के लिए शुभ समय

8. दिन, तिथि, वार और नक्षत्र को ध्यान में रखते हुए गृह प्रवेश की तिथि और

9. माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ माह गृह प्रवेश के लिए शुभ होते हैं। 10. मंगल कलश के साथ नए घर में प्रवेश करें और घर को बंदनवार, रंगोली और फूलों से सजाएं

11. भगवान गणेश की मूर्ति, दक्षिणावर्ती शंख और श्री यंत्र को घर में ले

12. मंगल गीतों के साथ नए घर में प्रवेश करें।

13. रसोई घर में पूजा करें और चूल्हे, पानी रखने के स्थान और स्टोर आदि में धूप, दीप के साथ कुमकुम, हल्दी, चावल आदि से पूजन करें। 14. घर में बने भोजन से सबसे पहले भगवान को भोग लगाएं।

15. गौ माता, कौआ, कुत्ता, चींटी आदि के निमित्त भोजन निकाल कर रखें। 16. ब्राह्मण को भोजन कराएं, इससे घर में सुख, शांति और समृद्धि आती है।

इक्यावन शक्ति पीठों में से एक माँ ज्वालामुखी देवी की कथा माचल प्रदेश में कांगड़ा से 30 किलो मीटर दूर स्तिथ है ज्वालामुखी देवी। ज्वालामुखी मंदिर को

जोता वाली का मंदिर और नगरकोट भी कहा जाता है। ज्वालामुखी मंदिर को खोजने का श्रेय पांडवो को जाता है। इसकी गिनती माता के प्रमुख शक्ति पीठों में होती है। मान्यता है यहाँ देवी सती की जीभ गिरी थी। यह मंदिर माता के अन्य मंदिरों की तुलना में अनोखा है क्योंकि यहाँ पर किसी मूर्ति की पूजा नहीं होती है बल्कि पृथ्वी के गर्भ से निकल रही नौ ज्वालाओं की पूजा होती है। यहाँ पर पृथ्वी के गर्भ से नौ अलग अलग जगह से ज्वाला निकल रही है जिसके ऊपर ही मंदिर बना दिया गया हैं। इन नौ ज्योतियां को महाकाली, अन्नपूर्णा, चंडी, हिंगलाज, विंध्यावासनी, महालक्ष्मी, सरस्वती, अम्बिका, अंजीदेवी के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर का प्राथमिक निमार्ण राजा भूमि चंद के करवाया था। बाद में महाराजा रणजीत सिंह और राजा संसार चंद ने 1835 में इस मंदिर का पूर्ण निमार्ण कराया।

अकबर और ध्यानु भगत की कथा इस जगह के बारे में एक कथा अकबर और माता के परम भक्त ध्यानु भगत से जुडी है। जिन दिनों भारत में मुगल सम्राट अकबर का शासन था, उन्हीं दिनों की यह घटना है। हिमाचल के नादौन ग्राम निवासी माता का एक सेवक धयानू भक्त एक हजार यात्रियों सहित माता के दर्शन के लिए जा रहा था। इतना बड़ा दल देखकर बादशाह के सिपाहियों ने चांदनी चौक दिल्ली मे उन्हें रोक लिया और अकबर के दरबार में ले जाकर ध्यानु भक्त को पेश किया। बादशाह ने पूछा तुम इतने आदिमयों को साथ लेकर कहां जा रहे हो। ध्यानू ने हाथ जोड़ कर उत्तर दिया मैं ज्वालामाई के दर्शन के लिए जा रहा हूं मेरे साथ जो लोग हैं, वह भी माता जी के भक्त हैं, और यात्रा पर जा रहे हैं। अकबर ने सुनकर कहा यह ज्वालामाई कौन है ? और वहां जाने से क्या होगा ? ध्यानू भक्त ने उत्तर दिया महाराज ज्वालामाई संसार का पालन करने वाली माता है। वे भक्तों के सच्चे हृदय से की गई प्राथनाएं स्वीकार

करती हैं। उनका प्रताप ऐसा है उनके स्थान पर बिना तेल-बत्ती के ज्योति जलती रहती है। हम लोग प्रतिवर्ष उनके दर्शन जाते हैं। अकबर ने कहा अगर तुम्हारी बंदगी पाक है तो देवी माता जरुर तुम्हारी इज्जत रखेगी। अगर वह तुम जैसे भक्तों का ख्याल न रखे तो फिर तुम्हारी इबादत का क्या फायदा? या तो वह देवी ही यकीन के काबिल नहीं, या फिर तुम्हारी इबादत झूठी है। इम्तहान के लिए हम तुम्हारे घोड़े की गर्दन अलग कर देते है, तुम अपनी देवी से कहकर उसे दोबारा जिन्दा करवा लेना। इस प्रकार घोड़े की गर्दन काट दी गई। ध्यानु भक्त ने कोई उपाए न देखकर

बादशाह से एक माह की अवधि तक घोड़े के सिर व धड़ को सुरक्षित रखने की प्रार्थना की। अकबर ने ध्यानू भक्त की बात मान ली और उसे यात्रा करने की अनुमति भी मिल गई। बादशाह से विदा होकर ध्यानू भक्त अपने साथियों सहित माता के दरबार मे जा उपस्थित हुआ। स्नान-पूजन आदि करने के बाद रात भर जागरण किया। प्रातःकाल आरती के समय हाथ जोड़ कर ध्यानू ने प्राथना की कि मातेश्वरी आप अन्तर्यामी हैं। बादशाह मेरी भक्ती की परीक्षा ले रहा है, मेरी लाज रखना, मेरे घोड़े को अपनी कपा व शक्ति से जीवित कर देना। कहते है की अपने भक्त की लाज रखते हुए माँ ने घोड़े को फिर से ज़िदा कर दिया। यह सब कुछ देखकर बादशाह अकबर हैरान हो गया। उसने अपनी सेना बुलाई और खुद मंदिर की तरफ चल पड़ा। वहाँ पहुँच कर फिर उसके मन में शंका हुई। उसने अपनी सेना से मंदिर पूरे मंदिर में पानी डलवाया, लेकिन माता की ज्वाला बझी नहीं। तब जाकर उसे माँ की महिमा का यकीन हुआ और उसने सवा मन (पचास किलो) सोने का छतर चढ़ाया। लेकिन माता ने वह छतर कबूल नहीं किया और वह छतर गिर कर किसी अन्य पदार्थ में परिवर्तित हो गया। आप आज भी वह बादशाह अकबर का



छतर ज्वाला देवी के मंदिर में देख सकते हैं।

पास ही गोरख डिब्बी का चमत्कारिक स्थान मंदिर का मुख्य द्वार काफी सुंदर एव भव्य है। मंदिर में प्रवेश के साथ हीं बाये हाथ पर अंकबर नहर है। इस नहर को अकबर ने बनवाया था। उसने मंदिर में प्रज्जवलित ज्योतियों को बझाने के लिए यह नहर बनवाया था। उसके आगे मंदिर का गर्भ द्वार है जिसके अंदर माता ज्योति के रूम में विराजमान है। थोडा ऊपर की ओर जाने पर गोरखनाथ का मंदिर है जिसे गोरख डिब्बी के नाम से जाना जाता है। कहते है की यहाँ गुरु गोरखनाथ जी पधारे थे और कई चमत्कार दिखाए थे। यहाँ पर आज भी एक पानी का कुण्ड है जो देख्नने मे खौलता हुआ लगता है पर वास्तव मे पानी ठंडा है। ज्वालाजी के पास ही में 4.5 कि.मी. की दूरी पर नगिनी माता का मंदिर है। इस मंदिर में जुलाई और अगस्त के माह में मेले का आयोजन किया जाता है। 5 कि.मी. कि दूरी पर रघुनाथ जी का मंदिर है जो राम, लक्ष्मण और सीता को समर्पि है। इस मंदिर का निर्माण पांडवो द्वारा कराया गया था। ज्वालामुखी मंदिर की चोटी पर सोने की परत चढी हुई है।

चमत्कारिक है ज्वाला : पृत्वी के गर्भ से इस तरह की

ज्वाला निकला वैसे कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि पृथ्वी की अंदरूनी हलचल के कारण पूरी दुनिया में कहीं ज्वाला कहीं गरम पानी निकलता रहता है। कहीं-कहीं तो बाकायदा पावर हा ऊस भी बनाए गए हैं. जिनसे बिजली उत्पादित की जाती है। लेकिन यहाँ पर ज्वाला प्राकर्तिक न होकर चमत्कारिक है क्योंकि अंग्रेजी काल में अंग्रेजों ने अपनी तरफ से पूरा जोर लगा दिया कि जमीन के अन्दर से निकलती 'ऊर्जा' का इस्तेमाल किया जाए। लेकिन

लाख कोशिश करने पर भी वे इस 'ऊर्जा'

को नहीं ढूंढ पाए। वही अकबर लाख कोशिशों के बाद भी इसे बुझा न पाए। यह दोनों बाते यह सिद्ध करती है की यहां ज्वाला चमत्कारी रूप से ही निकलती है ना कि प्राकृतिक रूप से, नहीं तो आज यहां मंदिर की जगह मशीनें लगी होतीं और बिजली का उत्पादन होता। यहां पहुंचे कैसे? यहां पहुंचना बेहद आसान है। यह जगह वायु मार्ग, सड़क मार्ग और रेल मार्ग से अच्छी तरह जुडी हुई है। वायु मार्ग ज्वालाजी मंदिर जाने के लिए नजदीकी हवाई अड्डा गगल में है जो कि ज्वालाजी से 46 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहा से मंदिर तक जाने के लिए कार व बस सुविधा उपलब्ध है। रेल मार्ग से जाने वाले यात्रि पठानकोट से चलने वाली स्पेशल ट्रेन की सहायता से मरांदा होते हुए पालमपुर आ सकते है। पालमपुर से मंदिर तक जाने के लिए बस व कार सुविधा उपलब्ध है। सड़क मार्ग पठानकोट, दिल्ली, शिमला आदि प्रमुख शहरो से ज्वालामुखी मंदिर तक जाने के लिए बस व कार सुविधा उपलब्ध है। यात्री अपने निजी वाहनो व हिमाचल प्रदेश टूरिज्म विभाग की बस के द्वारा भी वहा तक पहुंच सकते है। दिल्ली से ज्वालाजी के लिए दिल्ली परिवहन निगम की सीधी बस सुविधा भी उपलब्ध है।

देवीय शक्ति से साक्षात्कार कराते मंत्र

नित्रों का प्रयोग मानव ने अपने कल्याण के साथ-साथ दैनिक जीवन की संपूर्ण समस्याओं के समाधान हेत् यथासमय किया है और उसमें सफलता भी पाई है, परंतु आज के भौतिकवादी युग में यह विधा मात्र कुछ ही व्यक्तियों के प्रयोग की वस्तु बनकर रह गई है। मंत्रों में छुपी अलौकिक शक्ति का प्रयोग कर जीवन को सफल एवं सार्थक बनाया जा सकता है। सबसे पहले प्रश्न यह उठता है कि 'मंत्र' क्या है, इसे कैसे परिभाषित किया जा सकता है। इस संदर्भ में यह कहना उचित होगा कि मंत्र का वास्तविक अर्थ असीमित है। किसी देवी-देवता को प्रसन्न करने के लिए प्रयुक्त शब्द समूह मंत्र कहलाता है। जो शब्द जिस देवता या शक्ति को प्रकट करता है उसे उस देवता या शक्ति का मंत्र कहते हैं। मंत्र एक ऐसी गुप्त ऊर्जा है, जिसे हम जागृत कर इस अखिल ब्रह्मांड में पहले से ही उपस्थित इसी प्रकार की ऊर्जा से एकात्म कर उस ऊर्जा के लिए देवता (शक्ति) से सीधा साक्षात्कार कर सकते हैं। ऊर्जा अविनाशिता के नियमानुसार ऊर्जा कभी भी नष्ट नहीं होती है, वरन्एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित होती रहती है। अतः जब

हम मंत्रों का उच्चारण करते हैं तो

उससे उत्पन्न ध्वनि एक ऊर्जा के रूप

में ब्रह्मांड में प्रेषित होकर जब उसी

प्रकार की ऊर्जा से संयोग करती है तब

हमें उस ऊर्जा में छुपी शक्ति का

आभास होने लगता है। ज्योतिषीय संदर्भ में यह निर्विवाद सत्य है कि इस धरा पर रहने वाले सभी प्राणियों पर ग्रहों का अवश्य प्रभाव पड़ता है। चंद्रमा मन का कारक ग्रह है और यह पृथ्वी के सबसे नजदीक होने के कारण खगोल में अपनी स्थिति के अनसार मानव मन को अत्यधिक प्रभावित करता है। अतः इसके अनुसार जो मन का त्राण (दुःख) हरे उसे मंत्र कहते हैं। मंत्रों में प्रयुक्त स्वर, व्यंजन, नाद व बिंदु देवताओं या शक्ति के विभिन्न रूप एवं गुणों को प्रदर्शित करते हैं। मंत्राक्षरों, नाद, बिंदुओं में दैवीय शक्ति छुपी रहती है। मंत्र उच्चारण से ध्वनि उत्पन्न होती है, उत्पन्न ध्वनि का मंत्र के साथ विशेष प्रभाव होता है। जिस प्रकार किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु के ज्ञानर्थ कुछ संकेत प्रयुक्त किए जाते हैं, ठीक उसी प्रकार मंत्रों से संबंधित देवी-देवताओं को संकेत द्वारा संबंधित किया जाता है, इसे बीज कहते हैं। विभिन्न बीज मंत्र इस प्रकार हैं: ॐ परमपिता परमेश्वर की

शक्ति का प्रतीक है।

हीं माया बीज, श्रीं लक्ष्मी बीज, क्रीं काली बीज, ऐं सरस्वती बीज. क्लीं कृष्ण बीज।

मंत्रों में देवी-देवताओं के नाम भी संकेत मात्र से दर्शाए जाते हैं, जैसे राम के लिए 'रां', हनुमानजी के लिए 'हं',

गणेशजी के लिए 'गं', दुर्गाजी के लिए 'दं' का प्रयोग किया जाता है। इन बीजाक्षरों में जो अनुस्वार () या अनुनासिक (जं) संकेत लगाए जाते हैं, उन्हें 'नाद' कहते हैं। नाद द्वारा देवी-देवताओं की अप्रकट शक्ति को प्रकट किया जाता है।

लिंगों के अनुसार मंत्रों के तीन भेद

पुर्लिंग जिन मंत्रों के अंत में हूं या फट लगा होता है।

स्त्रीलिंग जिन मंत्रों के अंत में 'स्वाहा' का प्रयोग होता है। नपुंसक लिंग जिन मंत्रों के अंत में 'नमः' प्रयुक्त होता है।

अतः आवश्यकतानुसार मंत्रों को

चुनकर उनमें स्थित अक्षुण्ण ऊर्जा की तीव्रविस्फोटक एवं प्रभावकारी शक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। मंत्र, साधक व ईश्वर को मिलाने में मध्यस्थ का कार्य करता है। मंत्र की साधना करने से पूर्व मंत्र पर पूर्ण श्रद्धा, भाव, विश्वास होना आवश्यक है तथा मंत्र का सही उच्चारण अति आवश्यक है। मंत्र लय, नादयोग के अंतर्गत आता है। मंत्रों के प्रयोग से आर्थिक, सामाजिक, दैहिक, दैनिक, भौतिक तापों से उत्पन्न व्याधियों से छुटकारा पाया जा सकता है। रोग निवारण में मंत्र का प्रयोग रामबाण औषधि का कार्य करता है। मानव शरीर में 108 जैविकीय केंद्र (साइकिक सेंटर) होते हैं जिसके

कारण मस्तिष्क से 108 तरंग दैर्ध्य

(वेवलेंथ) उत्सर्जित करता है। शायद इसीलिए हमारे ऋष-मनियों ने मंत्रों की साधना के लिए 108 मनकों की माला तथा मंत्रों के जाप की आकृति निश्चित की है। मंत्रों के बीज मंत्र उच्चारण की 125 विधियाँ हैं। मंत्रोच्चारण से या जाप करने से शरीर के 6 प्रमुख जैविकीय ऊर्जा केंद्रों से 6250 की संख्या में विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा तरंगें उत्सर्जित होती हैं, जो इस प्रकार हैं :

मूलाधार 4×125=500 स्वधिष्ठान 6×125=750 मनिपुर 10×125=1250 हृदयचक्र 13×125=1500 विध्रहिचक्र 16×125=2000 आज्ञाचक्र 2×125=250

कुल योग 6250 (विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा तरंगों की संख्या) भारतीय कुंडलिनी विज्ञान के अनुसार मानव के स्थूल शरीर के साथ-साथ 6 अन्य सूक्ष्म शरीर भी होते हैं।विशेष पद्धति से सुक्ष्म शरीर के फोटोग्राफ लेने से वर्तमान तथा भविष्य में होने वाली बीमारियों या रोग के बारे में पता लगाया जा सकता है। सुक्ष्म शरीर के ज्ञान के बारे में जानकारी न होने पर मंत्र शास्त्र को जानना अत्यंत कठिन होगा। मानव, जीव-जंतु, वनस्पतियों पर प्रयोगों द्वारा ध्वनि परिवर्तन (मंत्रों) से सूक्ष्म ऊर्जा तरंगों के उत्पन्न होने को प्रमाणित कर लिया गया है। मानव शरीर से 64 तरह की सूक्ष्म ऊर्जा तरंगें

उत्सर्जित होती हैं जिन्हें 'धी' ऊर्जा कहते हैं। जब धी का क्षरण होता है तो शरीर में व्याधि एकत्र हो जाती है। मंत्रों का प्रभाव वनस्पतियों पर भी पड़ता है। जैसा कि बताया गया है कि चारों वेदों में कुल मिलाकर 20 हजार 389 मंत्र हैं, प्रत्येक वेद का अधिष्ठाता देवता है। ऋवेद का अधिष्ठाता ग्रह गुरु है। यजुर्वेद का देवता ग्रह शुक्र, सामवेद का मंगल तथा अथर्ववेद का अधिपति ग्रह बुध है। मंत्रों का प्रयोग ज्योतिषीय संदर्भ में अशुभ ग्रहों द्वारा उत्पन्न अशुभ फलों के निवारणार्थ किया जाता है। ज्योतिष वेदों का अंग माना गया है। इसे वेदों का नेत्र कहा गया है। भूत ग्रहों से उत्पन्न अशुभ फलों के शमनार्थ वेदमंत्रों, स्तोत्रों का प्रयोग अत्यन्त प्रभावशाली माना गया है। उदाहरणार्थ आदित्य हृदयस्तोत्र सुर्य के लिए, दुर्गास्तोत्र चंद्रमा के लिए, रामायण पाठ गुरु के लिए, ग्राम देवता स्तोत्र राहु के लिए, विष्णु सहस्रनाम, गायत्री मंत्रजाप, महामृत्युंजय जाप, क्रमशः बुध, शनि एवं केतु के लिए, लक्ष्मीस्तोत्र शुक्र के लिए और मंगलस्रोत मंगल के लिए। मंत्रों का चयन प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथों से किया गया है। वैज्ञानिक रूप से यह प्रमाणित हो चुका है कि ध्वनि उत्पन्न करने में नाड़ी संस्थान की 72 नसें आवश्यक रूप से क्रियाशील रहती हैं। अतः मंत्रों के उच्चारण से सभी नाड़ी संस्थान क्रियाशील रहते हैं।

साइटिका पेन

बसे आम समस्या जो लोगो में डॉक्टर्स को देखने को मिलती है वो है सियाटिका। साइटिका (sciatica) नाडी,

जिसका उपरी सिरा लगभग 1 इंच मोटा होता है, प्रत्येक नितंब के नीचे से शुरू होकर टाँग के पिछले भाग से गुजरती हुई पाँव की एडी पेर ख़त्म होती है। इस नाडी का नाम इंग्लीश में साइटिका नर्व है। इसी नाडी में जब सूजन ओर दर्द के कारण पीड़ा होती है तो इसे वात शुल अथवा साइटिका का दर्द कहते है। इस रोग का आरंभ अचानक ओर तेज दर्द के साथ होता है। 30 से 40 साल की उम्र के लोगो में ये समस्या आम होती है ।साइटिका का दर्द एक समय मे सिर्फ़ एक ही टाँग मे होता है। सर्दियों के दिनो में ये दर्द और भी बढ़ जाता है । रोगी को चलने मे कठिनाई होती है। रोगी जब सोता या बैठता है तो टाँग की पूरी नस खींच जाती है ओर बहुत तकलीफ़

होती है।

इसके कई कारण हो सकते है जैसे सर्दी लगने(कोल्ड स्ट्रोक), अधिक चलने से, मलावरोध (शोच न होना),स्त्रियाँ में गर्भ की अवस्था,या गर्भाशय का अर्बुद (Tumour),तथा मेरुदंड (spine) की विकृतियाँ, आदि से,

किसी तंत्रिका या तंत्रिका मूलों



(नर्व रूट) पर पड़ने वाले दबाव से उत्पन्न होता है। कभी-कभी यह नसों की सूजन (तंत्रिकाशोथ Neuritis) से भी होता है।

सियाटिका का इलाज सामग्री 4 लहसुन की कलियाँ 200

ml दूध तैयार करने की विधि लहसुन को काट कर दूध में डाल दें। दूध को कुछ मिनट तक उबालें। उबालने के बाद इसे मीठा करने के लिए थोडा शहद मिला लें। इस दुध का रोजाना सेवन करें जब तक

साइटिका का दर्द गृध्रसी दर्दः साइटिका का दर्द, यह दर्द कूल्हे से एड़ी तक खींचता हुआ लगता है।

दर्द खत्म न हो जाये.

घी, मैदा लकड़ी, आमा हल्दी, मिश्री सब चीजें 10 ग्राम। ये पंसारी के मिलती है। इनको पीसकर दध और पानी (दोनों चीजें ढाई सौ

छानकर गरम-गरम पीए और कुछ ओढ़ कर लेट जाए। पसीना आने पर अंदर ही अंदर पोछतें रहे, हवा बिल्कुल ना लगने दे। यह उपाय दिन में तीन बार करें और खाए कुछ भी नहीं। 4 दिन में साइटिका में आराम आ जाएगा। साइटिका का दर्द होने पर एरण्ड के बीज की 5 मिंगी, दूध में पीस कर पीने से लाभ होता है। यह उपाय कमर दर्द में भी उपयोगी है।15 ग्राम और एक चम्मच नमक ले और दोनों को 1 किलो पानी में तेज उबाले। इसमें एक कपड़ा भिगोकर दर्द वाले स्थान पर सेक करें। इस प्रकार रोज दो बार करें। लगभग 15 दिन में साइटिका का दर्द ठीक हो जाएगा। साइटिका के दर्द में एक चम्मच अदरक के रस में आधा चम्मच घी मिलाकर पीना चाहिए। यह उपाय वात और कमर व जाँघ के दर्द में भी

ग्राम) में उबालें। पानी जल जाने पर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति द्रौपती मुर्मू ने उत्कल दिवस अवसर पर बधाई दी है

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : आज पूरे राज्य में उत्कल दिवस मनाया जा रहा है। यह प्रत्येक ओडिशावासी के लिए गौरव और सम्मान की बात है। इस दिन 1936 में स्वतंत्र उत्कल प्रदेश राज्य का गठन हुआ था। यह अनेक भाइयों और बहनों के योगदान के कारण संभव हो सका। इसके उपलक्ष्य में आज राज्य के विभिन्न हिस्सों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति डॉ. मुर्म ने इस अवसर पर बधाई दी है।

प्रधानमंत्री ने ओडिया में टवीट किया. उत्कल दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं! यह दिन ओडिशा की समृद्ध संस्कृति के लिए एक सच्ची श्रद्धांजलि है। भारत को ओडिशा के

इतिहास, साहित्य और संगीत पर गर्व है। ओडिशा के लोग मेहनती हैं और विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। पिछले एक वर्ष से केन्द्र और ओडिशा सरकार राज्य की प्रगति के लिए बड़े पैमाने पर काम कर रही है। इसी प्रकार, राष्ट्रपति ने कहा, ओडिशा दिवस के अवसर पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं! यह दिन ओडिशा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विभिन्न क्षेत्रों में ओडिशा के लोगों के उल्लेखनीय योगदान को याद करने का एक सुंदर अवसर है। ओडिशा के लोग, जो अच्छे परिधानों और आतिथ्य सत्कार से परिपूर्ण हैं, ने अपनी गौरवशाली परंपराओं को जीवित रखते हुए, ओडिशा की प्रगति के लिए कड़ी मेहनत की है। ओडिशा ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में

www.newsparivahan.com



महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आधुनिक भारत जगन्नाथ से ओडिशा की शांति और समृद्धि के के कई संस्थापकों को जन्म दिया। मैं भगवान लिए प्रार्थना करता हं।

विशेष कविताः-अथाह मेहनत परिवहन की खबरों

शुभेच्छुओं इसे हो गए है तीन साल, पाँठकों का रखता है ये खूब खयाल। 'बाटलाजी' देते हैं इसे भरपूर प्यार, वाहक हैं ये पाता है सबका दुलार । इसे चिंता हैं सबके जानों–माल की, ये रखता हैं खबर दुनिया जहान की।

शुभेच्छुओं इसे हो गए है तीन साल, पाठकों का रखता है ये खुब खयाल। परिवहन के नियम हो या हो कायदें, रूबरू है सभी के साथ होते फायदें। सोचा कभी अखबार का ये नाम होगा, परिवहन विशेष का रोज सलाम होगा।

शुभेच्छूओं इसे हो गए है तीन साल,

पाठकों का रखता है ये खूब खयाल। क्या? नहीं हैं इसमें सोचता हूँ कभी, बहत-सा पठनीय होता न होती कमी। अथाह मेहनत परिवहन की खबरों में ये तो सागर है समुन्दर सी लहरों में। (सन्दर्भ: परिवहन विशेष के तीन वर्ष पूर्ण होने पर विशेष कविता)

> संजय एम तराणेकर (कवि, लेखक व समीक्षक)



अव्वल आख़रि जिंदगी का मक .सद ख़ाक़ है सुन लो,

हां सभी तो अपने ही थे उनका ग़िला क्या करते ज़ख्म भी गहरे थे सभी उनको अयाँ क्या करते, तेरी मसरुफ़ियत तो हमको पता है सारी, तेरे आने की खुशी वादों पे यक़ीं क्या करते, जब सितारे भी हाथों से निकले रफ़ता रफ़ता, फ़िर चांद को पाने की आरज़ू बता क्या करते, वह मुसाफ़रि था हमसे वफ़ा क्यों कर करता हम भी थे मजबूर दिल से अपने दग़ा क्या करते, खुली हवा में उड़ने का वह आदी था नहीं समझे, हाथ फ़ैलाकर उसको बुलाते तो भला क्या करते, अव्वल आख़रि जिंदगी का मक़सद ख़ाक़ है सुन लो, महल और अटारी हम भी बना लेते तो बता क्या करते , ख्वाबों के जज़ीरे का नक्शा आंखों में फिरा करता है,

डॉ . मुश्ताक अहमद

बेसिम्त चल रही थीं हवाएं

रमुश्ताक़₹बता क्या करते?

ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष विष्ण् सिकरवार ने संगठन के सभी पत्रकारों से की अपील

– नैतिक मर्यादाओं में रहते हुए और अपनी गरिमा का ध्यान रखते हुए कार्य करें, ताकि पत्रकारिता की छवि बनी रहे : जिलाध्यक्ष विष्णु सिकरवार

– संगढन पत्रकारों के सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा के लिए हमेशा दृढ संकल्पित रहेगा और किसी भी हालत में उनके मान-सम्मान पर आंच नहीं आने दी जाएगी₹

आगरा, संजय साग़र सिंह। ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष विष्ण सिकरवार ने संगठन और पत्रकारों के हित को प्राथमिकता देते हुए सभी सदस्यों को अनुशासन में रहने की सलाह दी और सभी को एकजुट होकर राष्ट्रहित में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया।

ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष विष्णु सिकरवार ने संगठन के सभी पत्रकारों से अपील की है कि वे नैतिक मर्यादाओं में रहते हुए और अपनी गरिमा का ध्यान रखते हुए कार्य करें, ताकि पत्रकारिता की छवि बनी रहे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि संगठन पत्रकारों के सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा के लिए हमेशा दृढ़ संकल्पित रहेगा और किसी भी हालत में उनके मान-सम्मान पर आंच नहीं आने दी

संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारियों से विचार-विमर्श के बाद, उन्होंने संगठन के

प्रति निष्ठा और इसे आगे बढ़ाने के लिए वरिष्ठ पदाधिकारियों के कार्यों की सराहना की। उन्होंने संगठन और पत्रकारों के हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए सभी सदस्यों से अनुशासन में रहने और एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान किया।

श्री सिकरवार ने पत्रकारिता की निष्पक्षता को बनाए रखने और फूहड़ पत्रकारिता से बचने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि संगठन के प्रत्येक पदाधिकारी को पत्रकारों की समस्याओं को सुनकर उनका समाधान ढंढने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि यही संगठन का धर्म है।

इसके साथ ही, उन्होंने संगठन को भारत का सबसे मजबत संगठन बनाने का संकल्प लिया, जो केवल पत्रकारों के हितों की रक्षा करेगा, उनके स्वाभिमान की रक्षा करेगा और उनके सामने आने वाली समस्याओं का समाधान करेगा। उनका यह भी कहना था कि संगठन पत्रकारों के साथ हमेशा कंधे से कंधा मिलाकर चलेगा और पत्रकारों के हितों के लिए देशभर में कार्य करेगा।

पत्रकारिता के क्षेत्र में आने वाली चनौतियों पर उन्होंने चर्चा की और आश्वासन दिया कि संगठन पत्रकारों के साथ सदैव खडा रहेगा। उन्होंने पत्रकारिता को देश का चौथा स्तंभ बताते हुए संगठन की भूमिका की महत्वपूर्णता पर बल दिया, और यह सुनिश्चित किया कि संगठन पत्रकारों की सुरक्षा और उनके अधिकारों के लिए हमेशा तत्पर रहेगा।

बलिवेश्वदेव (हिन्दुओं का मुख्य नित्य कर्म जो हम भूल गए हैं)

तिदिन पंच महायज्ञ करने के लिये शास्त्र की आज्ञा है। तिदिन पंच महायज्ञ करन के ालय शास्त्र का आज्ञा ह । प्रत्येक गृहस्थ के यहाँ चूल्हा, चक्की, झाडू, ओखली और जल का घड़ा-ये पाँच हिंसा के स्थान हैं। इनका उपयोग करने से अनजान में इच्छा न रहते हुए भी कुछ जीवों की हिंसा हो जाया करती है; इस हिंसा-दोषको दूर करने के लिये पंच-महायज्ञों का विधान है।

इन यज्ञोंके नाम हैं-१- ब्रह्मयज्ञ, २-देवयज्ञ, *-भूतयज्ञ, ४- पितृयज्ञ और ५-मनुष्ययज्ञ। ब्रह्मयज्ञको ऋषियज्ञ और स्वाध्याययज्ञ भी कहते हैं। मुख्यतः प्रतिदिन शास्त्र स्वाध्याय करने से ब्रह्मयज्ञ सम्पन्न होता है। ब्रह्मयज्ञ को छोड़कर शेष चार देवयज्ञ आदि संक्षेप से वैश्वदेव- कर्म में ही आ जाते हैं; अतः प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक वैश्वदेव-कर्म अवश्य करना

बलिवैश्वदेव प्रतिदिन एक ही बार होता है। यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्विकल्बिषैः । भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥ (गीता 🔭।१ 🤭)

'यज्ञ से शेष बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से छूटते हैं और जो पापी लोग अपने (शरीर-पोषणके) लिये ही अन्न को पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं।' गहस्थ के घर में जो नित्य पाँच तरह के पाप होते हैं, उनके प्रायश्चित्त के लिये तत्त्वज्ञानी ऋषियों ने पंच महायज्ञ की व्यवस्था की थी। खेद का विषय है कि वह नित्य-कर्म इस समय प्रायः लुप्त-सा हो गया है। जिस गृहस्थ के यहाँ वे पाँचों महायज्ञ भली भाँति होते हैं वह सर्वथा धन्यवाद का पात्र है। बलिवैश्वदेव इन एक महायज्ञ है। बलिवैश्वदेव करने में प्रायः तीन मिनट का समय



इससे अन्न की शुद्धि होती है, पापों का प्रायश्चित्त होता है, निष्काम भाव से करने पर अन्तःकरण की शुद्धि होती है। बलिवैश्वदेव किये बिना भोजन करना शास्त्रों से निन्दित है और बलिवैश्वदेव कर चुकने पर जो अन्न बचता है वह अमृत बतलाया गया है। काम छोटा-सा है परन्तु भावना बड़ी ऊँची

बलिवैश्वेदेव करने की विधि (इसमे बिना नमक मिला हुआ खाना ही प्रयोग मे लाया जाता है) । इसमें चार दिशाओं मे तथा अग्नि मे भोजन अर्पित किया जाता है, जिसका क्रम नीचे वर्णित है। अग्नि को पांच ग्रास, इसके बाद 20 ग्रास है *जिसमे 17 ग्रास सभी प्राणियों के निमित्त एक ग्रास पितरों के निमित्त एक ग्रास यक्षों के निमित्त और एक ग्रास सभी मनष्यों के कल्याण की कामना से दिए जाते हैं इस तरह से 20 ग्रास दिए जाते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि ये ग्रास किस मंत्र से दे? जिनके यज्ञोपवीत और शिखा है उन लोगों के लिए वेदोक्त मंत्र वर्णित है। परंतु जिन लोगों के शिखा और सूत्र नहीं है यज्ञोपवीत नहीं है वह लोग

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे हरे कृष्णा हरे कृष्ण कष्णकष्णकृष्णहरेहरे

इस मंत्र को पढ़कर प्रत्येक ग्रास अर्पित कर सकते। बलिवैश्वदेव में उड़द, चना, मसूर, कोदो, कुल्थी, लवण, मटर, तैल पक्व, जुन्हरी, पर्युषित अन्न भुक्तशेष अन्न आदि वर्जित हैं। इसको पढ़कर जो भाई बलिवैश्वदेव आरम्भ कर देंगे, मैं उनका कृतज्ञ होऊँगा और मुझे आशा है कि उनके इस कार्य से सनातन धर्म की वृद्धि और परमेश्वर की प्रसन्नता होगी तथा उन्हें अपने आत्मा के कल्याण में सहायता मिलेगी।

खुशबू जैसे लोग कहां मिलते हैं।

मुद्दतें गुज़रीं एक लम्हा नहीं गुज़रा । चला गया वो रेत पर घरोंदेबनांकर ।

वो बिछड़ा तो मैं किसी दर का न रहा । चला गया मुझे ख़्वाब झुठे दिखा कर।

पतझड़ की तरह बना देते हैं मौसम । चले जाते हैं यह दरख्तों को हिला कर।

दर्द की शिद्दत में छिपी होती है मुहब्बत । दिल धड़कता रहता है उनकी अँदा पर।

तुम कहीं भी रहो निगाहों में ही रहोगे। हम कैसे जियें बोलो तुम को भुला कर ।

ख़ुशबु जैसे लोग कहां मिलते हैं मुश्ताक़ । एक ख़त रखा है मैंने किताबों में छुपा कर ।

डॉ मुश्ताक अहमद शाह । सहज हरदा। मध्यप्रदेश ।



जगरातों की अथाह विजय ...!

इंद्रियों का संयम, आध्यात्मिक शक्ति संचय, 'नवरात्रि व्रत' जगरातों की हैं अथाह विजय। ये वातावरण छाया हुआ विचारों का प्रदूषण, अपने अंर्तमन की ऊर्जा जगाना ही विशेषण। अब देवी माँ उपासना का मुख्य यहीं प्रयोजन, मानसिक,शारीरिक,आध्यात्म शक्ति योजन।

इंद्रियों का संयम, आध्यात्मिक शक्ति संचय, 'नवरात्रि व्रत' जगरातों की हैं अथाह विजय। चौत्र नवरात्रि रामजन्म व रामराज्य स्थापना, करते शक्ति की पुजा, आराधना–अनुमोदना। इस नवरात्र का महत्व होता रहा हैं सर्वाधिक, सर्दी व गर्मी ऋतुओं का मिलन काल अधिक।

इंद्रियों का संयम, आध्यात्मिक शक्ति संचय, 'नवरात्रि व्रत' जगरातों की हैं अथाह विजय। नवरात्रि में भुवाल माताजी के है नौ स्वरूप, शक्ति स्वरूपा की पूजा की जाती है नवरूप। जब प्रकृति में एक अलग होती विशिष्ट ऊर्जा, आत्मसात करते व्यक्ति दे रहें माता को दर्जा।

संजय एम तराणेकर

घिबली स्टाइल्स और चैट जीटीपी : हमारी सोच पर असर मानसिक गुलामी की ओर

3 जिंकल पूरी दुनिया Chet GTP और घिबली स्टाइल जैसी नई तकनीकों के पीछे पागल हो रही है। कला और एआई का यह मिश्रण भले ही देखने में आकर्षक लगे, लेकिन हमें यह समझने की जरूरत है कि इसके प्रभाव हमारे मस्तिष्क की क्षमता को धीरे-धीरे कम कर रहे हैं।

Ghibli Styles एनीमेशन और आर्ट का एक विशेष रूप है, जिसमें भावनाओं और कल्पना की उड़ान होती है। लेकिन अब, जब Chet GTP जैसी तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है, तो यह सब कृत्रिम रूप से तैयार किया जा रहा है। लोग वास्तविक सोच और रचनात्मकता से दूर होते जा रहे हैं। हर चीज़ कंप्यूटर-जिनत होती जा रही है, और हम बिना सोचे-समझे इसे स्वीकार कर रहे हैं।

हमारी ज़िंदगी पहले ही किसी कार्टून से कम नहीं थी, और अब यह पूरी तरह से डिजिटल कल्पना में बदलती जा रही है। सोचने, विश्लेषण करने और गहराई से समझने की क्षमता खत्म हो रही है। विदेशी तकनीक हमारे ऊपर हावी हो रही हैं और हमें उसका गलाम बना रही हैं। हम हर चीज़ को एक आकर्षक प्रस्तुति के रूप में देख रहे हैं, पर इसके पीछे के



नकसान को नहीं समझ पा रहे हैं।

हमको पहले भी गुलाम बनाया गया था नए योग के समान बेंच के हमको सूट बूट के से अंग्रेजों ने हम को गुलाम बनाया था हर युग में हम भारतवासियों को गुलाम बनने की सोच रही है यह विदेशियों की हम

आज के यग में मानसिक गुलाम बनते जा हैं क्या यह सही दिशा है ? क्या हम अपने दिमाग और समाज की मुलभूत संरचना को इस तरह बदलने के लिए तैयार हैं ? इस पर गंभीर मंथन की जरूरत है। धीरज कश्यप, नोएडा

सत्य हुआ अब मौन सा, झुठ मचाए शोर। धन के आगे बिक रहे, नाते सब कमजोर॥

नाते सब कमजोर॥

स्वार्थ भरी इस भीड में. खोए अपने लोग।

चाहत की इस दौड़ में, छूट गए सब योग॥

कलियाँ रोती बाग में, पात हुए बेचैन। सुख की छाया ढूँढते, पंछी अब दिन रैन॥

हरे पेड़ तो कट चले, सूख गए सब खेत। जल बिन पंछी रो रहे, दिखे रेत ही रेत॥

जल को तरसे धान भी, सूख गए खलिहान । बादल बिन बरसे गए, रोया देख किसान॥

मन में सच्ची प्रीत हो, वाणी रहे मिठास। बातें चाहे कम कहो, बन जाए इतिहास॥

झूट कहे जो जीतता, सच्चा रहे उदास। कलयुग के इस फेर में, पंजा हुआ पचास॥

-डॉ. सत्यवान सौरभ

शमशाबाद स्थित सीरवी समाज मंदिर (बडेर) के तत्वावधान में आयोजित चैत्र नवरात्रि महोत्सव के तहत रविवार को हवन का आयोजन किया गया। शुभ मुहूर्त में पूजा-अर्चना कर श्रद्धालुओं ने मंत्रोच्चार के साथ हवन में आहुति दी। अवसर पर उपस्थित जगदीश काग, रतनलाल बर्फों, जोराराम बर्फा,उदाराम बर्फा, सुशीला देवी, सन्तोष देवी,मोहनी देवी, देवी बर्फा,व अन्य ।

किट बिश्वबिद्यालय के एक और छात्र की संदिग्ध मौत

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: किट के एक और छात्र की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। ममेश्वर थाना क्षेत्र में एक निर्माणाधीन इमारत के नीचे से एक शव बरामद किया गया है। जानकारी के अनुसार मृतक छात्र केआईटी यूनिवर्सिटी में बीटेक तृतीय वर्ष में पढ़ रहा था।मृत छात्र का नाम अर्नब मुखर्जी है। उनका घर बांकुरा, पश्चिम बंगाल है।अर्नब केआईटी यूनिवर्सिटी के छात्रावास में पढ़ाई कर रहा था। यह स्पष्ट नहीं है कि मंचेश्वर छात्रावास से कैसे बाहर निकला।शव को पोस्टमार्टम के लिए कैपिटल अस्पताल में रखा गया है। ममेश्वर पुलिस ने अप्राकृतिक मौत का मामला दर्ज कर लिया है और जांच जारी है। छात्र की मौत के संबंध में केआईटी की ओर से तत्काल कोई टिप्पणी नहीं

हाल ही में विश्वविद्यालय में एक नेपाली छात्र की मृत्यु हो गई। इसके लिए ओडिशा की पूरी दुनिया में निंदा हुई। घटना के वीडियो एक के



मजबूर कर दिया। यहां तक कि यह भी देखा गया कि बच्चों को जबरन स्कूल बसों में बिठाया गया और कटक रेलवे स्टेशन पर उतार दिया गया। इस बीच, केआईआईटी विश्वविद्यालय का लाइसेंस रद्द करने के लिए उद्योग मंत्री को एक मांग पत्र सौंपा गया।

फरवरी के अंतिम सप्ताह में विश्वविद्यालय प्राधिकारियों द्वारा किए गए इस व्यवहार की छात्रों एवं विभिन्न वर्गों द्वारा निंदा की गई। यहां तक कि नेपाल के प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली ने घटना पर चिंता व्यक्त की और कहा कि मामले को सलझाने के लिए कूटनीतिक वार्ता चल रही है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-१८,१०२० सेक्टर ५९, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं ३, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-४, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- ११००६३ से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No:- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023